



कलम का
मज़दूर
प्रेमचन्द



राजकमल प्रकाशन



कलम का
मज़दूर
प्रेमचन्द

मदनगोपाल

प्रकाशक
राजकमल प्रकाशन (प्रा०) लि०
दिल्ली ६

© मदन गोपाल

प्रथम संस्करण १९६५

मुद्रक
नवीन प्रस दिल्ली ६

मुल्लो को

प्रस्तावना

इस पुस्तक को प्रकाशित करते हुए मुझे बड़ा हृष हो रहा है। यह पुस्तक लगभग २० वर्षों के परिश्रम का परिणाम है। इस पर काम तभी आरम्भ किया था जब मैंने १९४२-४३ में प्रमचञ्चक जीवन तथा कृतियों पर एक छोटी सी परिचयात्मक पुस्तक अग्रणी में लिखी थी। (अग्रणी में इस विषय पर यह पहली पुस्तक थी।) महापुत्र के लिना में कागज की किल्लत थी और मैं अग्रणी पुस्तक के लिए जितनी सामग्री इकट्ठी की थी उसका पूरी तरह प्रयोग न कर पाया था।

उसी समय मुझे यह ध्यान आया था कि प्रमचञ्चक जी का युग बीता जा रहा है। उनके जितने जीवित मित्र या सहयोगी थे उनके पास अभी तक उनके पत्र मिल सकते हैं तथा उनसे प्रमचञ्चक जी के सम्बन्ध में कुछ पान भी प्राप्त हो सकता है। उसी समय तथा अगले कुछ वर्षों में मैंने समझी बानपुर लखनऊ बनारस इलाहाबाद बस्ती हैराबाद ताहौर बम्बई आदि की यात्रा की। बहुत से पत्र या उनकी प्रतिनिधियों के अतिरिक्त और भी बहुत-सी सामग्री प्राप्त की। इस सामग्री तथा हंस और 'जमाना' के प्रमचञ्चक अका और गिवरानीदेवी जी की प्रमचन्द परम के आधार पर मैंने एक पुस्तक तैयार की। एक और पुस्तक बबन प्रमचन्द जी के पत्रों को सफलन के रूप में तैयार की। दूसरी पुस्तक को अक्षय दत्त का अक्षयदास ही न मिला। हंस पुस्तक में मैंने प्रमचञ्चक जी की सभी कृतियों—उपन्यास कहानियाँ नाटकाँ निबंधाँ—का सारांश दान की श्रेणी में भी की थी। परिणामतः पोथी बहुत भंगी बन गई। मात्र स दान एक गाँव पढ़ने मुझे यह ध्यान आया कि प्रमचञ्चक की कृतियों के सारांश की आवश्यकता किसी विदेशी भाषा में तो हो सकती है पर हिन्दी या उर्दू के पाठकों को उनकी कृतियाँ में परिचित कराने का प्रयत्न तो ऐसा ही होगा जस 'उलटे दान' बरेली

का'। यह सोचकर मैंने किताब को नया रूप दिया। प्रमचन्दजी की कृतियों के ग्रंथ निकालकर अब यह पुस्तक तीन सौ अट्ठाइस पन्नेकी बनी है। जो मरी रुचि के अनुसार ही है।

इस पुस्तक की तयारी में मैंने उपलब्ध सामग्री का भी ध्यायनतानुसार उपयोग किया है। बिनाम हस तथा जमाना व प्रेमचन्द एक गिवरानीदेवी की पुस्तक प्रमचन्द घर में तथा कुछ ऐसे निबन्धा के सग्रह भी हैं जिनमें प्रमचन्द की कृतियाँ पर सामयिक प्रालोचनाएँ छपी हैं। ये लेख कितनी ही धार छप चुके हैं। पिछले कुछ वर्षों में तो जमाना व प्रमचन्द एक में छपे लेखों का हिन्दी रूपांतर भी छपा है। अभी तक प्रमचन्दजी पर जितनी पुस्तकें लिखी गई हैं उन सबमें इन्हीं पुस्तकों तथा प्रकाशनों का प्रयोग किया गया है। उद्देश्य लेखकों ने जमाना के विशेषज्ञ को अपनी कृतियों का आधार बनाया और हिन्दी लेखकों ने हस के विशेषज्ञ को। इन सब प्रकाशनों में एक विशेष त्रुटि यह रही है कि तिथियाँ और घटनाक्रम में स्पष्ट परस्पर विरोध दिखाई देता है। प्रालोचकों ने भी श्रावण मीचकर इन्हीं पुस्तकों का अनुकरण किया। मैं भी अपनी १९४४ में छपी पुस्तिका में तिथियाँ डा. इन्द्रनाथ मदान व 'शीतिल ट्रेण्डस इन माडर्न हिन्दी लिटरेचर' से ली थीं। अन्य लेखकों ने भी वही प्रकार तिथियाँ जहाँ जसे मिली वैसे ही स्वीकार कर लीं।

और तो और स्वयं प्रमचन्दजी ने एक ही घटना के बारे में भिन्न पत्रों तथा लेखों में विभिन्न तिथियाँ दी हैं। इन तिथियों के सतत होने का पता तब चला जब उनके पत्रों के आधार पर जाँच-पड़ताल की गई। एक कठिनाई यह भी सामने आई कि बहुत से पत्रों पर तिथि ही नहीं दी गई। कबल स्थान का ही जिक्र है। इसलिए मैंने उनकी सविम-बुक तथा सामयिक मासिक पत्रों की सलाह की जहाँ उनकी व कहानियाँ सबसे पूरव छपी थीं और जिनका जिक्र पत्रों में है। यहाँ यह बतलाना आवश्यक है कि उन सामयिक मासिक पत्रों में से कुछ की पूरी फाइलें भी दुर्लभ हैं। एक पत्र जो इस सप्ताह के आरम्भ में निकलते थे।

इस तरह प्रत्येक तथ्य तथा तिथिक्रम की जाँच-पड़ताल का काम बहुत सरल सिद्ध नहीं हुआ। कई बार सिर्फ एक कहानी की तिथि या पत्र की तारीख निश्चित करने में कई वर्षों की फाइलें उलटनी पड़ीं। परन्तु खोज और जाँच-पड़ताल का जीवनी लिखने के साथ ही निस्सन्देह विशेष महत्व है। यह बान प्रह पुस्तक निकलते हुए मुझ खूब प्रभुभव हुई है। इस पुस्तक में मैंने यथासम्भव घटनाओं की वही तिथियाँ स्वीकार की हैं जिनकी पुष्टि इस प्रकार की जा सकती है।

मैंने प्रमचन्द द्वारा लिखे गए पत्रों के अद्यापि का खूब प्रयोग किया है। जिन पत्रों के अद्यापि उद्धृत किये गए हैं उनकी मूलप्रति या प्रतिलिपि उपलब्ध करने के लिए मैंने लगभग गत २० वर्षों में भारत के विभिन्न भागों में सक्कों व्यक्तियों से पत्र व्यवहार किया है या निजी भेंट की है। मेरा पत्र-सकलन-काय साहित्यिक क्षेत्र में चर्चा का विषय भी रहा है। इस सम्बन्ध में १९५२ के राजकुल (अक्टूबर) में मेरा एक इंटरव्यू भी छपा था। पत्रों के मिलने का क्रम अब भी चल रहा है। कहीं-कहीं से मूल पत्र या उनकी प्रतिलिपियाँ अब भी उपलब्ध हो जाती हैं।

सकलन का एक महत्वपूर्ण भाग दयानारायण निगम ने १९४१ में बनपुर में मुझे दिया था जब मैं अपनी पुस्तिका लिख रहा था। इन सारे पत्रों का अद्यापि अमाना में छप चुके थे। निगम साहब ने दूसरे पत्रों को देने का वायदा भी किया था परन्तु उनको प्राप्त करने के लिए मुझे अपनी प्रकाशित पुस्तक की एक प्रति दिखाना जरूरी बतलाया था। जब मेरी पुस्तक तयार हुई तब दुर्भाग्य से उनका देहावसान हो चुका था। १९५१ में निगम का पुत्र सैनिक मरण पुरा। उन्होंने बतलाया कि उह मरण पत्रों के बारे में कुछ पता नहीं है। जिस समय निगम साहब ने मुझे पत्र दिए थे उसी समय अमाना का मनजर न भी मुझे बारह पत्र दिए थे। लगभग फिर उसी समय मुझे दुर्भाग्यवश सरकारी लिखा प्रमचन्द का पत्र मिला। इसलिये उसी ताज ने साहौर में मुझे अपने घर पर चकालिम पत्रों की नकल करने की सुविधा १९४१-४२ में दी थी। १९४८ में भार्द भोष्म साहनी ने मुझे इन पत्रों की हिन्दी प्रतिलिपि भी दी जिनसे मैंने अपनी उद्गी प्रतिलिपि में संग्रहित किया। उद्गी हिन्दी साहित्यिक क्षेत्र को लिये दस पत्रों की प्रतिलिपि भी मुझे साहनीजी ने दी। उपर्युक्त पत्रों में प्रमचन्द का चार पत्रों की प्रतिलिपि अपने हाथ से करके मुझे दी थी (गत वर्ष उद्गी ने बतलाया कि मूलप्रति अब गुम हो चुकी है।) तिली में जनक कुमार जन ने मुझे अयासी पत्रों को प्राप्त की जिन्हें मैंने नकल करके अद्यापि फाइल में ही रखा है। (प्रमचन्द पत्रों का संग्रह जो कि कई वर्षों से अद्यापि फाइल में ही रखा है।) प्रमचन्द का जीवन मार्क महाबारायण ने भी मुझे गत धोर वापस नही दिया। प्रमचन्द का जीवन मार्क महाबारायण ने भी मुझे प्रमचन्द न उद्गी टाकिया भत्र था। इसी तरह बनारसीनाथ शर्मा ने भी मुझे प्रमचन्द की प्रतिलिपियाँ (जो प्रायः पत्रों में हैं) दी। इनकी प्रतिलिपियाँ अद्यापि देवी विनोदचन्द्र द्वारा रामचन्द्र टण्डन इत्यादि मन्त्र भन्त अद्यापि

कौसल्यायन हिसामुद्दीन गौरी भानूदराव जांगी अख्तरहुसन रायपुरी इत्यादि का लिखे गए पत्र विभिन्न पत्रिकाओं या पुस्तकों में छप चुके हैं मैंने उन्हें वहीं से उद्धृत किया है।

मेरा पत्र सप्रह लगभग तीसरी पृष्ठा का बन गया था। कई मित्रों तथा प्रकाशकों ने सप्रह किया कि मैं इसे छपवा दूँ। प्रसिद्ध पृष्ठों की भूमिका व साथ सप्रह १९५१ में तयार था। दो वर्ष बाद भाई चंद्रगुप्त विद्यालकार ने इसका संशोधन भी कर दिया था परन्तु मैं कुछ सज्जना का लिखे गए पत्रों की प्रति लिपि की भांशा कर रहा था विशेषतया दुलारनाल भागवत तथा व० एम० मुशी। इस बीच में दो वर्ष हुए भाई अमृतराय ने मेरे पत्रों की एक प्रतिलिपि माँगी और इनके प्रकाशन की एक योजना बनाई जिसके अनुसार प्रथम पत्र का सप्रह उनके (अमृतराय) तथा मेरे नाम में दो भागों में प्रकाशित होगा— (क) निगम को और (ख) दूसरे मित्रों का लिखे गए पत्र। अमृतराय ने बतलाया है कि यह सप्रह दीर्घ ही पाठकों का उपलब्ध हो सकेगा। इस पुस्तक में मैंने उनका महत्वपूर्ण भाग उद्धृत कर दिया है। इसके लिए मैं उन व्यक्तियों का आभारी हूँ जिन्होंने मुझे मेरे सकलन इत्यादि के नाम में सहायता दी। पत्रों की प्रतियाँ देनेवाला के अतिरिक्त दो व्यक्तियों ने मुझे विनाय सहायता दी— अमरनाथजी भगतसिंह के साथी नान्तिकुमार (पानीपत) ने तथा मास्टर गुरवहंससिंहजी ने। इस कार्य में प्रथम पत्र के ज्येष्ठ पुत्र श्रीपतराय से मुझे प्रोत्साहन मिलता रहा है। इसके लिए तथा पत्रों के कहानियों विषयों के संपादन करने की भांजा के लिए मैं उनका विशेषतया आभारी हूँ।

इतक अतिरिक्त इस पुस्तक का सम्पूर्ण करने की प्रेरणा मुझे श्री चंद्रगुप्त विद्यालकार श्री जगन्नाथ भासाद तथा कमर रईस से मिली। मैं उनका विशेषतया कृतज्ञ हूँ। मारवाड़ी लाइब्रेरी श्री महावीर जन लाइब्रेरी तथा दिल्ली यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी उस्मानिया यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी हैदराबाद (श्री मुहम्मद इस्माइल) अदबीयाते उर्दू हैदराबाद से भी मुझे मूल्यवान सहायता मिली है। उनका भी मैं धन्यवाद करता हूँ।

नई दिल्ली

—भवन गोपाल

१५ अगस्त १९६२

सूची

	प्रस्तावना	
१	पटवारी का पोता	३
२	बचपन और विद्यार्थी जीवन	६
३	पत्नी विवाह	१२
४	अध्यापन काय का आरम्भ	१८
५	साहित्यिक दान में प्रवेग	२७
६	नई प्रकार की कहानियाँ	३२
७	दूसरी गादी	४२
८	देश प्रेम के कारण सरकारी कोष	४५
९	प्रेम और वीर रस की कहानियाँ	५१
१०	पत्रकार बनने की इच्छा	६३
११	गोरखपुर में अध्यापक के पद पर	७१
१२	एक अनजान मित्र और कहानी सप्रहो का प्रकाशन	८७
१३	प्रेम लगाने के प्रयास	९६
१४	सरकारी नौकरी से त्यागपत्र	१११
१५	राष्ट्रीय स्कूल में हेडमास्टरी	१२४
१६	सरस्वती प्रेम की स्थापना	१२८
१७	बचता कले निमा गया ?	१३८
१८	रगभूमि	१४६
१९	कायाकल्प	१५३
२०	किर स नौकरी माधुरी-सम्पादक	१६६
२१	प्रमथद घदान्त में	१७६
२२	कलम का मजदूर	१८४
		१९५

२३	'हंस' का प्रारम्भ और पत्नी की जेलयात्रा	२०१
२४	माधुरी से त्यागपत्र	२१४
२५	फिर बनारस में	२२७
२६	जागरण	२३४
२७	मैं कहानी कैसे लिखता हूँ ?	२६६
२८	फिल्मी दुनिया में	२६६
२९	हंस भारतीय माहित्य का पत्र	२८८
३०	सावजनिक जीवन और गादान	३०१
३१	भवसान	४१४

पटवारी का पोता

प्रमचन्द का जन्म लमही गाँव में थावण वर्षी १० सम्बत् १६१७ धनिवार (२१ जुलाई १८८०) को हुआ। लमही गाँव मौजा मेंड़वा बनारस में आजम गढ़ जाने वाली गढ़क पर बनारस से चार मील की दूरी पर बसा है। छोटा सा गाँव है। खाना लोग कुर्मी हैं। एक चौघाई घर कायस्था में हैं। इन्हीं में से एक कायस्थ घराने में प्रमचन्द का जन्म हुआ। मजान बच्चा था जिसे प्रमचन्द का नाम पटवारी गुरुमहायनाल ने इस गाँव में धान ही बनवाया था।

अपने जमाने में और पटवारिया का तरह गुरुमहायनाल खान-पीते भादमी थे। माठ-पमठ बीया जमीन भी खरी ली थी। यह पटवारिरी की बर्माई थी। गुरुमहायनाल का कुटुम्ब प्रतिष्ठित ही रहा हुआ। पटवारीजी पियवन्द भी थे। उस जमाने में दो धान की बोतल मिलती थी। जहाँ ही मौजा मिलना अपनी पक्षों पर पिन पड़ते। पानी बहुत मली थी। सुपचाप मार जाती रहती। मजान बच्चा लड़का बीने-वरलात तीमरा लड़का अजायबनाम और बीया लड़का उजिनारायणनाम माँ को पिटती हुई देमते और सट्टमकर पुत्र हो जाते। परन्तु दूसरा लड़का महावीरनाम जो बहुत लगडा था याप हो पकडकर बैठा देता। अनपढ़ महावीरनाम माँ-बाप का बहता था। मुँगी गुरुमहायनाल ने लगमग सारी जमीन उसी के नाम करवा दी थी। कुल छ बीया जमाने अपने नाम रखी और बाँ में वह भी महावीरनाम के पुत्र बलदेवनाम के नाम करवा दी थी।

गुरुमहायनाल की मौन के बाँ महावीरनाम को एक अच्छे भाई ने सम्ब बाल दिनाकर साठ बीया जमीन हविमा ली। इन प्रकार मार परिवार के पाम करके छ बीया जमीन रह गई जो बलदेवनाम के नाम थी।

बीने-वरलात डाकमाने में मुँगी बने। उन्होंने अपने छोटे भाई अजायब-नाम का भी पाने ही महकम में भर्ना करवाया। और अजायबनाम ने अपने

छोटे भाई उदितनारायणलाल को भी डाकखाने में नौकरी मिलवाई। कौसुन्दर-लाल तीस साल की उम्र में ही परलोक सिंघार गए। उनकी विधवा कुछ दिन लमही में रही फिर बच्चा को चुनार ले जाकर रहने लगी। उसका लड़का मातीलाल भी तीस साल की उम्र का होकर मर गया और अपनी विधवा और चार बच्चों को पीछे छोड़ गया।

उदितनारायणलाल जा डाकखाने में मुगी बन गए थे, सरकारी खेतों में मिलसिले में सात मान की सजा पा गए। जब लीट का काम के मारे मुंह न दिखा सके और फिर उनका पता न चला। उनका लड़का धावारा या और वहाँ भी घर में भाग गया। दो सड़कियों में से एक की घांटी हो चुकी थी दूसरी की शादी होनी थी।

इतने बड़े परिवार का निर्वाह कुछ बीघा जमीन से तो न हो सकता था। कमान वाले से लेकर एक भजायबलाल थे। उनकी तनख्वाह बीस-पच्चीस रुपये होगी। इसी में सब कुछ रुपया अपनी विधवा चाची को भेजते कुछ मोनीमाल की विधवा को भेजते कुछ उदितनारायण की विधवा और बच्चों को भेजते। उनकी लड़की की गाड़ी भी की। भजायबलाल अपने नाट्यारो का भी कुछ-न-कुछ सहायता देते रहते। दो रिश्तेदारों को उन्होंने डाकखाने में नौकरी मिलवाई।

बीस पच्चीस रुपये में यह सब कुछ करते यह प्रचम्भ की बात है। बालाई भामदनी का कोई खरिया न था मगर महंगाई नहीं थी। गाँव में रहते थे। वहाँ के बहुत से लोग अपने प्रदेश से बाहर जाकर कमाने थे और मनीमाल घर भेजते थे। भनपड़ कुमिया के नाम पर चिट्ठी पत्री लिखना उनके नाम आए पत्र पढ़ना और मनीमाल ईत्यादि करना—यह सब काम भजायबलाल करते थे। इनके बदले में उन्हें गेहूँ चावल सब्जी तथा दूध मिल जाता था।

भजायबलाल की सेहत अच्छी नहीं थी। कमजोर थे। परन्तु भ्रष्ट स्वभाव के मलमानस। जहाँ तक हो सकता भला करते। गाँव में उनकी इज्जत थी। पक्ष बनाए जाते तो ईमानदारी से अपना फलना दते। गीता और दूसरे शास्त्रों का पाठ करते थे परन्तु रस्मी धर्म में उन्हें विश्वास न था। पड़ोस-मुजारियों में भी विश्वास न था। कहते धर्म का मूल आधार सत्कार है धार्मिक अनुष्ठान तो महज ढकासला है। भजायबलाल को बीबी भी अपने ही ढग की मिली थी। भ्रष्ट-हीन देखने में तो बहुत खूबसूरत थी ही (इसमें अधिक खूबसूरत औरत खानदान में नहीं आई)। अपने पति की तरह यह भी हर एक की सहायता करने को तत्पर रहती। किसी से झगडा नहीं करती और न ही किसी की चुगली। उसके पिता का रिश्ता था। उन्हें निश्चय का गीत भी था। भ्रान्दीदेवी योधी

पढ़ा लिखी थी, पर जितना ज्ञान उसका उमर का उमर घर की दूमरी धोरता को भी उमने लाभ पहुँचाया।

भानन्दीजी के पहलू को लड़कियाँ हूँद और दाता मर गई। लमही की श्रीगर्तों ने कहा कि उसका मायका मर गया हूँद बच्चा बहुत दिन बिना नहा रहे सक्त। तामरी बार जब बच्चा पैदा हान वाला था भानन्दीदधी मर नही गई लमही म ही रही। इस धार भी लड़की पंग हुई परन्तु वह जिन्दा रहा। उसका नाम मुग्गी पडा। इसका जन्म के सात घाठ वर्ष बाद भानन्दीदधी के एक लड़का हुआ। यही बच्चा भाग चलकर प्रमचर के नाम से प्रसिद्ध हुआ। घर का लिया गया नाम धनपतराय था और उसका ताऊ उस प्यार से नवाब पुकारत थे। जब धनपतराय ने पहल-पहल लिखना शुरू किया, तब उन्होंने नवाबराय नाम को ही धननाया था।



बचपन और विद्यार्थी जीवन

अजायबलाल शास्त्रान की नौकरी ने सिलसिल में कई छोटे माटे गांवों और कस्बों में रहे। कभी वह बांग्ला आजमगढ़ बस्ती और गोरखपुर और कभी सखनऊ के आसपास काम करता रहा। उनकी पत्नी सुग्गी धनपतराय और कभी-कभी भाइया के बच्चे भी उनके साथ ही रहते। परंतु अधिकांशतः वाम बच्चे लमही के घर में दूसरे भाइयों के कुटुम्ब के साथ रहते थे। जब कोई धनपतराय में पूछता कि तुम कितने भाई हो तो वह उत्तर देता हम पाँच भाई हैं।

इनमें से एक तो प्रमचंद्र के हमजानी थे। दोनों हकटठे मौलवी साहब के पास पढ़ने जाते। मौलवी साहब के स्कूल का तथा वह क्या और कैसा पढ़ाते थे इस सबका रोचक वर्णन प्रेमचंद्र ने अपनी कहानी 'चोरी' में किया है। कसबचंदरे भाई ने एक रुपये की चोरी की। कसे धनपतराय और भाई ने इस रुपये का भुनवाया कसबचा को पता लगा। कसे उन्होंने स्कूल में आकर लडकों को पकड़ा और घसीटकर लगे और कसब अपने लडके को पीटा। आनंदीश्री ने देवर को अपने लडके को पीटते देखकर धनपतराय को भी पीटना शुरू किया। कधी ने धनपतराय को छुड़ाया। मुझे ही क्यों छुड़ाया अपने बच्चे को क्यों नहीं छुड़ाया यह मैं नहीं जान सका। शायद मेरी दुबलता पर उन्हें दया आ गई हो। धनपतराय दूसरे बच्चा की तरह चलते थे। प्रेमचंद्र घर में नामक पुस्तक में शिवरानीदेवीजी ने कसे कितने ही उगाहरण लिए हैं। दादी को धनपतराय से बहुत प्यार था। वह उसे कहानियाँ सुनाती थी।

एक बार जब अजायबलाल जमानियाँ में नियुक्त थे प्रमचंद्र को कहानियाँ सुनाने वाला एक पागो हरकारा मिला। कई वर्षों के बाद इसी हरकारे के नाम पर उन्होंने कजाकी नामक कहानी लिखी। इस हरकारे का नाम भी कजाकी ही था। यह कभी उन्हें बिरहे गाकर सुनाता और कभी कहानियाँ सुनाता। उसे

चोरी ठाके मार पीट और मूत प्रत की मक्का कहानियाँ याद थी। मैं ये कहानियाँ सुनकर विस्मयपूर्ण प्रानन्द में मग्न हो जाता। उसकी कहानियों के चोर और डाकू सच्चे यादों के जो समीरों को सूँकर दीन-दुखी प्राणियों का पालन करते थे। मुझे उन पर घृणा के बल्के थड़ा होती थी। बच्चाकी बच्चा को कूचे पर बठाकर दौड़ता। उनका लुग करन के लिए वह समस्त गाजर और ईंय लाता। एक बार एक हिरन क बच को पकड़ने के प्रयत्न में बड़ा समय लग गया। बच्चाकी डाकूवान देर से पहुँचा। देखा प्रजापवलाल बच्चा वलाल हैं। बच्चाकी निकान दिया गया। धनपतराय को इस पर बड़ा तरस आया। दूमरे लिन उहाने बच्चाकी को बुलवाया और भठारे से घाटा लाल चावल लाकर दिया। उही के प्रायह पर कुछ दिनों बाद बच्चाकी को दोबाग रख लिया गया।

जब धनपतराय की आयु सात या आठ वर्ष की थी प्रजापवलाल इलाहाबाद थे। प्रानन्दीदेवी बीमारी पड़ी। बह छ माह वामार रही। मुग्गी जिसका कुछ लिन पहल ही विवाह हा गया था आई। लदी बही थी। धनपतराय क चकर भाई दवाइ का प्रबन्ध करत थे। स्वयं धनपतराय माँ के सिरहाने बडे पला भयते। प्रानन्दीदेवी क सिरहाने के पास ही एक शक्कर की वातल रखी रहती थी। माँ के मो जाने पर धनपतराय चुपक से शक्कर पर हाथ साफ करत रहत। माँ की हालत खराब हाती गई। मरन से पहले धनपतराय उनक चचरे माई और मुग्गी का हाथ प्रजापवलाल के हाथ में दकर बोली य तीना बच्चे मुम्हारे हैं।

प्रानन्दीदेवी मर गई। सब रोय। धनपतराय को तब समझ में नहीं आया था कि लोग रो क्या रहे हैं। और जब समझ में आया तो वह इतना रोय कि अपने माहित्य में प्रान्दीदेवी की मृत्यु क बाद मुग्गी अपनी समुराल गई। दानी भी बीमार पड़ी और लमही लगी गई। भया दूध में शक्कर डालकर धनपतराय को पिनात। धनपतराय को माँ की याद आती और बह एकल म बठकर रोत। कुछ महीनों क बाद प्रजापवलाल स्वयं बीमार पडे और लमही गय। धनपतराय क लिए फिर बरी मोलको साहय वाला स्कूल। पुराना कायत्रम चलने लगा। मुग्गी बडा मरत सादर गाना और लीग तोडकर पूमना। फिर प्रजापवलाल का तबाना जीमनपुर का हुआ। धनपतराय इधोर गय। दानी जीमनपुर पहुँची। छठ लाम महीन किराय का मकान था। निहायत गला। उसी क दरवाज पर एक कोठरी थी जे धनपतराय को मिली।

मजायबलाल न दखा कि वगर बीबी के रहता आसान नही । उहने दावारा गादी नी । बीबी के साथ उसक छोटे भाई विजय बहादुर भी आय । यह घनपतराय से थोड़े बड़े थे । दोना में खूब पटता । प्रमचन्द विमाता को चाची कहते थे । परन्तु चाची दुर्भात करती । मजायबलाल बिबश थे । बुढाप की गादी थी । जवान पत्नी बूढ़े पति पर रोव जमाती । इसी कारण मजायबलाल की माता तो समही लौट आई और वही थोड़ दिना बाद वह मर भी गई ।

चाची घर की मालकिन बनी । घनपतराय से उनका व्यवहार ऐसा था कि घर में भागने का जी करता । जिस कोठरी में सात थे उसका दरवाजा बाहर ही खुलता था । जान भान पर कोई रोक धाम नही थी । घनपतराय ने खुद लिखा है कि वह बगल ही में एक तम्बाकूवान के मकान पर चले जाया करते थे । इस तम्बाकूवाले का लडका घनपतराय का सहपाठी था । तम्बाकू ने बड़े-बड़े काले पिण्डा के पीछे बठकर तम्बाकूवाला और उसक कई मित्र हुक्का पीते और तिलिस्म ए-होशेरबा' की भद्द तिलस्मी कहानियाँ सुनते । इस ग्रन्थ के १७ भाग निकल चुके थे । एक एक भाग बड़ आकार के दो-दो हजार पृष्ठा से कम न होगा । और इन १७ भागों के उपरान्त उसी पुस्तक के अलग अलग प्रसंगों पर पचीसा भाग छप चुके थे । जिसने इतने बड़ ग्रन्थ की रचना की उसकी कल्पना शक्ति कितनी प्रबल होगी इसका केवल अनुमान किया जा सकता है । कहते हैं य कथाएँ मौसाना फजी ने एकवर के विनोदाय फारसी में लिखी थी । इतनी बूहद कथा ससार की किसी अन्य भाषा में शायद ही हा । पूरा एसाइकलोपीडिया समझ लीजिए । घनपतराय इन कहानियों में हूब गए । सुनने का यह क्रम लगभग एक साल तक चलता रहा । घनपतराय की चेतना जगी और इस उम्र में रोमांटिक कहानियाँ का जो थोड़ा पडा वह आगे चलकर एक विशाल बूझ बना ।

फिर मजायबलाल का तबान्ला मारनपुर को हुधा । मकान यहाँ भी उसी तरह का था । इसमें भी दरवाज वाली एक कोठरी थी । घनपतराय मिशन हाई स्कूल में छः दर्जे में दाखिल हुए ।

यही एक पुस्तक बचने वाले से मित्रता हुई । इसका नाम था बुद्धिलाल । भव प्रमचन्द के शब्दा में—

मौसाना शहर परं रतननाथ सरंगार मिर्जा रुमवा मौलवी मुहम्मदअली हरनाई निवासी उस बक्त के सबप्रिय उपयासकार थे । इनकी रचनाएँ जहाँ मिल जाती थी स्कूल की याद भूल जाती थी और पुस्तक समाप्त करके ही

दम खता था। उस जमाने में रेनाल्ड ने उपयासों की धूम थी। उर्दू में उनके अनुवाद घटापट निकल रहे थे और हाया हाय विकत थे। मैं भी उनका छात्रिण था। स्व० हजरत रियाज ने रेनाल्ड की एक रचना का अनुवाद हरम मरा के नाम से किया था। उसी जमाने में सखनऊ के साप्ताहिक भवष पत्र के सम्पादक स्व० मौनाना सज्जाद हुसैन ने जो हास्परस ने प्रमर कलाकार हैं रेनाल्ड के दूसरे उपयास का अनुवाद घोला या 'तिलस्मी प्रानूस के नाम से किया था। ये सारी पुस्तकें मैंने उसी जमाने में पढ़ीं। और प० रत्ननाथ सरदार से तो मुझे तथि ही न होती थी। उनकी सारी रचनाएँ मैंने पढ़ डानी। रैती पर एक बुक्सलर बुद्धिलास नाम का रहता था। मैं उसकी दूकान पर जा बैठता था और उसके स्टॉक से उपयास ले-लेकर पढ़ता था मगर दूकान पर सारे दिन तो बठ न सक्ता था इसलिए मैं उसकी दूकान से प्रप्रेज १ पुस्तकों की कृजियाँ और नोटस लेकर अपने स्कूल के लइकों के हाथ बेचा करता था और इसके मुदाबज में दूकान से उपयास घर लाकर पढ़ता था। दो-तीन वर्षों में मैं सगडा ही उपयास पढ़ डाले हागे। अब उपयासों का स्टॉक समाप्त हो गया तो मैंने नवलकिशोर प्रस से निकले हुए पुराणों के उर्दू अनुवाद भी पढ़े।

इसी जमाने में धनपतराय ने तिल म लिखने का शौक भी पना हुआ। मैं लिखता और फाडता लिखता और फाडता। कभी-कभी मरे पिताजी हुनका पीत-पीते मेरी कोठरी में भी आ जाते थे। जो कुछ मैं लिखकर रखता वह दखलत और पूछत नवाब कुछ लिख रहे हो ? मैं शर्म के मारे गड़ जाता। मगर इन विषय में पिताजी को कोई दिलचस्पी न थी। एक तो उन्हें काम के मार छुट्टी ही न मिलती थी दूसरे उस विषय में वह जानकार भी न थे। धनपतराय की पहली रचना इही दिना लिखी गई। यह नाते के एक मामूँ के रोमान पर ब्यग्य था। य मामूँ अघट उग्र तक बिन ब्याहे रहे। नातारों न उनमें कोई दिलचस्पी न सी। आखिर वह एक चमारिन पर धाधिक हो गए। चमारिन चंचल थी। एक दिन मामूँ ने उन पकड़ लिया। गाँव के चमार लोग नाक में थे। दरवाजा तोड़ डाला गया और उनकी गांगमासी की गई। जूता एतरी छदो साल धूँसा मभी का प्रयोग किया गया। एक महीने तक हल्की और गुड पीते रहे। दुपटना की सबर गारमपुर पहुँची। धनपतराय न भी मुनी। कुछ दिन बाद यही नाक के एक मामूँ गोरमपुर घाव और अनापबनाप के माप टहर। गाँव वाला पर इस्त्रागाया दापर करना चाहत थे। इमने पहले यह नाक के मामूँ धनपतराय को उपयास पढ़त दखकर विगडा करत थे और

भजायबलाल से गिकायन की घमकी दते थे। जब धनपतराय को नातक मामू की उक्त कमजोरी का पता लग गया तो अब वह क्यों उनका रोब मानने। उनको गर्मिदा करने के लिए धनपतराय ने मामू की दुघटना पर एक नाटक लिख मारा। मित्रों को सुनाया। सबको खूब पसन्द आया। इसके बाद उस नाटक को साफ-भाफ लिखकर मामू साहब के खिरहाने रखे स्कूल का रास्ता लिया। स्कूल पहुँचकर इसी बात पर सारा ध्यान सोचने रहे। नाटक पढ़कर मामू साहब क्या कहेंगे? माँक को घर पहुँचकर देखा कि मामू साहब चारपाई पर नहीं हैं। नमर में सन्नाटा छाया है। मामू साहब के कपड़े सत गठरी जूता सब नदारत हैं। मालूम हुआ मामू साहब एक जरूरी काम से गाँव चल गए हैं मोजन तक नया किया। मैंने धानर मारा कमरा छान मारा मगर मेरा ड्रामा—मेरी यह पहली रचना—कही न मिली। मालूम नहीं मामू साहब न उम चिराग घली के सुपुई कर दिया या अपने साथ स्वयं ले गए।

विनोद के लिए धनपतराय की गुल्ली-डण्डे का बड़ा शौक था। यह खेल सब मना से अच्छा लगता न लॉन की जरूरत न कोट की न नट की न घायी का। मज से किसी पेड़ से एक टहनी काट ली गुल्ली बना ली और दो घण्टी भी भा गए तो खेल गुरु हो गया। बचपन की मीठी स्मृतियाँ म गुल्ली ही सबसे मोठी है। वह प्रातःकाल घर से निकल जाना वह पेड़ पर चढ़कर टहनियाँ काटना और गुल्ली डण्डे बनाना वह उत्साह वह लगन वह खिलाडियाँ क जमघटे वह पाना और पाना वह लड़ाई भगड़े वह सरल स्वभाव जिसमें छत प्रछत अमीर-गरीब का बिलकुल भेद न रहता था जिसमें अमीराना चाबला के प्रदर्शन की अभिमान की गुंजाइश ही न थी पिताजी चौकी पर बैठे बग से रोटियाँ पर अपना बोध उतार रहे हैं अम्मा की दोहरे केवल द्वार तक है लेकिन उनकी विचारधारा में मेरा अन्धकारमय भविष्य टूटी हुई नौका की तरह डगमगा रहा है। और मैं हूँ कि पदाने में मस्त हूँ न नहाने की मुधि है न खाने की। गुल्ली है तो अरा-सी पर उसमें दुनिया भर की मिठाइयों की मिठाई और नमार्नों का आनन्द भरा हुआ है।

रामलीला भी विनोद का एक विनय अवसर था। मुझे रामलीला में आनन्द आता था। आनन्द तो बहुत हल्का-सा गल है। वह आनन्द उमाइ में कम न था। सयोगवण उन दिना भरे घर में बहुत थोड़ी दूर पर रामलीला का मंगल था और जिस घर में नीला-पानों का रूप रंग भरा जाता था वह तो मेरे घर से बिलकुल मिला हुआ था। दो बजे दिन से पानों की सजावट हान लगती थी। मैं दापहर ही से वहाँ जा बैठना और उत्साह से दोड़-दोड़कर

छाटे माटे काम एक बाठरी में राजकुमारा का शृंगार होता था। उनकी दृष्टि में रामरज पीसकर पोती जाती मुँह पर पाउडर लगाया जाता और पाउडर के ऊपर साल हर-नील रंग की बुन्दियाँ लगाई जाती थी। सारा मामा मोहें गाल ठोड़ी बुन्दियाँ में रच उठनी थी। एक ही भादमी इस काम में कुशल था। वही वारी-वारी से तीना पात्रो का शृंगार करता था। रंग की प्यालिया में पानी लाना रामरज पीसना पत्ता मलना मेरा काम था। जब इन तयारियाँ के बाद विमान निकलता तो उन पर रामचन्द्रजी के पीछे बैठकर मुझे जो उल्लास जा गब जो रोमांच होता था वह अब साट साटब के दरवार में कुर्सी पर बैठकर भी नहीं होता।

विनोद का एक और विशेष साधन पतंग उड़ाना था। इसका भी घनपनराय का शौक था। घरवालों की धीरे-धीरे बचाकर बनकीए उड़ाने में बहुत साग ममय व्यतीत होता। माँका दना बल्ल बाँधना पतंग टूटने में भाग न लेने के लिए भी तयारी होती। विप्रयवहादुर के साथ बाल मियाँ के मजान की जाने और बनकीए की देखते। बनकीए लूटने के लिए बतहागा भागत। अखिं काममान की ओर हानी ओर मन उस आकाशगामी पक्षि की ओर जा मन्त गति से भूमता पतंग की ओर चला जाता। नाय-साय बालका की एक पूरी मना सग ओर भाडदार बस निय उसका स्वागत करने की दीडती। किमी का घनपन आग-पीछ की खबर नहीं। मनी मानो पतंग के साथ ही आकाश में उठ रहा जहाँ सब-शुद्ध समतल है न मोटर-कारें हैं न ट्राम है न गाड़ियाँ।

घनपतंग (प्रमचन्द्र) के इस व्यवसन का बगन-बड़े भाई साहब शीपक बनानी में मिलता है। पतंग उड़ाने का शौक तो था मगर पंम पाम न होन के बजाय प्रजायबनान की प्रायिक स्थिति बहुत अच्छी नहीं थी। घणपन के पुत्र का घमरोषा जूना मीने बहुत निनों तक पहना है। जब तक मरे विना जीबिन तक तक उड़ाने मरे लिए बारह घाने में खयादा का जूना कभी नहा खरींग ओर चार घाने गज में खयादा का कपडा कमी नहीं खरींग।

घनपनराय की पमा की हमारा निश्चयन रहती थी। मुझे महीन में बारह घान पंम मग्नी थी। उन बारह घानों में मैं एकप घान हर महीन का ताता था। जिन मुस्लम में मैं था उनमें छापी ज्ञान के साग था। वे साग मुझमें लहर दो बार पतंग लेन थे। मैंने प्रीम दन में मुझे बढी निश्चयन होनी थी। पर मैं मी ला थी नहीं। चाँची ही मैं माँगना। ब बुरी तरह मन्तानी। विना मैं कहन की हिम्मत न थी इसलिए माना की या मुझे बार बार मनाती थी।

पहला विवाह

घनपतराय जब नबी बचास में पहुँचे तो उनकी उम्र पन्द्रह साल की होगी। भद्रायबलाल ने सारे बुद्धिमानों का समझौता भेजा हुआ था। घनपतराय ने उनसे पूछा कि पढाई के लिए कितने रुपये माहवार की आवश्यकता होगी। घनपतराय ने कहा था पाँच रुपये दे दिया कीजियेगा। भद्रायबलाल ने सोचा मस्त हाँ छूटे। यह रकम उन दिनों भी कम थी। दो रुपये पीस के एक रुपये दूध का दो रुपये किताब खपड़े आदि। नतीजा यह था कि हाथ लग रहा।

घनपतराय बनारस के कबीर कालज में दाखिल हुए। सबेरे गुड़ और चबूतरा लेकर राँव से बनारस जाते दिन भर शहर में घूमते और शाम का घर लौटकर बुझी के सामने टाट पर बैठकर पढ़ते।

नबी बचास ने वार्षिक इम्तिहान से कुछ दिन पहले भद्रायबलाल के समुदाय ने घनपतराय की गादी का प्रबंध किया। पिता ने गुड़ खरीदने के लिए पाँच रुपये भेजे। पाँच रुपये का एक मन गुड़ आया। चाची ने गुड़ को एक मटक में रखा और उसमें मूँह को एक सफ़ेदा रस्स कर मिट्टी से बन्द कर दिया। चाचा के पिता बीमार थे इसलिए चाची तान महीन के लिए मायके गईं। घनपतराय की वार्षिक परीक्षा नज़दीक थी इसलिए वह नहीं जा सकते थे। मायके जाते समय चाची ने चाचा-सा गुड़ एक हूँडी में भलग से रख दिया और घनपतराय से कहा कि मटका मत खोलना। परन्तु चाची के जाते ही घनपतराय सबेरे भाई तथा मित्रों ने गुड़ का तड़ा से खाना शुरू किया। रोज़ काफ़ी-सा गुड़ उड़ जाता। जब भद्रायबलाल घर आये और चाची से गुड़ माँगा तब पता लगा कि बहुत-सा तो खत्म हो गया है। गुड़ कैसे खाया गया इसका कारण प्रमत्त न भयनी कहानी हाली की छुट्टी में बड़े रोषण डग से किया है। वह लिखत है—

'सबेरे दूध के साथ गुड़ दोपहर को राटियों के साथ गुड़, शाम को खाना

के साथ गुड़ रात का दूध व साथ फिर गुड़ । यह तो वाजिब ही खच था । मगर मदरस स बार बार पानी पीन घर आना और दो-एक टुकड़ियाँ निकाल कर खा लना इसकी गुजायश न थी । परन्तु गुड़ का ऐसा चस्का पड गया था कि हर बच्चा नंगा सवार रहता । घर म आन का मतलब था गुड़ की घामत आना । एक हफ्त म हाँडी खत्म हो गई । परन्तु मटका खालने पर पावन्दी थी । आची के आने म अभी पीने तीन महीन बाकी थ । एक दिन तो किसी-न किसी तरह मन्न किया, लेकिन दूसरे दिन सन्न नहीं रखा जा सका । मटक पर निगाह पडते ही होगा जाता रहा । मटका खोलकर एक हाँडी गुड़ निकालकर मटक को बंद किया और प्रण किया कि इस हाँडी को तीन महीने चलाऊगा चन या न चल मैं चलाय जाऊगा । मटके को मैं मजिल हफ्ततर्वा समझूगा जिसे रस्तम भी न सोम सका था । मैंने मटक म पिढियाँ को कुछ इस तरह बची नगाकर रखा जैसे बाब दुकानदार दियासलाई की डिबिया खोलकर रज दत हैं । एक हाँडी गुड़ खाली हो जान पर भी मटका सवरज था । घम्मा को पता ही न लग । मुभावजा की नौबत कस आएगी । मगर दिन और जबान म कम्म का गुरू हुई कि क्या कहूँ और हर बार फतेह जबान ही क हाथ रहती । यह नो मगुल जबान दाहजोर पहनवान को नचा रही थी जैसे मगरी बन्दर को नचाए । उसको जो घासमान में उडता है और फलतुलफलाक क मन्मूने बांधता है और अपने जोम मे फिर उनको भी कुछ नहीं समझता । बार-बार इरादा करता कि तिन भर म पाँच पिढलियो से ज्यादा न खाऊँगा । लेकिन यह इरादा गराबियो की तयज्जा स ज्यादा दरपा न होता था । घटे-दो घटे स ज्यादा न टिकता । अपने घाय पर हस्तता न करीन करता गु को ता ता रहे हो मगर बरगात म सारा जिस्म सड जाएगा । गन्धक का मरहम लगाए पूमाय । कोई मुम्हारे साथ बटना भी पमद न करेगा । कम्म गाना—इत्म की माँ की ईश्वर की मगर उनका बड़ी लथ होता । दूसरा हफता खत्म हात होत हाँडी खत्म हो गई । उम तिन मैं बडे चुनू व चुनू क साथ ईश्वर से प्रायना की भगवान् य मरा बचन मन मुझे परगान कर रहा है । मुझे वाकिन दो कि इसक कायू म रज सकूँ । मुझे दाहृत-हात का लगाम दो जो इसने महे भी डाम दू । यह कम्मरुन मुक घम्मा म पिन्वाने और चुडकियाँ मुनवान पर गुता हुआ है । गुम ही मरी रशा करो ता बच सकता हूँ । मरी घायो स इम जोन घवन्धिन म नो चार बूँ घायुओं की भी गिरी सकिन ईश्वर ने भी कुछ ममाघन न की और गुड की ब्राह्मिा मुक पर गानिय रही यहाँ ता कि दूसरी हाँडी की सरपियाकशानी की नौबत पहुँची । हुम्न इतिहास स उरी तिनो तीन दिन

की ताताक हुई और मैं ननिहाल गया। अम्मा ने पूछा गुड का मटना देना है? चींटे तो नहीं लग। सील तो नहीं पहुँची? मैं मन्क को देखने की भी बसम याकर अपनी समाप्तमन्ता का सबूत लिया। अम्मा न मुझे भरूर की नठरा से लेया और मरी हुकमपरवरी व मिल म मुझे एक हाँडी निकाल लेने की इजाजत दे दी। हाँ तारी भी बर नी कि मँह अचड़ी तरह बर कर दना। अब तो वहाँ मुझे एक दिन एक एक जुग मालूम होने लगा। चौथे दिन घर आते हाँ मैंने पहना काम जा लिया वह मन्क का सोलकर हाँडी भर गुड निकालना था। एकबागी पाँच पिढलियाँ उठा गया। फिर वहाँ हकडबाजी गुड हुई। अब क्या गम है? अम्मा की इजाजत मिल गई थी। सर्वा भय कोतवाल— और हाँडी गायब। आखिर मैंने अपने दिन की बमजोरी से मजदूर होकर मटके की कोठरी के दरवाजे पर कुफल डाला और इसकी कुजी दीवार व एक माट गिगाफ म डाल दी। अब देख लुम बँस गड सात हाँ। इस गिगाफ म म बजी निकालन के प मानी ये कि तीन हाथ दीवार खो डानी जाए। वह हिम्मत मुझसे न थी। मगर तीन दिन म ही मन्न का पमाना छलरु उठा और इन तीन दिनों में भी दिन की जो हालत थी वह बमान से बाहर है। डिजरा धीरी की तरफ बार बार गिरता और बे-सब्र गिगाहो से दस्का और हाथ मल कर रह जाता। कई बार कुफल सटखटाया लीचा झटके लिए मगर जालिम खद भी न हमसा। कई बार इस गिगाफ का जायजा लिया। इसम भाँकर दया एक सक्डी से इसकी गहराई का अन्ताजा करने की कोशिश की मगर मकी तह न मिली। तबीयत खोई-सी रहती। न खान पीन म कुछ मजा था न खेलन पूदन म। नफस बार-बार मित्तरु के जोर म दिन को बायल करने की कोशिश करता। आखिर गुड और किस मरज की दबा है। मैं इसे फेंक ना देता नहीं खाता ही तो हूँ। क्या आज माया क्या एक माह बाद। इसमें क्या पक? अम्माजान न मुमानियत की है बेशक लेकिन उह मुझे एक जायज काम न बता रखन का क्या हक है। अगर व आज कह खेलने मत जाओ या दरवाजा पर मम पडो या तालाब म तरन मय जाओ या चिहियो व लिए कम्पा मय लगाया गिरानियाँ मत पकडा तो क्या मैं मान नेता हूँ? आखिर मरे भी कुछ हुक है या नहीं? ता फिर इस मुषामल म क्या अम्मा की मुमानियत पर अपनी धारभूषा और सहाहिया को बर्बात कर दँ? आखिर चौथे दिन नफस ने फतह पाई। मैंने धवस्मुवह एक कुत्ता लतर दीवार सामना घुस किया। गिगाफ था ही। सोलन म उपाया निवृत्त न हुई। साथ घटे की मेहनत साका व धार दीवार से कोई गज भर अम्मा और तीन इच मोटा बण्ड

झूठकर नीच गिर पड़ा और गिगाक की तरह म यह कलीद कामयाब पड़ी हुई थी जम समन्दर की तरह म मोती की सीप पनी हो। मैं भटपट इसे निकाला और और दरवाजा बंद कर लिया। मटक म इस दस्ते बु स काबिले प्रहसास कमी बाकिया हो गई थी। हजार तरकीबें आजमाने पर भी इसका खला पुर न हा सका। मगर अब की बार मैंने इस चटोरपन का प्रमा जान की बापसी तक छात्मा कर दन के लिए, कुजी कुए म डाल दी। किस्सा तबील है। मैंने कव कुफल तोड़ा कसे गुठ निकाला और मटका खाली हो जाने पर कसे इसे ताडा और इसके दुकड़े रात का कुए म फेंके और प्रमा प्राइ तो मैंने नसे रो राकर उनसे मटक मे चोरी जान की दास्तान कही। यह बयान करने लगा तो यह बाकिया जो मे आज लिखन बैठा ह नावमाम रह जाएगा।

खर घापी की सयारी हुई। धनपतराय बहुत खुग थे। मडप क लिए बीस खू काटे। बरात रामपुर (रमवापुर) गई। समुर जमीनार थे। रीति-रिवाज क धनुगार दूह स हमी-मजाक हुमा। धनपतराय न खुगी स सब रस्मो म हिस्सा लिया। बिगई हुद अँटगाडी स समही चने। कई रोज की यात्रा क घा पर पहुँच। गाडी स उतरते ही दुलहिन न दूह का हाथ परडकर चलना शुरु किया। यह गाँव की जिंगी म एक नई बात थी। सब चकिन रह गए। धनपतराय किम्मत। दुलहिन को भेता। उग्र म दूह स बटी थी। एक कथा दूमर स ऊबा। रग बाला। जब मैंने उसकी मूरत ागी ता मरा खून मून गया। पिता ने बहयाई की हरमत देत ही ली थी। जब उन्हें मामूम हुआ कि दुलहिन कितनी बमूरत है तो प्रजायबलाल न अपनी बीबी स बटा 'लान्दाजी न मरे लडक को कुए म दवेस लिया। प्रफजोस मेरा गुनाम-सा लडका और उसको यह स्त्री। मैं तो उगकी दूमरी ागी क गा। चाची न कहा दगा जाणा।

कुछ ही दिन बाद प्रजायबलाल जमानियाँ वापस गये। कुछ दिन बाद उनकी बीबी भी वहाँ गई और जाते हुए धनपतराय की बीबी को भी साथ लती गई। घ महीने बाद प्रजायबलाल का तवाइसा सगनऊ का हुमा। बीबी और यह को समहा दाइ गए। धनपतराय वहाँ पहल म थ ही। धनपतराय की बीबी जबान की भी मीठी न थी। यह इन्सान का घोर भी दूर क दना है। पठि की सोतनी माँ स उसकी महा पटी। हर वजु घगनी जिरभद का रोती। ऊर चाची एकान्त में यह की जिहापड करती। पकानी क दो पाटा म विगने बानी बाल थी। दोना घोर स धनपतराय की

प्राप्त । सुबह पल शहर में आकर सारा दिन स्कूल में पढ़ना शाम का खाक छानते हुए गाँव वापस आना और इस पर राज की इस बक-बक का सामना ।

अजायबलाल सप्रैणी के मरीज थे । बीमार पड़े और लमही पाये । छ महीने विस्तर पर पड़े रहने के बाद वह परलोक मिथार गए । घर में आमनी एवं पम की न थी और जो कुछ पूजी थी वह उनकी बीमारी पर खर्च हो गई थी । इस तरह चलते समय वह अपने पंद्रह साल के बेटे जिसके पाँव में जूत न थे और बदन पर फटे कपड़े थे कंधे पर अपनी अवान थोवी और उसका दो बच्चा का भार भी छोड़ गए ।

यों तो अजायबलाल बड़े विधारणीय जीवन-मय पर आँखें खोलकर चलने वाले आदमी थे परन्तु आर्थिकी त्तिना में दूसरी शादी करके ठोकर खा गए । स्वयं तो गिरे ही छाटी उम्र में लड़के की शादी करने उसे भी गिरा दिया ।

खर कबीर कालेज के हेडमास्टर ने फीस मुआफ कर दी । मगर भैंहगाई का जमाना था । उस बेर के जो थे । कुनबे का पेट तो पालना था ही । इसका एक ही तरीका था । प्राइवट ट्यूशन की जाग । बाँम-फाटक पर एक लड़के को पढ़ाना शुरू किया । घर से घाठ बज निकलते स्कूल में पहुँचते और वहाँ से तीन बजे छुट्टी मिलते ही बाँम फाटक जाते । लड़के का पढ़ाकर छ' बजे ट्यूशन खत्म कर लमही वापस लौटते । रात के घाठ बजे घर पहुँचते । खाना खाकर कुप्पी के मामले बैठकर पढ़ने । तिन भर की थकावट हाती । पता नहीं क्या नींद आ जाती ।

इस ज्ञान में मट्रिक की परीक्षा दी । पास तो हो गए परन्तु दूसरे दर्जे में । कबीर कालेज का वापदा था कि केवल पहले दर्जे के गरीब लड़कों की फीस मुआफ की जाती थी इसलिए धनपतराय की फीस मुआफ की का प्रश्न ही न उठता था न कालेज में दाखल का । और धनपतराय को घरमान या एम० ए० पास कर बकील बनने का । पाँव में लोह की नहीं घट्ट घातु की बेड़ियाँ पड़ी हुई थी और ये बदना बान्ता था पहाड़ पर । इससे आगे प्रमथदजी स्वयं लिखत हैं—

मयाग में उसी साल सेंट्रल हिंदू कालेज खुल गया था । मैंने इस नये कालेज में पढ़ने का निश्चय किया । प्रिंसिपल थे मि रिचर्डसन । उनके मकान पर गया वह पूरा हिन्दुस्तानी वेप में थे । कुर्ता और घोनी पहन कर्से पर बड़े कुछ लिख रहते थे । मगर मित्राज की तर्जनी करना इतना सामान्य न था । मेरी प्रायना मुनकर—घाघी ही कहने पाया था धोल कि घर पर मैं कालेज की बातचीत नहीं करता कालेज में आओ । खर कालेज गया । मलाकात तो हुई पर निराशा

जनक। पीस मुझक न हो सकती थी। प्रव क्या करूँ ? भ्रमर प्रतिष्ठित
। मिफारिखों ला सकता तो गायद मेरी प्रायना पर कुछ विचार होता सकिन
देहाती युवक का शहर में जानता ही कौन था ?

राज घर में चलता कि कहीं न सिफारिग लाऊँ पर बारह मीन की मञ्जिन
मारकर शाम को घर लौट आता। किससे कहूँ ? कोई प्रपना पुछतर न था।

कई दिना बाद एक सिफारिग मिली। एक ठाकुर इन्द्रनारायणसिंह
हिन्दू कालत्र की प्रव-घकारिणी समा में था। उनसे जाकर रोया। उह मुझ
पर दया भा गई। सिफारिखी चिट्ठी दी। उस समय मेरे धानन की सीमा

न थी। खग होता हुआ घर आया। दूसरे दिन प्रिसिपल से मिलन का आगदा
था। सकिन घर पहुँचते ही मुझे ज्वर भा गया। और जो सप्ताह स पहल न

मिना। नीम का काढ़ा पीते-पीते नाक में दम भा गया। एक दिन द्वार पर बठा
था कि मरे पुरोहितजी भा गए। मेरी दगा दलकर समाचार पूछा और तन्न

खता में जाकर एक जठ खोला जाए और उसे घोकर सात धान कानी मिच के
साथ विमथानकर मुझे पिला दिया। उसने जादू का प्रसर किया। ज्वर घटन में

पष्ट ही भर की दर थी। इस घोषण ने मानो जाकर उमका गना ही दवा
दिया। मैंने पण्डितजी से बार-बार उस जडो का नाम पूछा पर उन्होंने न

बताया। कहा नाम यथा त्नेन स उसका प्रसर जाना रहेगा।
एक महीन बाद मैं फिर मि० रिचडसन से मिना और मिफारिगी चिट्ठी

लिया। प्रिसिपल ने मेरी तरफ तीव्र नेत्रों से दलकर पूछा इतने दिन कहीं थ ?
बोमार हो गया था।
'क्या बीमारी थी ?

मैं इस प्रश्न के लिए तयार न था। भ्रमर ज्वर बनाता हूँ तो घायल साह्य
मुझे झूटा समझें। ज्वर मरी ममक में हलकी-सी चीख थी त्रिमक त्रिण इतना
सम्बो घरदाजिरी घनावयक थी। कोई ऐसी बीमारी बनाती चाहिए जो
घायली कष्ट-आघ्यता के कारण दया को भी उभार। उन वक्त मुझे और किसी
बीमारी का नाम याद न आया। ठाकुर इन्द्रनारायणसिंह ने जब मैं मिफारिग
के लिए मिला था तो उन्होंने प्रपन दिन की घटवन की वामारी की घर्षा की
थी। वह शहर मुझ पास आ गया।
मैंने कहा 'पनविटेशन घोष हाए मर !
गाएब ने विस्मित हाकर मरी और देगा और कता सब मुझ विनदुन घण्डे

ही।
'जी ही।

मच्छा प्रथम-पत्र भरकर लाओ ।

मैंने समझा बेडा पार हुआ । काम लिया । खानापूरी की धीर पंग कर लिया । साह्य उस समय कोई क्लास ल रह था । तीन घंटे मुझे काम वापस मिला । उस पर लिखा था— इसका याग्यता की जांच की जाए ।

यह नई समस्या उपस्थित हुई । मेरा दिल बठ गया । अंग्रेजी क सिवा धीर किसी विषय म पास हान की मुझे भागा न थी धीर बीजगणित धीर रखा गणित स ता मरी रूह वापती थी । जो कुछ याग था वह भी मूल भाल गया था लेकिन दूसरा उपाय ही क्या था ? भाग्य का भरोसा करने क्लास म गया धीर अपना काम दिखाया । प्रोफसर साह्य बगाली थ । अंग्रेजी पढा रहे थे । 'वार्निंगटन इविंग का रिप वान विक्न' था । मैं पीछे की कतार म जाकर बठ गया धीर दो-ही-चार मिनट म मुझे पाठ हो गया कि प्रोफसर साह्य अपना विषय क जाता हैं । घटा समाप्त होने पर उहान भाज क पाठ पर मुक्त कई प्रश्न किए धीर मेर काम पर सन्तोषजनक लिख दिया ।

दूसरा घटा बीजगणित का था । इसक प्राफसर भी बगाली थ । मैंने अपना काम लिखाया । नई सस्यामा म प्राय वही छात्र भाते हैं जिन्ह कही जगह नहीं मिलती । यहाँ भी यही हान था । क्लासा म अयाग्य छात्र भर हुए थ । पहले रल म जो भाया वह भरती हो गया । भूख म साग-मान सभी रुचिकर हाता गया । भ्रव पेट भर गया था । छात्र चुन-चुनकर लिये जात थ । इन प्रोफसर साह्य न गणित म मेरी परीक्षा ली धीर मैं फेल हा गया । काम पर गणित क खाने म अम-नोपजनक लिख दिया ।

खर मैं निराग होनेर घर तो लीग भाया लकिन पढन की लालसा अभी तक बनी हुई थी । घर बठकर क्या करता ? किसी तरह गणित को सुधार धीर कानिज म भरती हो जाऊँ यही धुन थी । इसके लिए गहर मे रहना जरूरी था । समयो स एक बकील साह्य क लडको को पढ़ाने का काम मिल गया । पाँच रुपये बेतन ठहरा । मैंने दो रुपये म अपनी गुजर करके तीन रुपये घर के खर्च क लिए देने का निश्चय किया । बकील साह्य के घस्तबल के ऊपर एक छोटी-सी बच्ची कोठरी थी । उसम रहने की भागा ले ली । एक टाट का टुकडा बिछा लिया । बाजार से एक छोटा-सा लैम्प लाया धीर गहर म रहने लगा । घर से कुछ वजन भी उठा लाया । एक बकत खिचड़ी पका लता धीर बरतन धो मजकूर साइबेरी चला जाता । गणित तो बहाना था उपयास भादि पढा करता । पढित रतननाथ सरदार का 'किसाना-ए भाजा' उही दिनों पढा । अत्रकान्ता सन्तति भी पढ़ी । बरिम बानू क उर्दू अनुवाग जिनने पुस्तकालय

म मिल सक पढ़ डाल। जिन वकील साहब क लडकी को पढ़ाता था उनके सान भरे साथ मद्रिक्कुलपन म पढते थ। उही की सिफारिश स मुझे यह पद मिता था। उनम दोस्ती थी इसलिए जब जहरत होती, पस उपार स लिया करता था। वेतन मिशन पर हिमाक हो जाता था। कभी दा रुपय हाथ भात कभी तीन। जिस दिन वेतन के दो-तीन रुपये मिलते मेरा सयम हाथ स निकल जाता। प्यासी तप्पणा हलवाई की दूकान की धोर खीच ल जाती। दो तीन घान की मिठाई खाकर ही उठता। उसी दिन घर जाता धोर गो-डाई रुपय दे घाता। दूसर दिन स फिर उपार लेना मुरु कर देता लेकिन कभी कभी उपार मांगने में भी सकीच होता धोर तिन-ना तिन निराहार वत रसना पठ जाता।

इम तरह चार-पांच महीने वीत। इस बीच एक वजाउ स दो-डाई रुपये के कपडे लिये थ। रोज उपर स निकलता था। उसे मुरु पर विरवास हो गया था। जब महीन-गो-महीने निकल गए धोर मैं रुपय न चका सका तो मैंने उपर स निकलना ही छोड लिया। चक्कर देकर निकल जाना। तीन साल के बाद उमक रुपय घदा कर सका। उसी अमाने म सहर का एक बेसगर मुरुस कुछ हिन्दी पढ़न घाया करता था। कवीन साहब क पिछवाडे उसका मनान था। जान सो भया उसका सगुन सकिया था। हम लोग उसे जान सो भया ही कहा करत थ। एक वार मैं उमस भी घाठ घाने पन उपार लिय थ। वह पस उसन मुरुस मेरे गाँव म घर जाकर पाँच साल बाद वमूल किए। मरी प्रव भी पढ़ने की इच्छा थी सकिन दिन दिन निराग होठा जाता था। जी चाहता था कही नौकरी कर सू। पर नौकरी कम मिलती है धोर कहाँ मिलती है यह न जानना था।

जाठों क दिन थे। पास एक कौड़ी न थी। दो तिन एक-एक पस का बचना गाकर काटे थे। मेरे महाजन ने उपार देने स इनकार कर लिया था या सनाचवग मैं उमस माँग न सका था। विराग जस चुक थे। मैं एक बुक ससर की दूकान पर एक किताब बेचन गया। चत्रवर्ती गणित की कुजी थी। दा साल हुए खरीनी थी। प्रय तक उग बढ जतन से रग हुए था पर घात्र धारो धोर स निराग होकर मैंन उम बेचन का निरचय किया। किताब दा रुपय की थी लेकिन एक पर सोना ठीक हुआ। मैं रुपया लेकर दूकान म उतरा ही था कि एक बड़ी-बड़ी मूँछो वाम सोम्य पुरुष ने जो उम दूकान पर बठे हुए थ मुझसे पूछा तुम कहाँ पढत हा ?

मैंने कहा पढ़ना तो कही नहीं ह पर घाता करता हूँ कि कही नाम

सिला रू गा ।

मट्रिभयुलेशन पास हो ?

जी हाँ ।

नौकरी करने भी इच्छा तो नहीं है

नौकरी कही मिसती ही नहीं ।

यह मजदूर एक छोट-से स्कूल में हेडमास्टर था । उन्हें एक सहकारी घघ्या पक की जरूरत थी । झठारह रुपये बतल था । मैंने स्वीकार कर लिया । झठारह रुपये उस समय मेरी निराशा-व्यथित कल्पना की ऊँची-से ऊँची उड़ान से भी ऊपर थे । मैं दूसरे दिन हेडमास्टर साहब से मिलने का वाता नरके घला तो पाँच जमीन पर न पडते थे । यह सन् १९६६ की बात है ।

अध्यापन-कार्य का आरम्भ

धुनार ऐतिहासिक स्थान है। बीसवीं शताब्दी के आरम्भ में यू०पी० की मान एण्ड रिफार्मेंटरी यही थी थी। इस क्षेत्र में ईसाई बनाने का काम भी मूल बोरो पर था। पादरियों ने स्कूल भी चला रखा था।

धनपतराय धुनारगढ़ के इसी मिनन स्कूल में नौकर हुए थे। साथ विजय बहादुर भी थे। लाने-लीन का इन्तजाम विजयबहादुर ही करते। वतन छोड़कर गये थे। पाँच रुपये ट्यूशन से मिल जाते। बमाई का अधिक भाग घर भेजा जाता। बाकी जो बचता वह तुरन्त ही खर्च हो जाता। मेवा भ्रगर एण्ड गय का माता ही चार-छ रोड ही में रहते थे। बाह्य हाउस का बनिया गय का उधार दता। रोटीयाँ भी उधार पर चलती थी। इसलिए वतन मिनने में पढ़ने ही खर्च हो जाता था। हालाँकि धुनारगढ़ बनारस से बहुत दूर नहीं है परन्तु पना का प्रभाव होने के कारण धनपतराय बहुत बार घर न जा पाते। पत्नी के प्रभाव का दुष्प्रभाव उहाने स्वयं गिया है एक बार की बात है कि घर प्राया। चार पाँच दिन घर रहा। जिस रोड मुझे वापस जाना था चाची मे गये मंगे। चाची बोती गय खर्च हो गए। गाँव में बिमने उधार लता ? गाड़ी के बहुत पड़ेले मैं और विजयबहादुर चल गिए। एक सात पट्टन मैने यही मुनिता में एक गरम कोट बनवाया था। मगर जादा में भी सूती पहन के उस बड़े जान से रखा था। अब इसे बाहर में दा गय में बचा। तब मैं धुट्टी मुँ बस में मिनती थी। प्रेमचन्द के आरम्भिक अध्यापन-आयन की धनर गता की छुट्टी कहानी में मिनती है। निगने हैं मुझे एण्ड प्राइमरी मगरन में जगह मिन गई थी जो मरे घर से ग्यारह मील पर था। हमारे देहमास्टर माध्यम छुट्टियों में सबका को ज्ञान का गुरु था। रात का सड़क जाता गाकर मदन में सा जान और देहमास्टर गाँव पारसार्थ पर सट्टर

धुट्टी मुँ बस में मिनती थी। प्रेमचन्द के आरम्भिक अध्यापन-आयन की धनर गता की छुट्टी कहानी में मिनती है। निगने हैं मुझे एण्ड प्राइमरी मगरन में जगह मिन गई थी जो मरे घर से ग्यारह मील पर था। हमारे देहमास्टर माध्यम छुट्टियों में सबका को ज्ञान का गुरु था। रात का सड़क जाता गाकर मदन में सा जान और देहमास्टर गाँव पारसार्थ पर सट्टर

अपन खर्राटा से उन्हें पत्ताया करत । जब लडकों में धीन घप्पा मुक्त हा जाता और शारगुन मचन लगता तब एकत्रम कच्चा नीद में चौक पडते और नडका का भी चार तमाचें लगाकर फिर स्वप्न का मजा सन लगत । ग्यारह बारह बज रात तब यही श्रामा हाता रहता यहाँ तक कि नडक नीद से बकरार होकर वही टाट पर सा जाते ।

अप्रल में भालाना इन्विटान हान वाला था इसलिए जनवरी ही से हाथ तावा मची हुई थी । सहकारी अध्यापका को इतनी गियायत थी कि राठ की कनासा में उन्हें बुलाया जाता था । मगर छुट्टी बिलकुल न मिलती थी । सोमवती प्रभावसे आई और निकन गई । बसन्त घाया और चला गया । गिव रात्रि आई और चली गई । और इतवारो का ता डिफ ही क्या है ! एक दिन के लिए कौन इतना बडा सफर करता ! इसलिए कई महीना से मुझे घर जान का मौका न मिला था । मगर अब के मने पक्का इरादा कर लिया था कि हाली पर जरूर घर जाऊंगा चाहे नौकरी से हाथ ही क्या न धोना पड़े । मैंने एक हफता पहल ही से हेडमास्टर साहब को प्रलटिमटम द दिया कि २० माच को होली की छुट्टी मुझे होगी और बल्ना १६ की गीम को रखसत हो जाएगा । हेडमास्टर साहब ने मुझे समझाया कि घमी लडक हो । तुम्हें क्या मालूम नौकरी कितनी मुश्किल से मिलनी है और कितनी मुश्किल से निभती है नौकरी पाना इतना मुश्किल नहीं जितना इसका निभाना । ८ अप्रल का इन्विटान हाने वाला है । तीन चार दिन मन्तरसा बन्द रहा ता बत्ताया कितने नडक पास हंगे ? साल भर की महनत पर पानी फिर जाएगा कि नहीं । भरा कहना माना । इस छुट्टी में न जाओ इन्विटान के बाद ईस्टर की चार दिन की छुट्टी होगी । मैं एक दिन के लिए भी न रोऊंगा । मैं अपन मोरचे पर डटा रहा । उपनेग डर और जवानतलबी—किसा तक का मुक्त पर असर न हुआ । १६ को ज्यों ही मन्तरसा बन्द हुआ मैंने हेडमास्टर को सलाम भान किया और चुपके से अपने निवासस्थान पर घना आया । उन्हें सलाम करने जाता ता वह एक-न-एक काम निहालकर मुझे रोक दत । रजिस्टर में जीम का जाड निहालते जाया । भीसत हाडिरी लगाने जाओ । लडकों की घम्यास की कापियाँ इकट्ठी करके उनमें सुधार कर दा और तारीख घानि डाल दो । जस घट परत प्राखिरी सफर है और मुझे डिल्ली के सारे काम भी खत्म कर देने चाहिए । मकान पर आकर मैंने भटपट अपनी कितावा का बुकषा उटाया । अपना हज्जा-ना निहाफ कच पर रखा और स्टेन पर चल पडा । गाडा पाँच बजकर पाँच मिनट पर आती थी । मन्तरम की घडी हाडिरी के वक्त हमेगा

घाघा घटा तेज और खानगी व वस्तु घाघा घटा सुस्त रहती थी। चार बज मन्त्रसा बन्द हुआ था। मर खयाल म स्टेशन पर पहुँचन म काफी वस्तु था। फिर भी मुसाफिरा को गाडी की तरफ न प्राय जो डर लगा रहता है और जो घडी हाय म होने पर और गाडी का वजन मही मालूम होन पर भी दूर स किमी गाडी की गडगडाहट या सीटी सुनकर क्रमो को तेज और दिन को डीला बाला कर लिया करता है वह मुझे भी लगा हुआ था। बितावों का बुकचा मारी था। इस पर काय पर निहाऊ। बार बार हाय बलता था और लपका चना जाता था। स्टेशन दो पलंग स नजर मया। सिगनल धावन था। मेरी हिम्मत भी इस सिगनल की तरह कमबोर हा गई। तिल डर नजर स एक सो कदम आगे लीडा मगर यह निरागा की हिम्मत थी। मेरे देखते-खत गाडी आई। एक मिनट ठहरी और खाना हो गई। मन्त्रस की घडी प्रतिनि

घनपतराय ने मिगन स्कूल म नौकरी कर तो ली थी—और कही मिलती ही नहीं थी—परन्तु यहाँ बहुत खग न थ। इसका एक कारण तो यह था कि प्राय ममात्र व अनुयायी प्रमचन्द ईसाई पारिव्यो द्वारा प्रचार को देखकर दुखी हाते थे। उनका विचार था कि ईसाई पारिव्यो का प्रचार हिंदू समाज व लिए घातक होगा।

बहुत तिन नहीं गुजरन पाए थ कि घनपतराय न गवनमेंट डिस्ट्रिक्ट स्कूल बहरादख म नौकरी का प्रवच कर लिया और २ जुलाई १९०० को उस स्कूल म पाँचवें अध्यापक भर्ती हुए। दा-बाई महीन वा ही घनपतराय का तवासा प्रनापग को हुआ। गवनमेंट स्कूल प्रनापगड म उनका काम मन्तोपजनक ही रहा हागा क्याकि जुलाई १९०२ म उन्हें अध्यापका की टुनिग व एक बोग व निग इलाहाबाद भेजा गया। सार प्रान्त म कबल यही एक ऐसी मस्था थी जो अध्यापका को टुनिग देती थी। यही मे घनपतराय न दूनिपर सटिफिकेट (टिप्पोमा) पर निगा था कि गणित पठान की यागपना नहा राते घानचन मन्तोपजनक है और समय व पात्र है। घनपतराय न घपना काम शुरू महन स और घचदी तरह किया।

घनपतराय व काम म उनक प्रिगिण श्री ज० सी० बम्प्टर विशपनया

१ प्रेमका को एक कहना मुझे गारर में होने इतरा भयक निजनी है। कृपासा मारन मे मनग में भी निजनी है।

प्रसन थ । ट्रनिंग खत्म करन अवर धनपतराय प्रतापगण पहुँचे नव जल्नी ही प्रिमिपल साहव न उट मॉडल स्कूल का हडमास्टर नियुक्त करन व निए इलाहाबाद बुला लिया । इस पद पर नियुक्ति स उन्हें दम रपय माहवार का विशय एलाउस भी मिलना शुरू हुआ । यही स तीन महान बाद धनपतराय का तवाला कानपुर गवनमट स्कूल का हुआ । कानपुर क जीवन का जिक्र करने मे पहले हम धनपतराय क कालज क जीवन क बारे म कुछ कहना आवश्यक जान पड़ता है ।

धनपतराय क एक सहपाठी लाल कृष्ण ने उनक बारे म एक सस्मरणात्मक लेख लिखा है । इस लेख स धनपतराय क इलाहाबाद क जीवन पर काफी प्रकाश पड़ता है । वह लिखत हैं— उस जमाने म मै ट्रनिंग कालज क सीनियर क्लास म पड़ता था । हम सब लोग अर्थात् अध्यापक मॉडल स्कूल कालेज होस्टल म रहते थे । इसको आध्यात्मिक धानर्पण समझना चाहिए कि मेरा मुदी (धनपतराय) साहव स छासतौर पर परिचय हुआ और बहुत जल्द दास्ताना तमाल्लुकात हो गए । (धनपतराय) बहुत गरतमन्द व जहीन थे । आरम्भ ही स कित्तबे पत्न का शौक था । एक रोज मरे साथ मिस्टर सचिवालय सिहा अनिररी सेकटरी कायस्थ पाठाला स जिन्हे मैं पहले स जानता था गेट की ताकि कभी कभी उनक पुस्तकालय स साम उठान रहे । एक बार नही स मौलवा जकाउल्ला साहब देहलवी का लिखा भारतीय इतिहास ले आए और थोड़े ही दिनों म इसकी तीन या चार मोटी मोटी जिल्ों को खत्म कर जाला और इस ध्यान स पढ़ा जैसे इस पर कोई समालोचना लिखनी हो । बाबू धनपतराय छोट क क दुबल-पतल आदमी थ मगर थ मजबूत । पजा खानने पर उगलिया को माडना साधारण आत्मी के लिए आसान न था । उनका पहनावा सादा था । अचकन-पायजामा या खुल गने का तम्बा काट पहनत थे । सम्भव है कि कभी पतलून भी पहनते हं परन्तु याद नही पडना । उस जमाने म विष्णी क्रान का भूत लोगो के सिर पर इतना श्याम सवार न था । सिर पर हिन्दुस्तानी टोपी या पगडी हुआ करती थी । जिस तरह उनका सहन रहन सीधा सादा था उमी तरह उनकी आदतें और चरित्र भी सीधा सच्चा और धनावटीपन स खाली था । आधाज अँची थी । ख्यामस्वाह किसी से दबन वाल न थ । हास्टल म लडन ऋगडने का तो जिक्र ही क्या आपका कभी किसी स सहन या सज्जनता क पर बाठधीत करत हुए भी नही देखा गया । नौकरो क साथ भी अचड़ी तरह खर्चा करत थे । इसस स्पष्ट है कि वह कितन हसमुख समझीता करने वाल तथा हमन्द परन्तु स्वाभिमानी पुरुष थ ।

पढ़ने के समय धपना कमरा बन्द कर लिया करते थे और प्रवक्ता के समय दिल खोलकर सफरीट करते। धपको और (मत) बाबू गिरजाकिशोर माहव प्रमिस्टेण्ट कमि नर सिचाई के द्वारा हमारा एक छोटा-सा लाफिंग क्लब बन गया था। इसकी रोजाना मीटिंग मेरे ही कमरे में हुआ करती थी। इसमें एक-दो और साहब भी थे। बहरहाल इनमें सभी हसने बाल थे। मगर धनपतराय गजब करते थे। जब हसते तो खूब हसते और कहकहा-भर-कहकहा लगाते चल जाते। इसी वजह से हम लोग खासकर मैं और गिरजाकिशोर उनका बम्यूक कहा करते थे। सम्भव है यह नाम मेरा ही लिया हुआ हो। प्रायः इसी नाम से खतो-किताबत हुआ करती थी।

यहाँ एक और बात का उल्लेख करना आवश्यक है। धनपतराय ने इनाहाबाद यूनिवर्सिटी से इसी सामे उर्दू तथा हिन्दी में स्पेशल बर्नाकुलर इम्तिहान भी पास किया। इसका फायदा यह हुआ कि १९०४ तक उन्होंने अच्छी हिन्दी भी लिखनी शुरू कर दी थी। जिन लोगों ने यह कहा है कि प्रमचन्द उर्दू के धप और उर्दू से हिन्दी में आए उनका बलव्य सौ प्रतिगत ठीक नहीं है। धनपतराय का गुरु से हिन्दी में आए उनका बलव्य सौ प्रतिगत ठीक नहीं है। कि वह धप समाज से बड़े प्रभावित थे। उस युग में धप समाज ने देना म एव नई धनना ला दी थी। स्वराज्य की धोर लोका को प्रेरणा देने में तो इस सस्था का बड़ा हाथ था ही। इस सस्था ने रुठिवा से टकर ली स्त्रिया को पदों से मुक्त किया उनकी शिक्षा का प्रचार किया और हिन्दी को राष्ट्र भाषा बनाने का रास्ता पिलनाया। धनपतराय (प्रमचन्द) की प्रारम्भिक किताबों में भी हिन्दी का राष्ट्रभाषा बनाने के सम्बन्ध में जगह जगह हवाले मिलते हैं।

परन्तु हिन्दी से प्रेम हाथ हुए भी प्रमचन्द को हिन्दी में निगम का विचार प्रबल नहीं मिला था। सरकारी भाषा उन लिंगा उर्दू थी। कायस्थ परिवारों में जहाँ उनका बड़ा मित्र भी था उर्दू ही का प्रचार था। उत्तर प्रदेश के जिन राजा या देहाता में जहाँ वे पढ़ाने थे वहाँ भी उर्दू ही चलती थी। उन क्षत्रियों में जो मासिक पत्रिकाएँ लोकप्रिय थीं वे भी उर्दू में ही थीं।

साहित्यिक क्षेत्र में प्रवेश

घनपतराय ने कब और कहाँ लिखना प्रारम्भ किया इसके बारे में निश्चित रूप से कुछ कहना बहुत कठिन है। इन सम्बन्ध में यह भी बतलाना आवश्यक है कि स्वयं प्रेमचन्द ने भिन्न भिन्न स्थानों पर भिन्न तिथियाँ दी हैं। इसका भलावा उनके प्रकाशन के बारे में भी उनके कथना में बड़ी गलतियाँ हैं।

एक पत्र^१ में प्रेमचन्द ने लिखा था लिटरेरी डिप्लोमा १९०१ में शुरू हो। रिमाला जमाना में लिखता रहा। कई साल तक मुत्तफरिफ मजामीन लिख। १९४ में एक हिन्दी नाटक प्रमा लिखकर इण्डियन प्रेस में छाया कराया। एक दूसरे पत्र में लिखा हमलुर्मा घो-हम-मबाव जिसका हिन्दी अनुवाद प्रमा के नाम से छपा था किन्ना गालिवन १९० की तसानीफ है। फरवरी १९२ में हम में प्रेमचन्द ने लिखा— उपन्यास तो मन १९१ ही में लिखना शुरू किया। मेरा एक उपन्यास १९०२ में निकला और दूसरा १९४ में।

ऊपर लिखी पक्तियों से ऐसा सगता है कि प्रेमचन्द ने विषय लिखन का काम १९१ या १९०१ में प्रारम्भ किया और उसी समय उपन्यास भी लिखन प्रारम्भ किए। यह ठीक नहीं है।

जमाना का पहला परचा शिघ्रनलाय बमन ने केसरी प्रेस बरेली से १९३ में निकाला। बमन साहब एक खानगी हादिमा से इस कदर मुतप्रसिद्ध हुए कि तीन महीने के लिए जमाना की इमारत दयानारायण निगम के सुपुर्न कर गम गलत करने के लिए सर और सफर में मगगूल हो गए और फिर अपनी छिन्मत पर वापस न हुए। इसने कुछ बात ही दयानारायण निगम ने परचे को जानपुर से निकालना शुरू किया क्योंकि जमाना १९३ के आखिरी महीने में निकला, इसलिए प्रेमचन्द की सबसे पहली रचनाधा का

१ दयानारायण निगम को लिखा गया एक पत्र जिसे प्रेमचन्द ने १७-७-२९ को लिखा।

२ इन्दियाय अली ताज को लिखा जनवरी १९२१ का पत्र।

इसमें प्रकाशित होना का प्रदन ही नहीं उठता। उस समय के दूसरे परचे भव उपलब्ध नहीं है। इसलिए उनका मुतपरिक मजामीन का पता नहीं चलता। ये धार्मिकान के केवल ११ लखा तथा एक नावल का पता लग सका है। ये बनारस के साप्ताहिक भावाञ्ज सल्ल म छपे थे। लेख का विषय था श्रीलिवर नामवेल। धनपतराय का पहला नावल भक्तवर १६०३ स लेकर फरवरी १६०५ तक बराबर किस्ता म छपता रहा। इसका गीपक था असरारे माविद (पुजारी) का रहस्य और सख्त का नाम था धनपतराय उफ नवावराय भलाहावादी भलाहावादी धर्म का प्रयोग महत्त्वपूर्ण है। य रचनाए सायद सेण्टस ट्रनिग कालज इलाहाबाद स ही प्रकाशनाय भजी गई हागी। असरारे माविद' क धारे म कुछ कहने स पहन हम यह बतलाना भावयव समझत है कि रतननाथ सरगार की मृत्यु १६०२ म हुई थी। सम्भव है प्रमचद का यह विचार भी धाया हा कि सरगार के यात्र उनकी जगह खाली है और वह स्वयं उसकी पूति कर सकते हैं। यह असरार माविद जो प्रमचद का पहला प्रकाशित उपयास है सरगार क नावलो क तरीक पर ही लिखा गया है। इसकी विवेकता यह है कि इसम कागी के पण्डो पर व्यग्य है। उपयास क धारम्म म ही एक कथा बीबीजान पण्डा यगोशानन्द क कमरे म गडलें गाती है। एक मित्र तिलाकी भी घटे हैं। वह भी बीबीजान पर मोहित है। परन्तु बीबीजान यगोदानन्द की ओर आकर्षित है। उनसे कुछ इनाम की मागा करती है। पण्डा यगोशानन्द भी बीबीजान स प्यार का प्रणान करत है। वह बीबीजान प्रार्थने हैं— क्या बोमा लने की इजाजत है? बीबीजान तमाचा रसीद देती है और यगोदानन्द क घर स भाग निखलती है। पण्डा यगोशानन्द इस क्षत्र म महारथी है। इसका प्रमाण है प्रथमी रामकली स सम्बन्ध। रामकली बनारस म अपन पिता क घर पर रहती है। पति क यहाँ नहीं जानी। यगोशानन्द स उसकी आगाई है। वह उनका पाम धारक (मन्दिर क एक भाग म) इयन करती है। धाराय पीकर घर पहुँचती है और जब वह दगनी है कि उसका पति उस तिवा स जान क नित्र धाया है तो कन् बीमारी क बहान स अपन नम को ढकती है। बचारा पति उनका विम्वर क पान बटा रखा है। धाराय की बन्धू स उन क आ जाती है। परन्तु पन धार्मी को कुछ समझ म नहीं आता। अगल दिन रामकली जो पति क आ नहीं जाना चाहती धार मघानी है कि उनका गहने का बखसा भारी हा या है। पर म पीक है और इसी बखाने म वह पति क घर नहीं जाती। धार का बखम यगोशानन्द के पास पहुँचता है जो धरनी कटिनाइया का मीपद

चित्र रामकली को बताने हैं।

बीबीजान घर पहुँचनी है ना दगती है कि उसके गुमान भूय है। वह बतलाता है कि त्रिलोकीनाथ न काम बिगाड़ दिया करना वह कुछ-न-कुछ लेकर आती। परन्तु वहाँ ता भकीमची भूख भाँडा तथा गमास्ता की भूख तज हाती जा रही है। बीबीजान के गल का नकला हार लेकर (रतननाथ मरगाव क गोजी की तरह) घबन्न इत्यादि डालकर बाजार म बचन जात है। त्रिलोकीनाथ की मदद स व नकली हार का एक घमीरजादे को घसनी हार क भाव बघत है। बाहक हम तसाग म है कि किसी पुराने घराने की माला मिल। त्रिलोकीनाथ चुपक स अपनी सहायता क बदल म मुनाफ का भाषा हिस्सा माँगता है।

उपन्यास सरगार क उपन्यासों की तरह बोला-बाला है। जोर घातलाप पर आधारित है। करबटर भी सरगाव क लोजी और राधी के बीच म डल हैं। घसनीमता के सकत भी हैं। रामकली क बचन करबटर की कलक हम घनपतराय क घगल उपन्यास म मिलती है।

बीमर्षी पाताली के आरम्भ म दा महत्वपूर्ण उद्ग मासिक पत्र निकल थे— 'मखजन' और उमाना। मखजन क सम्पादन थे शत्रु घम्भुत कान्ति और उमाना क मुशी दयानारायण नियम। मखजन का दावा था कि इसन पजाबी मननमाना का उद्ग लिखन का बम सिखलाया। यह तो माफ है कि इसम लिखत प्राय मुसलमान ही थे और उनमे भी भविक्तर पजाबी मुसलमान। परन्तु उमाना' का सत्र विन्मृत था। इसम भारतवप क विभिन्न प्रान्ता के लखक लिखते थे— हिन्दू और मुसलमान दोनों ही। उमाना क सम्पादन न पत्र का स्तर प्रमण ऊचा किया और कुछ मुसलमान लखक जो पन्डू-धीम साल मे लिखना छाड बठे थे वे भी इसम लिखन लये। उमाना का महत्व एक और दृष्टि स भी था। यह भी साहित्यिक आलोचना और सामयिक घटनाओं पर टिप्पणी। साहित्यिक आलोचना की ता इसने नीब ही ढाली। प्रमचन्द का भी इस काय म घटा हाय था।

उमाना म घनपतराय की जो पहली रचना छपी वह हुकीम बरहम क नावल कृष्ण कंबर की आनाघना थी। यह फरवरी १९१५ क उमाना म छपी (उस समय घनपतराय इलाहाबाद म ट्रेनिंग लकर प्रतापगढ लौट चुक था। इना सेव क सम्बन्ध म लिख गए एक पत्र म निगम का लिखा मैं बड़े इन्तियाक म मुन्तजिर हू कि आपने मरा नावल अभी तक पढ़ा या नहीं। जवाब म सरफ राड करमाइय। यह पत्र ३ जनवरी १९०५ का लिखा हुआ है।

जिस उपयास की प्रारम्भिकता है वह 'गाम' हम सर्मा या हम सबाव 'हा' ।
 मन् उपलब्ध प्रथम संस्करण पर काइ तारीख नहीं है । प्रस का नाम भा
 नहीं छपा है । पुस्तक का पहला विभाजन दिसम्बर १९०६ क जमाना म
 मिनता है । इसम लिखा है— नाजरीन जमाना म जिन हजरत न नावन कृष्ण
 कवर पर मिस्टर नवाबराय की पुरखोर तनकी गौर से पबी है व जानत है
 कि मिस्टर मौसूफ जमूले नावलनिगारी से किस हद तक वाकिफ है । इस
 हालत म उनक कलम स निबला हुआ नावल जिन खूबिया का मजमुमा होगा
 इनकी ठगरीह की चन्दा खरत नहीं । बहरकज यह नावल हम खुर्मा भो हम
 सबाव' मिस्टर मौसूफ की ताजा धोर भछूती तसनीफ है जो हाल ही म साया
 हुई है । क्रिस्त की दिनकम्पी के साथ मुसनिफ की जाइनिगारिया बहुत बडी
 तारीफ की मुस्तहिक हैं । इस पाया के नावल उदू म बहुत कम साया हुए है ।
 हम चाहत हैं कि घाम सायकीन एक-एक जिल्द मगाकर मुक्त उठाए धोर
 मुमलिफ की दिमागसोजी तवाई धोर बसीह मात्तमात की दाद दें । की जिल्द
 बारह घान कीमत पर मनजर जमाना बानपुर से फौरन तत्व बरन पर मिन
 मकता है ।

'हम सर्मा या हम सबाव उदू म छपन क कुछ ही समय वा हिन्दी म
 भो छपा । इसका प्रथम संस्करण इण्डियन प्रस इनाहाबा' से १९०७ म
 छपा । मूख्य दस घान या । इस संस्करण पर पुस्तक का नाम इस प्रकार है

प्रमा
 भयादि

दा सनियो का विवाद

सलक का नाम है बाबू नवाबराय बनारसी
 इस पुस्तक म एक विपत्ति भी छपी है जिसम लिखा है—
 विनि हो नि यह प्रमा उपयास इण्डियन प्रस प्रयाग का प्रार म छपाकर
 प्रकाशित किया गया है । इसलिये इस कोई छपान का मान्य न कर क्याकि
 मैन इसका सर्वाधिकार (कापीराइट) इण्डियन प्रस का गौर किया है—नवाब
 राय प्रयाग का ।

प्रमा यास्तव म हमसर्मा या हमसबाव का हिन्दी अनुबाव है । दाता म

१ १९१२ का एक पत्र में बनारस में इन विवाद की प्रतीति का कि पर
 नवाब नवाब प्रेम लाल म दया था । निम्न माहव ने लिखा है कि इस बाबू मन्
 प्रमाद का ने द्वारा था । उन पत्र का दुसरा मन्त्र नवन कठोर प्रम में दया । मन्त्र
 इस पर भा नहीं है ।

धिन रामकली को बतान है ।

बाबीजान घर पहुँचती है तो दखती है कि उसका गुमास्त भूने हैं । वह बतलाता है कि त्रिलोकीनाथ ने काम बिगाड दिया धरना वह कुछ-न कुछ लेकर आती । परन्तु वहाँ तो अफीमची भूखे भाँडा तथा गुमास्ता की भूख तब हागी जा रही है । बाबीजान क गले का नकली हार उकर (रतननाथ सरगार क योजी की तरह) अचकन इत्यादि/हालकर बाजार म बचन जात हैं । त्रिलोकीनाथ की मदद से वे नकली हार को एक अमीरजादे को असली हार क भाव बेचत है । ग्राहक इस तनाग म है कि किसी पुराने धराने की माला मिल । त्रिलोकीनाथ छुपके स अपनी सहायता के बदने म मुताफ का आधा हिस्सा माँगता है ।

उपन्यास सरशार के उपन्यासा की तरह डीसा-ढाटा है । जोर वार्तानाप पर आधारित है । करकटर भी सरगार क खाजी और रावी के साथे म ठसे हैं । अश्लीलता के सक्त भी हैं । रामकली क अचल करकटर की कलक हमें धनपतराय क अगल उपन्यास म मिलती है ।

बीसवीं शताब्दी के आरम्भ मे दो महत्वपूर्ण उद्ग मासिक पत्र निकलन थ- 'मखजन' और 'जमाना' । मखजन क सम्पादक थे क्षत्र अन्दुन कादिर और 'जमाना' क मुखी न्यायानारायण नियम । मखजन का दावा था कि इसन पजाबी मुसलमानो को उर्दू लिखन का ढँग सिखलाया । यह तो माक है कि इसम लिखत प्राय मुसलमान ही थे और उनमे भी अधिकतर पजाबी मुसलमान । परन्तु जमाना का क्षेत्र विस्तृत था । इसमे भारतवर्ष के विभिन्न प्रान्ता क लेखक लिखते थे— हिन्दू और मुसलमान दोनो ही । जमाना के सम्पादक न पत्र का स्तर जमाग ऊँचा किया और कुछ मुसलमान लेखक जा पन्द्रह-बीस साल स लिखना छोड बैठे थ वे भी इसम लिखन लगे । जमाना का महत्व एक और दृष्टि स भी था । यह थी साहित्यिक आलोचना और सामयिक घटनाओं पर टिप्पणी । साहित्यिक आलोचना की ता इमन नीव ही डाली । प्रमचन्द का भी इस काम म बडा हाथ था ।

जमाना म धनपतराय की जो पहली रचना छपी वह हकीम बरहम क नावल कृपण कँवर की आलोचना थी । यह फरवरी १९०५ के जमाना म छपी (उस समय धनपतराय इसाहावाग स टूनिंग लकर प्रतापगढ़ लौट चुक थे । इसी लेख क सम्बन्ध म लिख गए एक पत्र म निगम को लिखा मैं बडे इतियास स मुन्तजिर हू कि आपन मरा नावल अभी तक पका या नही । जवाब म सरफराज फरमाइय । यह पत्र ३० जनवरी १९०५ का लिखा हुआ है ।

जिस उप-याग की ओर संकेत है वह 'गाय' हम सर्मा आ हम सबाव ' हो ।
 इसमें उपल-घ प्रथम संस्करण पर कोई ताराख नहीं है । प्रस का नाम भा
 नहीं छपा है । पुस्तक का पहला विनापन दिसम्बर १९०६ व जमाना म
 मिलता है । इसमें लिखा है— नाजरीन जमाना म जिन हजरात न नावल कृष्ण
 कुंवर पर मिस्टर नवाबराय की पुरज्जार तनक्री गौर स पडी है व जानत है
 कि मिस्टर मौसूफ जसूले नावलनिगारी से किस हद तक वाकिफ है । इस
 हालत में उनके जमान स निवसा हुआ नावल किन गूवियों का मजमुमा हागा
 इसकी तारीह की चर्चा जरूरत नहीं । बहरकफ यह नावल 'हम सर्मा ओ हम
 सबाव' मिस्टर मौसूफ की साजा श्रीर झझूनी तसनीफ है जो हाल ही में साया
 हुई है । क्रिस्स की नितचम्पी न साय मुसनिफ की जादूनिगारियाँ बहुत बडी
 तारीफ की मुस्तहिक हैं । इस पाया न नावल उदू में बहुत कम गाया हुए है ।
 हम चाहते हैं कि धाम सायजीन एक-एक जिल्ह मगावर मुक्त उठाएँ और
 मुमन्निक की निमागसाजी तवाई और बसीह मासूमात की मद दें । की जिल्ह
 वारह धान कीमत पर मनजर जमाना बानपुर स फौरन तत्व करन पर मिल
 सकता है ।

हम सर्मा आ हम सबाव उदू में छपन व कुछ ही समय बाद हिन्दी में
 भी छपा । इसका प्रथम संस्करण इण्डियन प्रस इलाहाबाद से १९०७ में
 छपा । मूल्य दस धान था । इस संस्करण पर पुस्तक का नाम इस प्रकार है

प्रमा

धर्मादि

दो सन्धियों का विकास

ससक का नाम है बाबू नवाबराय बनारसी
 इस पुस्तक में एक बिज्ञप्ति भी छपी है जिसमें लिखा है—
 विन्नि हा कि यह प्रमा उप-याग इण्डियन प्रस प्रयाग की धार में छपाकर
 प्रकाशित किया गया है । इसलिए इसे कोई छपान का साहम न कर क्योंकि
 मैं इसका सर्वाधिकार (वापीरा) इण्डियन प्रस को गौप दिया है—नवाब
 राय प्र यकर्ता ।

प्रमा यातव में हमसर्मा आ हमसबाव का हिन्दी अनुबाव है । दाना में

१ १९११ की एक पत्र में भवनराय न इन्निवाच कर्मा मात्र की जिता था कि यह
 नवन नवन प्रेम मगलक में छपा था । निगत महेश ने जिता है कि इस अनु-
 प्रमाद बना ने धारा था । उन पत्र का दूरगा में मगल नवन कठोर प्रस में छपा । मगल
 इस पत्र भी नहीं है ।

घातर नहीं के बराबर है। हाँ प्रभा का घन्त एक मुलसीदास के दोहे से होता है जहि क जहि पर सत्य सनेहू सा तेहि मित्रत न कछु भदेहू।

जब हम खुर्मा ओ हम सवाब तथा इसका अनुवाद प्रभा प्रकाशित हुए तब घनपतराय कानपुर में मास्टर थे। उनके दयानारायण निगम को लिखे पत्रा तथा प्रेमा ने इण्डियन प्रेस इलाहाबाद से प्रकाशित होने से ऐसा लगता है कि दोनों पुस्तका के लेखन तथा प्रकाशन का प्रबंध गांधी तभी हुआ हो जब घनपतराय इलाहाबाद में पढ़ते थे या हठमास्टर (फर्ट टीचर) थे अर्थात् यह काय १४५-१९०५ तक हो चुका था जब घनपतराय की नियुक्ति कानपुर के डिस्ट्रिक्ट स्कूल में हुई।

घनपतराय (प्रेमचन्द) के उन दिनों का जीवन की झलक कानपुर से प्रकाशित होने वाला एक पत्र में मिलती है। यह शायद अप्रैल-मई १९०६ की गरमी की छुट्टियाँ का डिक्र है जब घनपतराय अपने घर लम्ही में गये। उन्होंने निगम को लिखा था गरमी की कुछ कफियत न पूछिय। कलान को तो माहवे मकान हू और खदा के फजल से मकान भी सारे गाँव का महसूद है। मगर रहन काबिल एक कमरा भी नहीं। काठे पर भाग बरमती है। बठा आर पसीना चोटो से एही को घला। नीच का कमरा सब गंगा (परेशान)। किसी में बल बघता है किसी में उपले जमा हैं कही अनाज का बैर है किसी में जाँत बनकी ओखली मूसली घगरा जुलूस फर्मा हैं। कोई बठ कहीं। सोये कहीं! मजदूरन अनाज के घर में एक चारपाई की जगह तिकास ना है। उस पर दिन रात पढा रहता हूँ। अन्न धूमने कहाँ जाऊँ? इस गरमी में कैसा पडना कैसा निम्नना! सुबह के बक्ल घटा प्राधा घटा बरक गर्नी कर लेता हूँ। रात्री रात दिन मैं हूँ और चारपाई। मुलकक बडा हूँ मगर नीच भी कुछ मेरे घर की लौबी नहीं। उस पर तरह द अलग। कहीं हसी-मशाक में गिन कटता था कहीं चुपकी मिठाई या गुँगे का गुठ साकर धठना पडता है। अजब खीक में जान मुन्सिला है। भाई अल्पी में छुट्टी कटे और फिर यारो के जलसे और सहसह कहकहे हा। कोई धीम गिन से ज्यादा गुजरे मगर फ्रमम त लो जो जवान सप्यारा नफस बबूक एक चार भी तिकाना हो।

हम पत्र की साहित्यिक छटा अंकित करने योग्य है।

जमाना से घनपतराय का सम्बन्ध दिन से दिन घनिष्ठ होता जा रहा था। १ अगस्त १९५ में मलिका विक्टोरिया पर एक मेजब छपा अक्टूबर १९०५ में राजा मानसिंह पर और नवम्बर दिसम्बर १९५ में आनन्दल गणपालकृष्ण गोखले पर। शुरू में उन्हें निबन्ध लिखने का विशेष मौक न था परन्तु

दयानारायण निगम से मित्रता हानि के कारण उन्हें कलमबिसाई भी करनी पड़ी। जमाना की जड़ कुछ मजबूत हो चुकी थी। निगम तथा 'जमाना' के दूसरे लेखका से मित्रता हुई और एक प्रकार से एक जमाना चलने लग गया। नौबतराय नन्दर प्यारलाल धारिकर मेरठी इत्यादि इस ग्रुप में थे। कभी कभी मामा विजयबहादुर भी साथ होते। प्रतिदिन शाम को बैठक होती और दुनिया भर की घाता पर बातचीत होती। हसी के कहकह सुनाई देते। एक बार पणोस में किसी की छत पर बट शपथ का 'लाफिंग साय', का रिकार्ड बज रहा था। कुछ दूर तो धनपतराय घुपने बैठे रह कर कहने लग लीजिए मैं भी इसका कहकह में इसका साथ देता हूँ। और उमक साय-साय हँसने लगे।

उही जिनो धनपतराय ने एक लेख लिखा था, जिसका शीर्षक है 'दशो भगिन्या का बयोकर फरोस हा सनता है?' निगम लिखते हैं, बाबू ग्रहम तनडों भी जमाना के लिए लिखी जो कभी उनके नाम से और कभी विला नाम धारण हुई। इनके अलावा 'नवाबराय सामयिक विषयों पर भी बहुत कुछ लिखते थे। उनका छानना मुश्किल है। १९०५ तथा १९०६ के अर्थों में छोटी सामयिक घटनाया (रफ्तार जमाना) के विषय इस प्रकार थे 'नया सान' कौमी जनस, ब्रिटेन में नई सरकार' स्वतंत्री बस्ट मिस्टर में वार्फेंस तबसीमे बगाल के राकने की उम्मीमें उत्तम, रूस का हालत निगरगू 'फारस में सल्फ गवनमट की मांग' हिन्दुस्तान में हस्ताल 'मिस में इगलिस्तान के मिसाक जहाजह' 'हिन्दुस्तान पर पार्लियामण्ट में बहस' तबसीमे बगाल के प्रिमाक कलकत्ता में जनसा इत्यादि। सामयिक विषयों पर विषयतया अन्तर राष्ट्रीय विषयों पर लिखने का नवाबराय को बहुत शौक था।

'जमाना तथा उसका सम्पादन दयानारायण निगम से उनका कितनी घनिष्ठ मित्रता का सम्बन्ध होगा, इसका मकत हमें उनका १९०६ के लिखे एक पत्र में मिलता है। इसमें लिखा— समय आपने खाना किया। पहुँच। खत में कहने को मुमकत हासिल हुई। तीन बार से कम न पढ़ा होगा। किताबें और पत्रकार पहुँच। उन् से मुमकत हरेक भाषूल मुस्त है। 'जमाना को छपाई घर की दो-एक मजदूर भी न थी। मायनरु और बानपुर की किताबत में साफ पत्र नन्दर आता है। छपाई की मफाई लिखाई के एक को नहीं मिटा सकी। मगर वरत से पर्वी निकल तो ये सब बागुजातें काबिल मुफाकी हैं। अगर देर ही में निकलना है तो अपनी गबियों में क्यों बट्टा लगायें? जून का परषा निकलत ही हम जिसे मय बार-बार अग्रत की बापी के खाना कीजिये। उसका पहुँचने ही हमानिद खाना हाय। फररिस्त धारक पाग पहुँची होगी। मायद

दत्तमीनान क काबिल भी हों। जी तो चाहती था कि पचास खरीदारा क नाम एकवारली लिखता मगर फिलहाल सोलह ही पर बनाएत की। उनक नाम परख भेज दीजिए मकर गाजीपुर भाजमगढ बलिया गोरखपुर और बनारस का करुणा। बनारस ही म पन्द्रह-बीस गरीदार हो जाएंगे। जरा तवीयत ठिकान हो जाए तो काम शुरू नई।

इसी पत्र म भाग लिखते हैं— मधबीच म छाहने वाले और होंगे। यहाँ ता जब एक वार बाह पकड़ी तो जिन्दगी पार लगा दी। नीचतराम न भायें क्या जहाँ मुर्गा न होगा वहाँ मुग्हन होंगे? एडीटोरियल म सब कर लूगा। खतो किताबत जो मुमामना की है वह म कर लूगा। खास एडीटर की तकजोह के काबिल जो खतूत होंगे वह खिदमते गरीफ म पेग होंगे। और काम करने का बन्दोबस्त होना जरूरी है। सबल छपा लेंगे। जाने का बक्त आएगा तो मगधरा हो रहेगा। जान नादे म न छालो। हिम्मत मरना मदद खुदा। हिम्मत एडीटरान मददे दोस्तान। हाँ यह ऐलान करना जरूरी होगा कि नवाबराय स्टाफ म दाखिल हो गए बस।

उमाना के जून १९०६ क मक म एक विनक्ति मिलती है जिसके धनु सार उमाना क एडिटोरियल स्टाफ म मत्तावा काबिल दीगर हजरात के उमाना क मकबून मञ्जूरा निगार नवाबराय भी मुस्तकिल तीर पर गामिल हो गए हैं।

उद पत्रकारिता म प्रमचन्द्र की सीध ही इतनी घाव बठ गई कि इण्डियन प्रस इलाहाबाद के मालिक श्री चिंतामणि घोष (जो सरस्वती भी निकालते थे) न एक उद्ग मासिक पत्रिका प्रारम्भ करने के लिए नवाबराय का ही खुना। नवाबराय से बातचीत हुई। वह तैयार थे। वेतन का फसला हुआ। पत्रिका का नाम फिर्गौस तय पाया। परन्तु जब नवाबराय न अपने मित्रों से सलाह की तो सबने राय दी कि सरकारी खन मास्टरी स इस्तीफा देना मुनासिब नहीं। एक साल की छुट्टी लकर देखो। यदि पर्चा चल निकले तो ठीक करना बायस भाकर अपने दर पर बठो। नवाबराय को मान जधी।

सर पहले धन के लिए प्रमचन्द्र ने तैयारी शुरू की। खेला के लिए पत्र लिखे। निश्चिन कार्यक्रम के धनुमान मामिक क पट्टम मक का प्रकाशन १५ जनवरी १९०८ को तय पाया था। नीच हम प्रमचन्द्र के उस पत्र का उद्धरण देते हैं जा १७ नवम्बर १९०७ को दुर्गमहाय सरर जहानाबाद पीलीभीत को लिखा। हस्ताक्षर धनपतराय मास्टर गवनमेंट स्कूल जानपुर क नीच नवाबराय लिखकर काट दिया गया है। पत्र क प्रारम्भ म लिखा है— मुझे तो

घाप सायन भूस गए। घब या नहानी करता हूँ। उनके वा लिखा है माह जनवरी १९०८ से इलाहाबाद के इण्डियन प्रम ने एक भाला दर्जा का उरसाला शायद करन की नीमत की है और उसका एडिटरी की विदमत में घाप माला की छानत के भरोस पर घपन ऊपर ली है। पहला नम्बर १५ जनवरी का निकल जाएगा। रमाला बातस्वीर हागा। तसावीर और उमदा लिखा छदाई और कागज का मुसूसियत से निहाज रखा जाएगा। घाप जानन हूँ इण्डियन प्रम कसा मानतार है। वह जिस कूट चाह सरफ क मकना है। मैं चाहता हूँ कि पहल नम्बर म नखम खाम तीर पर जोरदार हा घोर एमी नखमा के लिए घापक सिवा और कितस इल्लजा क? मुसाघिजा जा कुछ मुतासिब होगा या जो कुछ घाप फरमाएंगे मकीदत से हाजिर विदमत होगा। और रसाला के मुकाबल में घाप इस उयात पाएंगे। यह छलतमास करन की जरूरत नहीं कि पहली घन घाप हा की हागी। हाँ यह रसाला पॉलिटिकल होगा।

कुछ कारणों से यह स्वीम घागे न चल सका। दो वर्ष बाद इण्डियन प्रम ने 'मीव निकाला तो प्यारेगान 'गाकिर' मेरठी इसक मम्पादक बन (यह भी 'उमाना के सम्पादकीय विभाग म काम कर चुके थे)।

'गाकिर न हमको बतनाया है कि घनपतराय (नवाबराय) को किनाबे पढ़न का बड़ा शौक था। सायन ही कोई विषय ही जिस पर एक घाघ किताब उनकी नजरों से न गुजरी हा। इसके साथ ही हाफिजा भी बला ना था। साहित्यिक और राजनीतिक किताबा सया रसाइल को पढ़कर उन विषयों पर ऐस बोमत ये जैस उम दोहरा रह हा। किम्मा-कहानी पढ़कर बाद रखते ही म।

इसी समय के बारे म लिखत हुए एव सगक न लिखा है कि खासत किम तथा मर वालर स्वा के लगभग मार हा नाथस प्रमक न पढ़ घ। जब एक के बाद दूसरे उपन्यास के कथानक के बारे म वह बोमते तो सब प्रभावित होत। सरपूतारामण निवारी जो उम समय पूरबी नाराणण हाई स्कूल बनपुर म मम्पादक घ, उहान एक वार नवाबराय म साफ कहा 'घाप स्वय उपन्यास निगकर भारतीय साहित्य का स्तर क्या ऊँचा नहीं उगते

नवाबराय का घगना उपन्यास 'किना था। मगस्त १९०७ के उमाना म इसरा विहापन मिलता है। १४२ मक की यह पुस्तक इण्डियन मागन रिजाम मीरीज का पहला नम्बर थी। म उपन्यास की एक भी प्रनि उपलब्ध नहीं है। इसम सिषों के गहना म सगाप पर ब्यास किया गया था। इसी ममरया पर घाप अमकर प्रमक का छवन भी लिखा।

उमाना के मक्कूर-नवम्बर १९०७ के घक म 'किना की घानापना

छपी है। हम उसे उद्धत करते हैं— यह भी एक नावल है और हमारे सोशल रिफॉर्म से तात्पर्य रखता है। जमाना व मजदूर मजदूर निगार मुधी नवाबराय माह्व बनारसी इमक मुसनिफ है जो फन नावल नवीसी पर उमदा भवुर रखते हैं। उद्घात घोरत म उधर के फजूल शोक की घाँटी घयाइ की है।

गोया यह एक एसी घोरत की साइफ है जिसे उधरात का शोक नहीं बल्कि जुनून था। इस जुनून की तस्वीर लिखाने में नायक मुसनिफ ने बहुत-कुछ जोर बलम सफ किया है। ताहम अफरान व तफरीता की बबह से यह उल्लेख मसली नहीं बल्कि मसनुई मालूम हाता है। साथ ही घादी-व्याह व बाउ रमूम का भी खाका उठाया गया है। खुमूसन एक रकम मुईता का बरार दाद घोर उसका मरुनी से वसूल करना बेगक एक नामावूल रस्म है। जकिन सग किम्मनी से मुहरिदब घरबाव बीम राज-बरोइ इसक खिलाफ होते जात हैं। घोर मुहरिदब घहरा घोर तालीमयाफता हलकी में इसका खियाज उठता जाता है। उही के नमूने पर देहात के याशिदे भी अफनी इस्लाह कर सकत हैं जो निहायत जरूरी है। अलबत्ता गादिया के मीक पर खनी व मुसरत का अउहार नाजिमो है वरना घादी व गनी के तफरीवा में इम्तियाज महाल हा जाएगा घोर बीम से जिन्नालिनी का मादा बतरीइ जपल हा जाएगा जो तन्जीब का जुवे अजम है। किताब में जो अबान इस्तेमाल की गई है वह मुधी साहब की फमीह तहरीरो में बहुत कम मिलती है। गालिबन यह अबान इसलिए इस्तेमाल की गई है कि जिस किरवा की इस्लाह मकसू है उसक लिए लिखस्य हो।

हम मुसनिफ की बालिग नजरी से जिस अमर का सहन तमाजुब है वह उनून फन से तमाजुब रखता है। माती उन्होंने कियाना को खाला घनकघारी साल से पहले ही सीन में मिलाया है जो सोशल रिफॉर्मो में निहायत मुअजिब व मुमताज हैं लेकिन उन्होंने अफनी इयूटा के खिलाफ गरीब किमाना के जुनून का कोई मातूल इलाज नहीं किया और इसलिए हीरो ने अपने हतबे घोर शान को कायम रखने में नाकामी उठाई। फन की नज्जकस यह चाहती थी कि खाला घनकघारीखान की बोसिध से किसानों का जुनून फद हो जाना और वह अपने सवका के लिए एक महबूबा बननी। बहालत मौजूदा यह एक ऐसा नावल है जिसमें कोई हीरो या हीरोइन नहीं है और इस एक नावल कहना भी महाल है। दरअसल यह नावल है भी नहीं बल्कि एक मजदूर मजदूर नमवानी का खाका उठाया गया है, जिसे अयेबी में कगीबेघर कहते हैं। और

इस निहाज से यह तसनीफ़ जरूर कान्त की मुस्तहिक है।

जैसे असरारे भाविद और हमधुर्मा ओ हमसवाव में हम रामकली का करेकान्त मिलता है वैसे ही हमलुर्मा ओ हमसवाव और किशाना दोनों ही में प्रचारक धनराघारीलाल का करेकान्त मिलता है।

किशाना लोकप्रिय हुआ या नहीं इसके बारे में कुछ कहना कठिन है। परन्तु नवावराय का पहला उपयास (हमधुर्मा ओ-हमसवाव) जरूर लोकप्रिय हुआ होगा। एक ठंडू साल में पहला सस्करण खत्म हो गया। सितम्बर १९०७ में उमाना में एक विज्ञप्ति में इसका मूल्य बारह आने से बढ़ाकर एक रुपया कर दिया गया। यह दूसरे सस्करण का ही मूल्य होगा।

१ १९४४ में दूरी मरी अंधेरा पुस्तक में मने लिखा था कि 'धवन 'किशाना' के आधार पर लिखी गई। इस सम्बन्ध में अनन्तर मने ने डॉ. कन्वर रत्न को २३ ४-५८ को एक पत्र लिखा— 'किशाना' नाम का कोई छोटा नावक था और यालिबल पड़ल वर् में छपा था मगर इसकी कोई किताब नहीं है। मैं अम्मा में इस कोरिआ में हूँ लेकिन अब तक कोई कामगारी नहीं मिली है। वह नावक कान्त में किमी दूसरे नाम से था या हुआ या नहीं पर भी मैं नहीं कह सकता। कान्त का किशाना में कुछ भी गाल्नुक है, यह मरी सम्बन्ध में नहीं आता।

—कन्वर रत्न पृष्ठ १४६

नई प्रकार की कहानियाँ

जिन दिनों नवाबराय के उपन्यासों की चर्चा व्यापक रूप में चली उन्हीं दिनों नवाबराय ने एक नई शिशा में लिखना शुरू किया। यह था कहानियों का क्षय जिन्हें उन दिनों हिन्दी में गल्प कहा जाता था। अपने भास्वन् चयारमन् लेख में प्रमत्त न सिखा है— डाक्टर रबीन्द्रनाथ टगोर की कई गल्पों में अंग्रेजी में पढ़ी थी और उनका अनुवाद उद्गु पत्रिका में छपवाया था। (ये अनुवाद वही छपवाय इसका पता नहीं चल सका) उसी लेख में आगे चलकर लिखा 'मेरी पहली कहानी का नाम था दुनिया का सबसे अनमोल रत्न'। वह १९०७ में अमाना में छपी। उसके बाद मैंने चार-पाँच कहानियाँ और लिखीं।

हरानी की बात है कि दुनिया का सबसे अनमोल रत्न शीघ्र कहानी अमाना की फाइला में कहीं नष्ट नहीं भाई। नवाबराय की जो पहली कहानी कही मिलती है वह है 'इन्क दुनिया और हुँवे बतल' (अप्रैल १९०८)। परन्तु जिन कहानियों की ओर इंगारा है वे छपी अवश्य उसी समय। ये कहानियाँ इस प्रकार हैं— दुनिया का सबसे अनमोल रत्न गल्प मन्मूर यही मरा बनन है सियाए मातम तथा इन्के दुनिया और हुँवे बतल।

जिस भाषा में ये कहानियाँ लिखी गई उस पर फारसी का गहरा प्रभाव है। लाल-लाला भी क्लिष्ट है। ये कहानियाँ हैं— दुनिया का सबसे अनमोल रत्न क्या है? बालू का सजाना भावेन्धान ताज ममरी जामेहूम नम्ने ताऊम और शर परबळ'।

दुनिया का सबसे अनमोल रत्न कहानी इस प्रकार आरम्भ होती है— दिलफियार एक पुराना दरमज क नीच दामनचार बडा हुआ मून क मीयू कथा रदा था। वह हुल्ल का पेथी मानी मलिया दिलफरब का मन्वा और जावाड भागिक था। उन मन्गाक में नहीं जो इन कुलत में बमरर और

निवास फालिदा से सत्रकर प्राधिक क भेष म माणुकियत का दम भरत हैं वलिक उन सीधे-साधे, मोले भाते क्रिणाइयो म जो कोहे विद्यावान मे सर टकराते घोर नाला फरयाद मचात फिन्ने हैं । दिलफरेब न इसमे कहा था कि भगर तू मेरा सच्चा प्राणिक है तो जा घोर दुनिया की सबम बेगबहा या संकर मर दरबार म था । तब मैं तुझे अपनी गुतामी म कबूल करूँगा ।

भाग निखा है— 'जब त्रिफिगार एक ऊँचे पहाड़ की चोटी पर लहा होता है एक मन्त्रयोग मन्त्र प्रमामा बोध एक हाथ म तस्वीह और दूसरे हाथ म प्रसा लिये बरभामद हुए और हिम्मत प्रफजा लहजे म बोले, दिल फिगार नागन त्रिफिगार ! यह क्या बुझदिलाना हरकत है ? इस्लामाल राह इन्क की पहली मजिल है मन् बन और यू हिम्मत न हार । मगरिक की तरफ एक मुक्त है जिसका नाम हिन्दुस्तान है । बहाँ जा मेरी धारजू पूरी होगी ।

कहानी का अन्त इस प्रकार है— एकाएक पर्ण खर निगार हट गया और त्रिफिगार व रुबह एक दरबार हुम्न धारास्ता मन्त्र प्राया जिसकी एक नाञ्जनीन इन्क जमझा थी । त्रिफरेब बसदगाने रनाई मस्ल खरीदार पर जलवा मप्रराब थी । दिलफिगार यह तिलिस्मे हुस्न दगकर मुतहैमा हा गया और नकम दीवार की तरह मरने म था गया कि त्रिफरेब ममन् स उठी और बई बदम आगे बडकर उसक हमभ्राणोण हो गई । रकासान त्रिमनवाब ने धानियाने गाने शुरू किए । हाणिया नगीना ने, दरबार न त्रिफिगार को नडरें गुञ्जरानी और माह व गुराणी को बाइरडत तमाम मसन पर बठाया ।

य कहानियाँ उदू साहित्य म एक नये दौर का प्रतीक थी । सिला-ए-मातम को छोड़कर बाकी भाग कहानिया म न्य प्रम की अन्क थी । साहित्य म यह एक नई धारा थी जो प्राग खतर बहुत प्रयत्न हुई और त्रिमन गुन भी गिनाय ।

य कहानियाँ न्य प्रम की भावना म धान प्रोत थी । गन्धपूत दूरमात्रा का बीनिमान तथा दग व परापीन हाने व कारणा का विन्मपण भा इनम था जैसे कठी रानी म । इम मन्त्रम म प्यारेमान गात्रिर ने लिगा है—

एक त्रि त्रिरता त्रिलस मैं मुगा (प्रमकन्) के मजान की सफ्र जा निहना । गोषा म्पर भाया हू ठो उनम त्रिम सना धानि । दपोड़ी म दानिज हुमा म उम्ह सन्ध पर म्प्रार धान स म्गा । मन् व बन बोध पडे है । दाना टागि पटना म ऊपर उठी हुं हैं । गामन एक हिग्ने का त्रिनाय गुनो हुई है । कपम नडो म चल रहा है और कलम की रगार क गाय-गाय टागि भी बराबर त्रिम रहा है । मुपन ग्याल स्या कि दम बकन त्रिमी त्रिनाय पर

तनकीन लिखी जा रही है। अन्तर पकूचते ही मैंन दरयाफत किया— कहिये किसकी तवाजा हा रही है? हसकर जवाब लिया तवाजा ता किसी की नही हो रही। आज जरा 'रुठी रानी' को मना रहा हूँ।

२ 'रुठी रानी', जे अगैल मर और अगगत १६ ७ में छपा थी एक हिन्दी पुस्तक का अनुवाद था जिन न्यासराय ने किया। (मूल पुस्तक १५६६ ईस्वीयमान की लिखी हुई थी।)

दूसरी शादी

माहित्यिक क्षत्र म पत्रकार निबन्ध लेखक तथा उप-यासकार क रूप म जो नवावराय (धनपतराय) दिन-दूनी रात चौगुनी तरक्की कर रहे उनका ववाहिक जीवन दुखी था। मजायबतान न छोटी उम्र म धनपतराय की शादी कर अपना इस प्रत्यागु पुत्र क लिए बड़ी-बड़ी समस्याएं खड़ी कर ली थी। उसका घर पर बहुत भारी बोझ रखकर वह स्वयं चल बस। पिता की मृत्यु के बाद अपनी पत्नी, विमाता विमाता क भाई विजय बहादुर तथा उनका दो पुत्रों का भार धनपतराय किमी तरह सहन रहे। परिवार समझी म रहता था इनम धनपतराय अपनी धाय का अधिष्ठ भाग घर घर भेज देते थे। छुट्टियां म घर घाते और बहुत दुखी होत। बीबी तथा विमाता म धमकन मचा रहता। विमाता धौम जमाती बीबी धौम नहीं मानती। धनपतराय क घर धान ही दोता उनमे निहायने करता। धनपतराय की हालत खरकी क दो पाटा के बीच की थी। उनका शरणों म ही मुनिय—

एक बार चाची (विमाता) धन मायक गई हुई थी। मरी बीबी की मैं था। पर म मेरी खची खचेगी भाभी थी। गर उन जिना उनका पर म तबलीक थी। कभी-कभी के भून प्रन की तरह हाथ भाव करती थीं। एक पण्डित मामाई का काम करत थे यद्य का भी काम करत थे। मरी खची ने कहा उन्हें बुना साया। मैं उन्हें बुना साया। पण्डितजी धाय और धोम्या की तरह कुछ उहानि मनाय जताय किया। मैं भी दोपहर तक बठा बठा उहा क माप हवन करता रहा। पर म मानिग करने को तन बनाया। मैंने उन्ही स तन बनवाया। मुझम बहुत को बुतान का कहा। मैंन यह भी किया। इस पर जब चाचा पर पर घात तो गया का हिमाय उहान पूछा। मैंन बना किया कि गया इस तरह तप हा गए। हिमाय क किया। तग ममय चाची की निगाह म मैंन दो

यही बुराई की। मेरी बहन को भी इन्होंने काफी तकलीफ दी। भगडा था ए
 तिन हुआ करना। भगडा हतना बढ़ा कि एक माल बाद बीबी को मना व
 लिए घर छोड़ना पड़ा।

जब धनपतराय गरमियो की छुट्टी पर घर आय तो वहाँ से निगम को लिखे
 गए उनके एक पत्र का पढ़कर उनकी परिस्थिति का अंदाज हो सकता है। वे
 लिखते हैं—

जूतू करके एक अक्षर काटा था कि खानगी तरह दात का ताना बधा।
 औरता न एक-दूसरे का जना कटी मुनाई। हमारी मजदूरी न जल मुनकर
 गन म फौजी लगाई। मैं न भाषा रात की भाषा लौड़ी उसको रिहा किया
 सुबह हुई। मैं न खबर पाई। भन्नाया बिगडा खानत मुलायत की। बीबी
 साहिबा न अब ज़िद पकड़ी कि यहाँ न रहूँगी मरु जाऊँगी। मेरे पास रुपया
 न था। साधार खत का मुनाफा घसूल किया। उनकी रखसती की तयारी
 की। वह रा-पोकर चली गई। मैंने पहुँचाना भी पसन्द न किया। भाव
 उनको गय घाठ रात्र हुए। न खत है न पत्र। मैं उनसे पहले ही खुश न था।
 अब तो सूरत से बेजार हूँ। गालिबन अब की जुगाई दाइमी सावित हो। खुश
 करे ऐसा ही हो। मैं बिना बीबी व रहूँगा। बिल्ली बहन मुर्गा लँडरा ही
 रहगा। उधर ननिहाल से बानिदा की तरफ से खिन्न है कि क्याह रहे और
 खबर रहे। जब कहता हूँ मैं मुफ्तिस हूँ बगाल हूँ खान का मुयम्मर नहीं
 तो बानिदा साहिबा कहती हैं तुम अपनी रजामन्दी जाहिर करो तुमसे एक
 पौड़ी न माँगी जाएगी। सुनता हूँ बीबी हमान है वागऊर है जब से खर्चें बगर
 मिली जाती है फिर तबियत क्यों न पुरमुगमे और गुदगुनी क्या न पैसा हो ?
 ईश्वर जानता है। दा तीन बार उसका स्वाव भी देख चुका हूँ। बहरहाल
 अबकी तो गमा छुड़ा ही लूंगा। आइया की बात नारायण व हाथ है। जसी
 घापकी सवाह हागी वसा ही करगा। हम वारे म अभी फिर मगवरा करने
 की उम्मीद बाकी है।

कई वर्ष बाद गिरानीबी को बल्लामा— छुट्टियाँ क दिन थ। मैं
 घर आया था। उही तिन मुअम और मेरी बीबी म भगडा हो गया था और
 इसके साथ साथ चाची ने काफी गिवायत भी उनकी की थी। शोध म आकर
 मैंने उनका डाँटा। वे भी मुझ पर भस्माइ। मैंने कहा—'तम वही बहतर हागा
 तुम अपने घर जाओ। मैंने विजय बहादुर से कहा इनका पहुँचा पाओ। मरा
 कहना था कि वे उन्हें पहुँचा पाये।

रिश्ते के कई प्रस्ताव आय परन्तु धनपतराय म वार म जिता को

प्राप्तान्त न देन थ । वह स्वयं पत्नी का वापस ल आन क लिए तयार न थ परन्तु उनका विचार था कि 'गाय' उनकी बीवी लीन घाय । कई माल तक इन्तजार करन क बाद उन्हनि तय किया कि दूसरी 'गाँवी' ता की जाए परन्तु किमी बाल विधवा स । निगम न लिखा है—

उनका उस वकन भागम 'गावा' था । और वह एक हममुख जिन्नाग्नि गुगरा व तन्दुस्त और सात जमात नौजवान थे । श्रीवास्त्व पिर्के में जिमम उनका समास्तुक था करार दा' की रस्म आम है और हजार-दा हजार रुपय नक' तो उनकी धासानी स मिन सक्ता था । और यह रकम उस वकत उनक लिए एक बड़ी रकम थी । उनक महल खानदान बेवा विवाह के खिलाफ़ थे । मगर वह अपने फयल पर मन्तव रह ।'

सलीमपुर (जिला फ़तहपुर) क मुसी दवाप्रमाद की लढकी, गिवरानी 'बी ग्यारह साल की होकर विधवा हो गई था । मुगीजी दुवी थ और चाहल थ इन बेचारी का दूसरा विवाह हा । पण्डिता स पूछा । समावाग्पत्रो म इस्तिहार निकलवाया । इसक जवाब म कई पत्र आए । इनम न एक घनपतराय का था । हमम अपनी सिता तथा नौकरी क बार म लिखा था (घोर शाय' कहा कि पहली बाबा मर चुकी है) । दवाप्रमा' न उन्हें फ़तहपुर बुसाया पसल किया बरपदा दा और निराम क पस लिय ।

घनपतराय के घरवाल विधवा विवाह के विरुद्ध थ इसलिए घनपतराय न उह एवर तक न थो । विधवा स विवाह करना इनकी नितरी था । वह गमान क दकियानूसी बचन मोखना चाहते थ ।

शा' क वा' गिवरानी'बी पति क घर भाई घोर चौ'ह लिन रहा । घर का हिनार बिनाब कुछ घनीव था । चाची की धरना थी । गिवरानी'बी परन करती थी । चाची का व्यवहार एमा ही हागा, जमा प्रेमक' की पहली बाबी स गा । इसलिए जहाँ तक सम्भव हाता गिवरानी दवा मायन म रहना पना करती ।

बानपुर क जीवन के बारे म गिवरानी'बी लिखता है— माप मुबह चार वर उठन थ । हुषता पीकर गोब जान हाथ मुह घान पीन जा मिन जाना उमी का ना'ना करत । अपनी क माय बँटकर नियन । कुमम सबदूरों क पाबड़े की तरफ़ तडा स धरनी थी । शा' का निगम तथा दूमरे मित्रा क माय भ'ग होनी । 'र स पर ली'उ ।

बानपुर क शिल्डि'क म्बून स मापकर सम्बन्ध भाई चार वर रहा । कभी मा'न घा'के मा'टर कभी छा'उके और कभी नौबे ।

जब कानपुर ही मध्य उमी समय धनपतराय (नवाबराय) की 'सोव्वेवनन' (कहानिया का संग्रह) छपी। इसका पहला विनायन जमाना व अगस्त १९०८ अंक में मिलता है। इस संग्रह में पाँच कहानियाँ हैं दुनिया का सबसे अनमोल रत्न शक मरभूर यही मरा वतन है सिल-ए मातम रद्वं दनिया और हुब्वे वतन। जसा हम पहले कह चुके हैं सिल-ए-मातम को छोड़कर बाकी सभी कहानियाँ देश प्रेम में रगी हैं। लेखक की प्रस्तावना से उनको दृष्टिकोण का पूरा पता चलता है। इसे हम उद्धृत करते हैं—

हर एक कौम का इस्मो अदब अपन जमाने की सच्ची सतधार हाता है। जो खयालात कौम के दिमाग को भुतहरिक करते हैं और जो अजबान कौम के जिनो म गूँजते हैं वन नरम व नमर के सफहा म ऐसी सफाई से नजर आते हैं जस धाईने में सूरत। हयारे लिटरचर का इम्नदाई दौर वह था कि साय गफसत व नशे म मतवाल हो रहे थे। इस जमाने की अन्वी यादगार यजुज भागिकाना गजला और चन्द सिफला किस्ती के और बुद्ध नहीं। दूसरा दौर उसे समभना चाहिये जब कौम के नये और युगने खयालात म जिन्गी और मौन की सडाई शुरू हुई और इस्लाह समददुन की तजवीजें सोची जाने लगी। इस जमाने के किस्से व हिकायात अयागार इस्लाह और तजवीजें हो का पन्तू लिय हुए हैं। अब हिन्दुस्तान के कौमो खयालात ने वलोगित व जीने पर एक कदम और बढ़ाया है और हुब्वे वतन व अजबान लोया के जिनो म सर उभारने लगे हैं। क्योंकि मुमकिन था कि इसका असर अदब पर न पडता ये चंद कहानियाँ इस असर का आगाज हैं और यकीन है कि ज्या ज्या हमारे खयाल रकीह हात जाएंगे इस रंग के लिटरचर को रोज अफजू फरोग होता जाएगा। हमारे मुल्क को ऐसी किताबों की अशद जरूरत है जो नई नसल के जिनर पर हुब्वे वतन की असमत का मकाना अमायें—नवाबराय।

'सोव्वेवनन' के प्रकाशन का समय देश में राजनीतिक जागृति का काल था। कितने ही पत्रों ने इस पुस्तक की प्रशंसा की। जमाना में दी गई विमर्श में भाग गजट स्वराज्य हिन्दुस्तान मिन्बर्वा तथा 'जमाना में की गई आलोचनाओं का अंश लिय गए। आगे चलकर इस पुस्तक के कारण धनपतराय पर एक आफत भी आई इसलिए आवश्यक है कि हम जमाना की समालोचना उद्धृत करें। यह नवम्बर १९०८ में अंक में छपी थी—

जमाना के मकबूल मजदूर निगारमिस्टर नवाबराय ने उद्द फसाना निगारी का एक निहायन ही दिलबग नमूना देना किया है जो मात्रवनन के नाम से मोमूम है। इस किताब में पाँच छोटे-छोटे किस्म जमा किया गए हैं जो निहायत

मीथमर घोर तिलफरव हैं घोर त्रिनका मकसत घाना हुबुनवतनी है। पन्ना विस्मा किबुन हातमनाइ के तज्ज पर निगवा गया है जिसम एक भाषिक माथिक अपनी महबूबा की तरमीन कर्मभाषा के लिए निकलता है जा दुनिया का सयव बापवहा खीड़ मीगता है घोर मद्रवातिर नाकामिया के वात् गाहर मकमू हाप लगता है। दूसरा जिस्मा तज्जे वयान के ऐनवार से एक जुगाना समूना पदा करता है सकिन मकसत वहा हुबुलवतनी है घोर निस्वतन जगाना मच्छा है। सकिन सबम उमगा तीमगा जिस्मा है। खीय जिस्स का हुबुलवतनी म कोई तान्नुक नहीं घोर इस तिहाज से इस तिलसिल म जगाना तास्तुक नहीं रखता। मगर तिलवनी के ऐनवार से यह जिस्मा भी बड़े-बड़े किमाना निगारा की खीर कलम की यात् तिलाता है। पाँचवें जिस्स म इन्ना के माहूर हुबुल वतन जोड़क मञ्जीनी के हातान दज किय गए हैं घोर दिखाया गया है कि उमका हुबुनवतनी बेसी सम्बी घोर गरफानी थी। इन जिस्सा के तिलन म काबिल फमानानिगार ने नाररीन की जियाफतवता का बनुन वहा तिहाज रखा है घोर उन फललाकी मयाइस का जा बजाहिर तिहायत खुक मातूम हात हैं एमा तिलवस्य तिलाम पहलाया है जो उरू म बिनुल नया घोर काबिल मकमीन है। अगरेष ये जिस्स बहुत ही मुन्मिर हैं सकिन ये इन्मार उमून वलगत पर मवनी हैं। यानी इतम फसफाज कम हैं घोर मतालिब जगाना। अगरे लफलाकी से काम निपा जाता तो यही बड़े-बड़े जिस्स हो सकत थे। बजुब मीमरे जिस्स के हर जिस्स म हुम्न या इन्क की धानी मोडू है घोर उमके जो हुदू तिलाय गए हैं यह एक तिहायत ही नाबुके मयाल मापर के निवा हर शम् का हिस्सा नहीं। हामीकि ये जिस्स नय म हैं घोर बेरा-मुमन म इहे काई इसाजा नहीं। ताहम वहा जा सकता है कि इनकी समनीफ म मापनी का गई है, बयाकि जा सुफ नय म हासिल हो सकता है यह इम नय म मोडू है। हम बिना मुबालिगा कह सकत हैं कि मोडे वतन घाज की समनीफ म भरनी लख की बहतरीन समनीफ बहलान का मुन्मिर है। इमके जिस्स पान हुए हमका उरू के बहतरीन प्रमानानिगारा की यात् धानी है। जुबान की मजाई वयान की खाना किबगा की उम्ती घोर प्लाट की गीरा बावना गरज दगावनीकी के मयाप भरकान इम गुबी म इम छाया-मा किनाव म जमा जा गए हैं कि बसागना तारीक करन का बी चाहता है। हमारी गद म माडवतन म हमारे अजाज शम्न का गम पर तब रोगन रह्या। उरू म एमी समनीफ के तिल हमारी धीरें दर म मुन्मिर थी। नवाबराय माहक न घोर भावन भी समनाफ किण हैं। मगर इन मयम हमका मकसत मकसत की

खामियाँ और कमज़ारियाँ दिखानी पड़ी। लेकिन इस तसनीफ पर जिस कदर फखर किया जाए कम है। आखिर म हम उम्मीद करते हैं कि इस किस्म की तसनीफ की मुल्क में तरक्की होगी और नाजुक खयाल महल कसम इस तज्ज में अपनी जुलाना कलम के जोहर निस्थाने में दरग न करेगे।

इस पुस्तक ने १९०८-९ में कितनी खलबली मचा दी होगी इसका अंजाम इस बात से हो सकता है कि इण्डियन प्रेस इलाहाबाद की मासिक पत्रिका सरस्वती में—इसमें प्रेमा तथा कृष्णा की आलोचना तो नहीं मिली—इस उद्ग कहानी संग्रह की आलोचना हुई।

निसम्बर १९०८ की सरस्वती में निम्ना है— सोजबतन पुस्तक उद्ग म है। इसमें स्वदेश प्रेम-सम्बन्धी पाँच भाष्यायिकाएँ हैं। भाष्यायिकाएँ मनो रजक और उपदेशपूर्ण हैं। इन्हें पढ़कर स्वदेश भक्ति का पवित्र भाव हृदय में अकुरित हो जाता है। भाजकल ऐस बिस्ता की बड़ी आवश्यकता है। इन्हें पढ़कर लाग बहुत लाभ उठा सकते हैं। कागज और छपाई उत्तम है। इसकी रचना उद्ग के प्रतिष्ठ संसक धीयुत नवावराय न की है। मूल्य साठे चार आन। मिलने का पता—बाबू विजयनारायणलाल नया चौक कानपुर।

विजयनारायणलाल धनपतराय की विमाता के भाई थे और ऊपर दिय गए पते से ज्ञात होता है कि इस पुस्तक को धनपतराय ने स्वयं ही प्रकाशित किया। प्रेम एक के अर्धिन हर पुस्तक पर प्रस का नाम छपना जरूरी था। इसक अलावा लेखक का नाम पता और हस्ताक्षर भी भेजने होते थे। 'जमाना प्रस में छपी यह पहली किताब थी। शायद कानून का उन्हे पता न था इसी से लेखक का पता नहीं दिया गया था। प्रस का नाम भी न छपा।



देश-प्रेम के कारण सरकारी कोप

सौदवतन' म ता दश प्रेम की कहानियाँ थी ही धनपतराय न तिनकर और नैला म भी दश प्रेम की भक्तक मिलती है । इक दुनिया और हृदय वतन का धाधार तो मडिनी का भोवन था । नवाबराय न गरीबान्डी का रेखाचित्र भी तिया । मई १९०८ म स्वामी विवेकानन्द पर एक लेख तिया । इनक घनावा मई जून १९०९ म एक अन्य महत्त्वपूर्ण लेख भी तिया, जिसका विषय उनकी नोकरी स सम्बन्ध था । विषय था यू०पी० म इन्निदाई तालीम । इस लेख क कुछ घन हम यहाँ उद्घृत करते हैं, जिसस धनपतराय क मामाजिक और राजनीतिक दृष्टिवाण का पना चलता है—

निसम्बर १९०८ क 'माइन रिब्यू' म मट निहालमिह ने एक नागर मठ मून तिया है जिसम धमरीदा के एक मोडा की केंद्रियत बयान की है । उस पदकर हैरत भी होनी है और मायूसी भी । हैरत इसलिए कि तहजीब की जा धामानियाँ और धमबाय इस गाँव म है य हिन्दुस्तान क बड़े-बड़े शहरा को नसोब नहीं । और मायूसी इसलिए कि धायन हिन्दुस्तान की किस्मत म तरफती बगना तिया ही नहीं । दो हज़ार आबादी का मोडा और हाई स्कूल । इसकी इमारत इसक कुसुबखाना इसक सवारेटरी पर हिन्दुस्तान का को-कानिज नाठ कर सकता है । क्या हिन्दुस्तान क भी कभी एक नसोब हागे ?

धय एक तरफ़ ता इस दगाती मन्गना को रणिय और दूसरी तरफ़ एक त्रिस्तानी देहाती मन्गस का सामान कीजिए । एक दरदल क नाथ जिसक मपर उधर बूडा-बदकन पहा हा, और जहाँ धायन बरसों म भाइ नहीं हा मई एक पटे पुरान टाट पर धीस-पध्धीस सडक बट ऊप रट है । सामन एक ट्टी हुई कुत्सी और पुराना मड है । उम पर हज़रत मुस्लिम की जान मुतकिन है । मडक मून-मूसकर पहाडे रट रट है । धायन बिका क बन्न पर गाबन कुत्ता म हागा । धानी रात क ऊार तब कपी हुई । टांगी मला-बुचवी मूरतें गुमना

चहरे पसमुर्ती। यह धार्यावित का मन्त्रसा है जहाँ किसी उमान म तक्षगिला और ननिया दाहलउसूम थ। जिस कन्त्र तफावन है ! हम तहजीब की दौड म दीगर भववाम से किस कन्त्र पीछ है कि धायन वहाँ तक पहुँचने का होसला ना नही कर सकत।

हमारा इतराई तालीम के इम्नाह और तरक्की के लिए सबसे बड़ी जरूरत लायक मुर्तिसो की है और लायक धान्मी भाठ रुपय या नौ रुपय माहवार मगाहरे पर दुनिया क पने म नही नही मिल सकत। जिस गन्म का फिक्रमुभाग मे धाजागी ही नसीब न होगी यह तालीम की तरफ क्या खाक रजू हागा। ऐस बहुत-स भजला है जहाँ अभी तक मुर्तिसो को चार और पाँच रुपय से ज्यादा मगाहारा नही मिलता। ऐसे धादमिया व हाथो म हमारी सरकार ने रियाया की तापीम रख दी है। और ताज्जुव किया जाता है कि तासीमी हालत क्यों ऐसी रही है। जब सरकारी मुदरिसा का यह हाल है तो इमदादी मुर्तिसा का जिक्र ही क्या? इनम कम-से कम तीन बीघाई ऐसे हैं जिह सरकार चार रुपये माहवार इमदान देती है और इसम एक धाना मनी धाडर का महमूल कट जाता है। तीन रुपया पन्द्रह धाने म कौन महीने भर दर्मेरी गयारा करे। यहरा म बहारा की तनखाह छ और मात्र रुपया माह चार है। बल्कि विसा भोकाल इसस भी ज्यादा। मामूली मजदूर चार धाने पम रोज कमा लेता है मगर गरीब मुर्तिस ननसे भी जतीत ममभा जाता है। मजदूरन या तो वह गरीब सेता की तरफ रजू हा जाता है या सरकारी कायने क खिलाफ पाब धाता की जगह एक धाना या उससे ज्यादा फीस सेना छुह करता है। जिनका नतीजा यह है कि लडको की तादान म धपझूनी नही होने पानी। बहुत-से इमदादी मदरसे तो मिक इमलिए कामम है कि एक गरीब धान्मी तीन चार रुपये पर बठे पा जाता है। पन्ध्री नडकों क नाम लिख लिप जात है और जब कोई धफसर ममाहारा क लिए पहुँच जाता है तो धान लडके इपर उधर स जमा करके दिया दिए जाते हैं।

अध्यापका की कठिनाइया की और दगाग करक धाप लिखा— 'नारमत स्कूला स त्रा लाग मज्जेतालीम सीखकर धाते हैं वे भी मन्त्रसा म धाकर धपना सब तरीका भूल जाने हैं। वेचारे क्या करे। वहाँ उह एक वकन एक नजे की तालीम का सबक दिया गया यहाँ उह एक वकन म चार दर्जे पठान को मिले। उन उमूसा पर कबोकर धमल करे? एक दर्जे के पठाने म मगापूल हुए ता दूसरे दर्जे का हिसाब ले दिया। किमी नजा का लिगना किसी नजा को जुगराप्रिया। धाव ना एक ही है। कम लिखन की इस्ताह करे। कस हिसाब ममभाये।

कमे वाकायदा तीर पर जगगाफिया का तापीम द । गज एक हग्दाग-सा मचन लगना है । लडका ने गानात मु रिस को मगगुल दया ता घीन घप्पा शुभ किया ।

अध्यापका की सय्या वडान की मपील पर और इस बाप पर अय का अिध कर नवावराय निगन है— गुजिस्ता सूवा मुताहिना म १६ लाख इज्जदाइ तानीम में सरफ हुमा और बहिमाय घोसत पी तानिवे इल्म साडे तीन घाना । यह घोमत दूसरे मुहग्बिअ मुल्का व मुकावल म बडुन ही कम है । क्या सरकार ऐस पाक काम व लिए पचास लाख मालाना भी छच नहा कर सकती ? रुपय की निल्लत एक एसा हीसा ए गरई है जा गवनमेट व लिए कभी सादिक नही कहा जा सकता । गवनमेट व अरामा मामहदू हैं और इतनी रकम वह घासानी स छच कर सकती है । जय जयी मसाग्फ इम कसरत से साल-ब-साल यवत बन जात हैं अफमरी के एग और सहूलियता पर रुपया कीडिया का तरह चुगाया जा रहा है ता अफनास मा सगस्ती का लीसा कभी काबिन यकान नही टहर सकता । यह भी गवनमेट की एक खालासी है कि उनम इस्टिबड बोर्डी पर तालाम का भार डालकर अपने तद फलह्ता कर दिया । और अब एमकम अहान पाक व मसल पर अमल कर रही है । बोड वहाँ से रुपया लगाए । जय प्राविगत गवनमेट अपने मुकरिराह हिस्सा का सली स पगूम करली चनी जाती है ।

भाग खलकर नवावराय कहत हैं कि अध्यापका को गाँव व पास्ट प्राफिम का पात्र दकर उनक अपने अध्यापन व काम म रुकावट डालना है । सगान के प्रमल म एक-एक दिन कई-कई सौ व मनीघाडर घा जाने हैं और हर एक मनीघाडर पर मुर्तिस को बुद्ध धाने-नस मिन जाते हैं । यह बहुत नेचुरल बात है कि मुर्तिस जसी छोटी हैमियत का धामनी जाता कायना व इन मोजा का हाय म न जाने दे । अफसोस की बात है कि हमारी गवनमेट की निगाहो म हमारी तापीम की कोई वकअत नहीं ।

प्राइमरी गिशा के महत्व को बनलानकर मिलवम के बारे म बह लिखन है—

हमारा गपाल है कि अपर प्राइमरी दर्जे की तापीम अजर डरा और बपाना कमीह कर दा जाए तो वा नकारा की जूमरीयान के लिए काफी हैं । रीडरों जो हम ववन पुरखिब हैं अबान व मिहाइ स सब नाकारा है और उनर पडुन से पडक बडुन मामुमी बालघाल व न तो हिन्या अबान जानत हैं और न उदु । उनको अबान की दमपाह होनी चाहिए ताकि सडन रामापण ता समझ म । कायन की काँ अरस्त नही । गारिज कर दना चाहिए । जुगराफिया की तापीम काफ्री है । हिमाक म भी बुद्ध कमर रही है । अमनी मवानान की मः

ज्यादा होनी चाहिए। ड्राईंग फिजून है। इसके बजाय तन्दुस्ती व मुतमालिक एक छोटी-सी प्राइमर होनी चाहिए। और बवायद जवान की जगह पर ज़रामत के कुछ उमूल सिखाय जाने चाहिए। इस वक़्त सतो क़िताबत का तरीका नहीं सिखाया जाता। यह एक बहुत ज़रूरी श है और इसका भी इतज़ाम हाना चाहिए। तब इम्बिनाई तालीम का मसला गोया हल हो जाएगा।

मदरसा के लिए इमारत का नक्शा उताने इस प्रकार खीचा है— मन्सो की इमारती हासत निहायत अफमोसनाक है। तहसीली मदरसा मे तो कही-कही पुस्ना मकानात बन गए हैं मगर लोभर प्राइमरी और अपर प्राइमरी मन्सो की हासत बहुत रही ह। उन्हें देखकर मवशोम्बाना या मोहताजखाना का खयाल पदा होता है। दीवारों बोसीन दरवाज़ गिक्स्ता हास छतें गिरी हुई फग जमीन कच्ची। यहाँ भी रिस्वत और गबन की गरमबाजारी है। अगर किसी तामीर के लिए हज़ार रुपया मज़ूर हुआ है तो यह यकीनी बात है कि कम अज़-कम निस्फ रकम ज़रूर दरमियानी मनाजल तय करने म सक्र हो जाएगी। जिम्मेवार अफमरो म हमीयन का मात्ना ऐमा मरद हो गया है कि इस बारे खर की अमानत मे भी खयानत करने म गुरेज नहीं करते।

भाग चलकर नतामो के खय पर दो भाँसू बहाये हैं— हमारी तालीम का तो यह हाल है और हमारे पब्लिक काम करन वाले इन मसलो की तरफ से बिनकुल गाफिन बैठे हुए हैं। कितने ऐसे अखवारनधीस हैं या रेजोल्यूशन पास करने वाले बुकसा हैं जिन्हाने किसी ज़िला मे तौरा करके यह तहकीक किया है कि कितने मदग्मा म इमारत है और कितना मे नहीं। डाइरेक्टर साहब की रिपोट से जाहिर नहीं होता कि फीसनी कितने मन्सस सरकारी इमारत पर फस कर सन्ते हैं। डिस्ट्रिक्ट बोड के मेम्बर साहवान जैसे लायक और तालीम याफना होते है उनमे यह ज़म्मीन करना कि इन मसलो पर वह कुछ तहरीक कर सकन है बिलकुल तबस है।

यह भी क्या ग़ुब धात है कि जब यह लख धनपतराय ने जमाना म छपन के लिए भजा उनका डिस्ट्रिक्ट बोड हमीरपुर के अधीन सब डिप्टी इन्स्पेक्टर ऑफ स्कूल व पर पर नियुक्ति की बात चल रही थी। २४ जून १९६६ को उन्होंने महोबा म इस नय पद का चाज़ किया। उनका वतन भी तीस रुपया महीना मे बत कर पचाम रुपया महीना हो गया। इस पद की म्बीकृति का एक कारण यह था कि विजयनारायण धनपतराय के साथ ही रहत थे और धनपतराय न माचा कि जब ज़िल का दौरा करेंग तब उन्हें घर बानो की विगप चिन्ता न करनी होगी।

जिस मोहल्ले में उन्होंने घर लिया वह कायस्था का मोहल्ला था। घनपतराय सबक माथ भाईवार का व्यवहार करते। सब लोग तीज त्योहार पर उनके यहाँ आते। एक बार जब वहाँ की प्रथा के अनुसार लोग काँचिमी बारात में चले जान पर एक हाथ में भारती घोंटू दूसरे में बेलन लिये घोरत गा बजा रही थी, घनपतराय पीछे रह गये थे। जब घोरतें मरदा की परम्पत करने की भाँइ तो घनपतराय डर के मार बाहर दरवाजे के पास चारपाई से उठकर घर के कमरे में भाग गये।

महोबा में यह भी प्रथा थी कि सरकारी अकसर दूध घी मुफ्त देते थे। बेगार भी लेते थे। घनपतराय ने यह सब सने से इंकार किया। वहाँ के रईसा ने कहा यदि घाघ बंद कर देंगे तो घाघ से यह लोग किसी को कुछ न लेते। उनके जार डालने पर घनपतराय केवल इतना ही माने कि मैं तो न लूँगा मर नौकर से लेंगे। दूध तो इतना मिनता था कि नौकर लोग खोया बनाकर खाते थे। स्थानीय प्रथा के अनुसार जब लोग तिलक लगाकर राया दत्त तो घनपतराय दही प्रक्षण माथ पर लगवा लेते पान-श्रीड़ा मुह में डाल लेते घोर बगन गीर हो सते परन्तु रुपया न सते। बहुत यत्र मरेमिद्वान्न के विमाक है। घाघ हमक दिया मुझे लभा करें।

घनपतराय मानहनी से मित्र का व्यवहार करते। जा उध्र में बड़ा होता, उसकी इज्जत करते। गिनाविभाग के अकसर भी उनमें गये थे।

जब वह सहोया घाघ तो चाचा, उनके भाई और पुत्र भी माथ भाग थे। तीन महान बाद चाची घनपतराय के भाई के यहाँ जानपुर लोट गई। कुछ दिनों बाद विजयनारायण की मृत्यु हो गई। विजयनारायण उनके दोरे पर जाने के बाद उनके घर में ध्यान रखते थे। घनपतराय की उनका देहान्त में बड़ा दुःख हुआ। इस समय में कमर टूट गई जिम्मेदार पत्त हा गई। जिस हम्पबन्नी की बड़ी भारजुभा और तमन्नामा के यहाँ हासिल किया था वही घनपतराय की जमात हा रहा है। बीबा का तनहा छोड़कर लीरे पर बंग जाऊँ।

घनपतराय बीबी से कहते, तुम भी लीरे पर मेरे साथ चला जा। यहाँ तुम सबकी पढी रहनी हो यहाँ मुझे किन रहना है।'

परन्तु गिबरानोकी का लीरे पर जाना समझ न था। लीरे कि दुस्वानी घनपती बीबी को लार लीरे पर भूमना है ? एक तमागा-या हुआ।

मैं थाटा हूँ तुम पुरानी बाता की घनपतिविभाग में निवास दा। मुझे ता तमागा-या नहीं मानना जाना। घनपती का दत्ता। किन्तुने कारण म रहते हैं।'

यत्र हिम्मान है।

तभी तो परेगान होत है । मैं रोज़ पर रहूँ और तुम यहाँ बकली इसम क्या लाभ है ?

नज्जा मालूम होती है । और फिर भाज यहाँ बल वहाँ । क्या भाराम होगा ?

मैं भी तो रोज़ घूमता फिरता हूँ ।

आपको तो घूमन के लिए सरकार बतन देती है ऊपर से भत्ता ।

शिवरानीदेवी नहीं मानी । दौर पर जान की अपेक्षा वह बकली रहना बेहतर समझती थी ।

दौर पर भी लिखने का काम जारी रहता । जब मुमाइना करना होता तो उस काम को मुदरिसों के हाथ देते । कहते क्या कहें मैं जो मुमाइना करता हूँ तो मुदरिस लोग लडको के सामने पर्चा छोड़ आत है । इस वास्त यह काम मैं उन्ही पर छोड़ देता हूँ । कम-से-कम जिसस यह तबलीफ उहे न उठानी पड़े । वे बेचार खुदा भी रहते । अच्छा मुमाइना हो जाने पर उनकी तरकिकर्या भी होती हैं । उह अपने अफसरों की सहानुभूति तो नहीं मिली । मातहना के साथ आपने माईचारा हमेशा किया क्योंकि अफसरी करना उहे पसन्द न था । उनका कहना था कि अफसर बनकर इन्सान इन्सान नहीं रह जाता । ईश्वर मुझे इससे हमेशा दूर रहे ।

घनपतराय घोड़े पर चढ़कर तौरा करते थे । अपने घोड़े का वह बड़े ध्यान रखते । सड़िया म वह स्वयं कम्बल ओढ़ते और दुधाला घोड़े को ओढ़ात ।

फिर बैलगाड़ी की बात चली । बैलगाड़ी ल लता तो कम से कम बीस रुपया उसका भत्ता मिलता । पर क्या कहें ? रुपय नहीं है ।

माखिर शिवरानीदेवी ने अपनी जोड़ी पूजा के डेढ़ सौ रुपय उनको दिये । बैलगाड़ी भा गई । एक बार घनपतराय सपरिवार इसम बैठकर चरखारी म मला देखन गये । चरखारी रियासत क राजा न खूब भावभगत की । शिवरानी देवी लिखती है— कभी-कभी घूमन की मेरी इच्छा होती तो मैं कहती कि जगल मे चलना चाहिए । आप सहप तैयार हो जाते । हम दोनों जगल कं घुसआत ही म गाड़ी छोड़कर भीतर चले जाने । दिन भर वही भरना म पानी पीते फल खाते पहाडा पर चढ़कर सग करते । गाम तक महाबा घा जाते ।

महोबा ही म घनपतराय क दो लडकियाँ हुई । एक तो बाल्यावस्था ही में मर गई दूसरी कमला जीवित रही । कमला का जन्म १९१२ म हुआ था ।

घनपतराय को सारे जिले का तौरा करना होता था और कभी-कभी तो टहने महीना वह लगातार दौरे पर ही रहते थ ।

एक घाट वर दोरे पर ही थ कि एन महत्त्वपूर्ण घटना घटा । इसका सम्बन्ध उनक कहानो मग्रह क प्रकारान्त से था । जमा हम कह चुके है 'भाजवतन पर प्रिटर और पत्रिणर का नाम नही छपा था । 'नातजुर्वेकारी और प्रस एण्ट व कथाम' म नवावकीयत' म गलती हो गई थी । मजिस्ट्रेट ने इन मूल क लिए एडोटर 'जमाना पर पचाम रुपया जुर्माना किया । सी० धार्द० डी० द्वारा जाँच-पड़ताल म यह भी पता लग गया कि नवावराय ता केवल उपनाम है वास्तव म उनक शिक्षा विभाग क एक सरकारी नौकर घनपतराम है । एक सरकारी मुनाडिम और 'साजवतन जसो मसमूम किताब का मुसनिफ । तावा ! तोवा !' सी० धार्द० डी० की रिपोर्ट ऊपर डिस्ट्रिक्ट कन्कटर तक पहुँची । अब मुनिय प्रेमचन् के अपने दावो म—

एक दिन मैं रात को अपनी रावनी म बठा हुआ था कि मने नाम बिसाधीन का पमाना पहुँचा कि मुझम तुरन्त मिलो । जाहा क दिन थ । साहब दोर पर थ । मैं बजगाही जुतवा और राता रात ताम चालास मील तय करके दूसरे दिन साहब स मिला । साहब क सामन मोजवतन का एक प्रति रखी हुई थी । मग माथा ठनका । उम वकन मैं नवावराय क नाम म सिखा करता था । मुझे डमका कुछ कुछ पता मिन चुका था कि गुफिया पुलिस इन किनाय के लखक की गाज म है । समझ गया उन लोवा न मुझे राज निजाता और उमो की जवाबही करत क लिए मुझे बुलाया है । साहब न मुझम पूछा— यह पुस्तक तुमन लिखी है ?

मैंने स्वीकार किया ।

साहब न मुझम एक एक बगानी का घायल पूछा और घन्त म बियाहकर याम— 'तुम्हारी कहानिया म मिडोपल भरत हुआ है । अपने भाग्य को बगानो कि घघरो समतलारी म हा । मुगला का राज्य हाता ता तुम्हारे दाता हाथ काट लिए जात । तुम्हारी कहानिया एकागी हैं तुमने अमरजा सरकार का तीहीन की है धार्द । जमाना यह हुआ कि मैं 'मोजेवतन' की सारी प्रतिया सरकार क हवान कर द और साहब का अनुमति क बिना कभी कुछ न लिखू । मैंने ममभा खरा मन्न पूरे । एक हजार प्रतिया छपी थी । अपनी मुक्ति म लीनमो बिकी था । साय गातमो प्रतिया मैंने 'जमाना वार्यालय से मगवाकर साहब की मवा म छपवा कर दा ।

मैंने ममभा था बता टन पर । किन्तु घघिकागिया को द्रवनी घायानी म मलाप म हो मरा । मुझे धार्द का मान्य म्प्रा कि साहब ने इन विषय मं द्वित क मय कमपारिया न परामग किया । मुनस्ट्रिक्ट पुलिस दा लिपी

कलकत्ता और डिप्टी इन्स्पेक्टर—जिनका मैं मातहत था—मरी तकनीक का फंसला करने बठ। एक डिप्टी कलकत्ता साहब ने गर्वो से उद्धारण निवातकर सिद्ध किया कि इनमें घादि में अन्त तक सिद्धीगन के सिवा और कुछ नहीं है। और सिद्धीगन भी साधारण नहीं बल्कि महामक। पुलिस के देवता ने कहा— ऐसे खतरनाक भागी को जरूर सत्ता सजा देनी चाहिए। डिप्टी इन्स्पेक्टर साहब मुझसे बहुत स्नेह करते थे। इस भय से कि वहाँ मुझामना तूल न पकड़ ल उन्होंने यह प्रस्ताव किया कि वह मित्र भाव से मर राजनीतिक विधारी की पाह लें और उस कमेटी में रिपोर्ट पेश करें। उनका विचार था कि मुझे समझा दें और रिपोर्ट में लिख दें कि लेखक केवल कलम का उद्य है और राजनीतिक भादोलन से उसका कोई सम्बन्ध नहीं है। कमेटी ने उनके प्रस्ताव को स्वीकार किया। हालाँकि पुलिस के देवता उस वकत भी पतर बदलते रहे।

सहमा कलकत्ता साहब ने डिप्टी इन्स्पेक्टर से पूछा— आपकी धाना है कि वह आपसे अपने लिख की बातें कह देगा ?

डिप्टी साहब ने कहा— जी हाँ उनसे मरी घनिष्ठता है।

आप मित्र बनकर उसका भेद लेना चाहत है। यह तो मुखबरी है। मैं इसे कमीनापन समझता हूँ।

डिप्टी साहब अप्रतिम होकर हकनाते हुए बोले— मैं तो हज़ूर के हुकम

साहब ने बात काटी— नहीं। यह मरा हुकम नहीं है। मैं ऐसा हुकम नहीं देना चाहता। अगर पुस्तक में लेखक का सिद्धीगन सावित हो सके तो पुनी प्रणालय में मुकामा चलाए नहीं घमकी देकर छाड दीजिए। मुह में राम बगल में छुरी मुझे पसन्द नहीं।

जब यह वक्तान्त डिप्टी इन्स्पेक्टर साहब ने कई दिन पाछे लुप्त मुझसे कहा तो मैंने पूछा— क्या आप सचमुच मरी मुखबरी करत ?

वह हसकर बोले— असम्भव। कोई जाल रूप्य भी देना तो न करता। मैं तो केवल प्रणालनी कारवाई रोचना चाहता था और वह रूक गई। मुकदमा अदालत में जाता तो सजा हो जाना यकीनी था। यहाँ आपकी परकी करने जाना भी कोई न मिसला मगर साहब है शरीफ भागी।

मैंने स्वीकार किया— बहुत-ही शरीफ

घनपतराय का प्रतिज्ञा लनी पड़ी कि मातहतन के बाप जो कुछ निर्वये उसे कलकत्ता का निवाकर उनकी धाना लेकर ही छपन के लिए भर्जेगे। सोचा मस्ते छूट गए करना क्या अजब था भाइल की हवा जानी पडती।

घर पर आकर बीबी का मारा किस्सा सुनाया।

गिरानी देवी ने पूछा 'तो फिर लिखना भी अब क्या ही समझू ?'

धनपतराय बोले, 'निसू या क्यों नहीं ? उपनाम रखना पड़ेगा ।'

धनपतराय किन्ती दुविधा में हूँ, इसका पता इस बात से लगता है कि जमाना के माच, १९१० के अंक में उनकी एक कहानी 'गुनाह का अग्निकुण्ड' छपी । इसके अन्त में लेखक का लिया गया नाम था 'अपसाना कुहन' । अग्रज के अंक में सर दरवाजा की पहली किस्त के लेखक का नाम मूल से नवाबराय छप गया परन्तु मई जून और जुलाई के अंक में नवाबराय का नाम नहीं छपा ।

मई, १९१० के एक पत्र में दयानारायण निगम की उन्होंने लिखा—

जसा भाष परमात हैं वसा ही होगा । भर जिस्से अब कही न जाएंगे । मुधाविदा का विक्र मुझे खुद मकरूह मालूम होता है मगर बात यह है कि छोटे किस्सों के गढ़ने में दिमागी उत्सुकन बहुत जयाग होती है । और साथकते कि तबियत की यह भव न हो कि इसस कुछ मुबलिय बसूल होंगे यह उस काम की तरफ रुक नही होती । हक मानिय यही बात है ।

नवाबराय तो शास्त्रिकन कुछ दिना के लिए इस जहान में गय । दाबारा या कहानी हुई है कि तुमने मुजाहिदा में गा अमबारी मज्जापोन नही मिस मगर उमका मतगा हर किस्म की तहरीर में था । गाया मैं कोई मज्जमून क्वाह रिगी मज्जमून पर—हाथीदाँत पर ही क्यों न हो—निसू मुझे पहल यह जनाब पत्र भाव कसकर साहब बहादुर की विस्मय में पग करना पड़ेगा । और मुझे छत्रे-दमाहे लिखना नही पद ता मगर रोज का धम्मा ठहरा । हक माह एक मज्जमून माहब बाबा की विस्मय में पहुँचेगा तो वह समयमें मैं अपने परादे सरकारी में छपावन करता हूँ । और काम मर सर थोवा जाणगा । इमलिए कुछ लिता क लिए नवाबराय मरहूम हूँ । उनके जानगीन कोई और माहय हूँगे । भाष मरा मज्जमून किताबन करान के बाँ मुनी बिरागपत्नी को दे लिया करेंगे । मुधावत्रा की निस्वन जो भावने परमाया वह मुझे मजूर है । मगर मज्जमून जनाब बडा हा कि एक नम्बर में निबन्ध जाण तो मस्त और मगर एक म जयाग नम्बरा में निबन्ध—दा या मौन में—तो उमका धममुडा भव । पत्र में अब रिग रहता ह और पहल भी वह चुना था मगर किना पत्र में पद रिमात भाँने नजरपनाद कर लिया कि यह मुबलियान में अपने तगर क में नही साऊगा । मगर मरहूम जयन क पनमाणात क नजर होग । इगलिण भावने भूतकर मरहूम क बमोतापन मगरदा और तया का रनजाम न भाँ करना पाणि । भाँ इग गत क उगड क त मायूम होगा है कि भाँ कुछ करना पाण है मगर कना नही । ये सब मत्रामान

जिनका भागाज कुण्ड स हाता है और फंदर न चाना ता गायन कुछ
 त्तिना तत्र यह सिनसिना जारी रह जल्द या वलर किस्ता का गहन म
 निकलगे । गगर आप निरानेगे ता चौयाई नफा मरा और मै निकालगा ता
 चौयाई नफा आपका । गोया मरा और आपका इन पर वगबर का भग्निपार
 रहगा । मरा नाता उनसे जमाना म निकल चुकने क दान भी लगा रहगा ।

किताबी की फहरिस्त भशी थी । उनकी कीमत मनजर साहब न न
 लिखी । स्वामी रामताय क लिए मै कश फिक करू । अगर आप इने टकस्ट
 बुक कमना म भेजकर इनाम की म म मजूर करा लें ता मलवत्ता सौ-पचास
 जिले निकलवा सकता हू । आप भव कभी कभी इलाहाबाद की सर करते
 नजर आया करें और इनामी किताबें शाय कवन की फिक करें । मै इम काम
 म आपकी बलभी मुभावितन करने को आमना हू । किताबा की लिखाई शरीर
 मन्दी हा और मजूर हो जाएँ ता कुछ फायद की सूरत निकल सकती है ।

और कहिय क्या खबर है ? वला तो कगाए घातगीन म पडा भुन रहा
 है । इमसान खस की टट्टी तनवाई कि नही ? वाह क्या ठडी हवा है और क्या
 फरानवस्था ! यान स रह पडक गई । बाए वरहाल भाँ कि इम टट्टी की वहार
 से रह हाग ।

मैने मखजन मांगा था वह आपने न भेजा । काई नावन गुन्ही बाजार
 स लिया हो तो वह भी बरग भेजिय । इलाहाबाद की साददरी की निस्वन
 दर्पाफ्त किया था मगर वह भाऊट स्टेशन म किताब नही भेजत । भव की
 इलाहाबाद जाऊँगा तो अपने लुख ज्ञाना को अपने कायम मुकाम बना भाऊगा ।
 वह अपने नाम से किताबें लेकर मेर पास भेज दिया करेंगे । जून म इलाहाबाद
 बनारस वगरा की गरम हवा खाऊँगा ।

असी पत्र म लिखत है

हिन्दी परचा का क्या हथ्र हुआ ? यानी उसकी तजवीब खटाई म पड
 गई या बाकी है ? निकलने वाला हो तो हिन्दी लिखने की भादत ठालू ।

भव की गरस्वती न नारद वगरा पर तीन तसत्रीरें मध्दी निकानी और
 मूरस पर मजमून मच्छा है । आप भी हिन्दी मिस्टरवर पर मजामीन लिखाने
 का ढग निरानिय । मूरज नारायण महर' शायद तिले । और नखदीक व धूर
 की जो खबर हा पास-पडोम की उससे मुत्तिला कीजिय ।

नजर साहब ने अपने रमाले को विसकुल इमलामी ढग पर चलाने का
 बीन उठाना है ।

अगनी कहानी 'रानी सार'घा' जमाना क भगस्त सितम्बर १९१० म म

छपी। मगर इस पर लखवा का नाम नष्टा छया। बबल सबाधिकार सुर्गि लख गल है। मन्दाव इलाहाबाद म बहानी घोर सग छपत। इन पर बबल लिखा जाता। बडी बहान सौफे ख्यवाई सिग लमा घोर गाय बगरज मान्मिन बहानी भी इसी मासिक म छरी।

हम पाठक का ध्यान इस तथ्य की धार भी पीचना चाहते हैं कि मात्र धन पर प्राप्ति उद्योग जाने के बावजूद भी धनपतराय धपना दूसरा बहानी सशक छपवाने क लिए उत्सुक य।

एक बहानी विक्रमान्तिक का तथा जमाना को भेजत हुए निगम को लिखत है— यह किस्मा मित्ताकर मरे पाँच किस्सों का मजमूदा निबालने की काफी ममाला जमा हो जाएगा। अग्निकुण्ड सर (दरवा), मारवा बेगरज माहमिन (जा मदीच म निकलगा) घोर विक्रमान्तिक का तथा। धगर प्राप इस मजमूदा को निबालेंगे तो मैं इसमे बागड घोर लिखाई के मुनमान्मिक त्रिय कन्ड सफ़ा प्राप सजबीज करेगे दुगा। घोर धगर प्राप म्द निकालें तो घोर भी घण्डा। जसा मुनामिब समर्के, करे। मगर एसा हो कि नये सान लक सपारी हो जाए। इस मजमूदा का नाम जगें सब्ज 'साबा है। गाय घाँ जनाब का पमन् घाए। धाम् इनलिए कि मैं नामा म प्रापकी पसन् का कायत हूँ।'

दयानारायण निगम ही ने नवाबराय के जनिगीन का नाम प्रमचन् रया।

धनपतराय न निगम को लिखा— प्रमचन् घण्डा नाम है। मुझे भी पमन् है। धपनाम लिख यह है कि पाँच-स सान म नवाबराय का पनाम हने की जा मन्तन की गई यह मय प्रकारम हो गई। यह ह्जरत किस्मत क ह्पना म्दुन रह घोर घामन् रहेंग।

जमाना के निमन्वर १९१० क म्दक म एक बहानी बडे पर की बगी 'के

१ इस नाम का कोई मन्ग न छया। एम्द इम्तिप कि दयानारायण निगम को 'मोटेकन्' क बारे में पनामन कभी सोहा हा समर हुआ था। काा एम्कदम क्दानम' मिन पन्ना (उद्) में छरी।

२ श्री सुर्गन ने इस क मन्मि-कक में करते समय में निगम का कि धनचन् क नाम से दरी पटना बहानी 'मन्ग' का कर म्द १९०९ का १९१ का कात है। यह धरला एचन है क्व क 'मन्ग' परवता १९१० क कक में छया। उ'गन्' क सुर्गन पान्नी म बहा पना पन्ना है कि प्रमचन् क नाम से पन्ना दरे बहानी 'वह पर की देता' ही क का काजमा दिना का मन्मिब क्दान' में दिने गन् है।

शीर्षक से छुपी। इस पर पहली बार प्रमचन्द का नाम छपा।

बहुत दिना तक प्रमचन्द के उपनाम से लिखे किस्से कवल जमाना ही म छपवाये गए। अन्त में के सम्पादक प्यारलाल गाकिर ने एक बार पृथ्वा कि आप प्रमचन्द का नाम उन कहानिया पर क्या नहीं लिखते जो अदीब को भजते हैं? धनपतराय ने उत्तर दिया— मैं मुनी दयानारायण निगम से वीरदा कर चुना हू कि प्रमचन्द व नाम से किसी और पत्र में न लिखूंगा। विला वज उनका लिख दुखाना मुझे मजूर नहीं।

इसका एक कारण और भी था जा उनके निगम को लिखे पत्र के अक्षर में विकृत होता है। लिखते हैं— भव मुद्द रूपया पदा करने की बातचीत भव की एजुकेगनल गजट इलाहाबाद न जमाना से नकल किए हैं मगर हवाला नहीं दिया। खर। यह जमाना के कायल जरूर मालूम होते हैं। क्या यह मुमकिन नहीं कि आपकी तरफ से मैं उसको लिए कभी-कभी मजामीन लिखा करूं? मर लिए कनक्टर का हर एक मजमून लिखाने की ऐसी बड़ी पक्ष लगी है कि एक मजमून महीना में लौटकर आता है और छठ महीने छपना है। रियासत भोपाल अब जाकर छपा है। मगर एडीटर साहब तबील मजमून लते ही नहीं। मगर आप इसमें कोई अन्न खिलाफ शान न समझें तो मैं कभी-कभी एक आध मजमून उर्दू और हिन्दी में लिखकर आपके पास भेज दू और आप इस अपनी जानिब में इसपक्टर साहब नारमल स्कूल के पास भेज द। यही इस गजट व एडीटर हैं। मेरे खयाल में इसमें कोई हज नहीं है और न कोई कलमी वेईमानी है। इसका जवाब जरूर दीजिएगा।

आप 'प्रमचन्द' का नाम मैं वहाँ नहीं देना चाहता। नहीं मानूँ यह हजरत हाय-पर संभालने पर क्या लिख वठें। इहे किस्मा गो ही रहन दीजिए। बैठे-वठे प्रम और वीर रस के किस्से लिखा करें।

प्रेम और वीर रस की कहानियाँ

प्रमचन्द का नाम म ही कुछ जादू है। कोह काफ की परिचा का हातिम ताई के किस्सों का घोर कारसी साहित्य का प्रभाव जो १६०७ से १६१० तक की निम्नी गई नवाबराय की कहानिया म प्रबन् है प्रमचन्द का उपनाम ग्रहण करते ही यह प्रभ्याय समाप्त हो जाता है। बड़े घर की बटी प्रमचन्द की सर्वोत्तम कहानिया म स है और उस ससार की अच्छी-स अच्छी कहानिया म गिना जा सकता है। बेगरज मोहमिन और माह बेकम (गरीब की हाय) म सामाजिक जीवन विषयतया निघन परतु स्वाभिमानी सागा क जीवन पर रोगनी पडती है। परन्तु इस समय की प्रचिन्नतर कहानियाँ घोर रस की हैं। रटी रानी का जिन्र हम ऊपर क खुब हैं। उसस विन्ति है कि प्रमचन्द (प्रम्र ह्म घनपतराय तथा नवाबराय के नाम स विना लेते हैं) पर राजस्थान क इतिहास का बड़ा प्रभाव था। १६१० के बाल की कहानियाँ हमीरपुर (महोबा) क इपर उपर क धना म प्रचलित कहानिया तथा एतिहासिक घटनाका के आधार पर लिगी गई। गरीब की हाय कहानी म प्रमचन्द स्वय युत्तगण्ड की दा प्रचलित कथाका का ह्वासा दत है। घोर प्रमचन्द की बहुत सी कहानिया म युत्तगण्ड क भूगाम का भी कण्ठ नर्णियाँ पहाडा तथा म्पाना क नाम उगी-क रवा राग लिय गए हैं।

हमीरपुर बिला उत्तर म यमुना नगी स ततर दल्ल म विन्ध्य पहाड़िया तक फना हुवा है। दल्लो भाग म विन्ध्य की छोटी छोटी पहाड़ियाँ हैं जिनक बाब स बनवा घमान तथा बिरमा नर्णिया बहनी हैं। पहाड़िया पर वृक्ष बहुत कम हैं। वर्षा बहुत पोषी होनी है। परन्तु चन्ति राजाघो मुग्रम तथा मरगा राजाघो ने पानी को दकटा करन क मिए जगह जगह बनावना भीने बना जिनक कारण यह तन बहुत रमणीय बन गया। मरावा क पाम एक भीन है जिसका वेग चार भीन है।

हमीरपुर में पाँच तहसीलों हैं। महोबा तथा कुलपहाड़ तहसीला को मिला कर एक सब डिवीजन बनाया गया था। महोबा नगर का विनाश स्थान है। इसका इतिहास भी काशी पुराना है।

बहुत दिनों पहले यहाँ गदरवार राजपूतों का राज्य था। नवीं शताब्दी में चान्नी ने अपना राज्य स्थापित किया। इनकी राजधानी महोबा ही थी। फिर मुसलमान आये। १६८० ई० में प्रसिद्ध बुन्देल सूरमा छत्रसाल ने मुगलों को हराया। बुन्देलों को मराठा सेनापति ने पराजित किया। फिर भोजपुर आये। इतने आतंक के कारण इस डिविज़न में जगह जगह छोटे छोट, विश्व है जहाँ छोटे छोटे राजे अपनी सुरक्षा का प्रबंध करते थे।

रानी सारम्बा का किला घसान नदी के किनारे पर था और यह क्या भी एक बुन्देल राजा की है। राजा हरदोल भी एक बुन्देल राजा की कहानी है। आल्हा कहानी भी चान्नी इतिहास से ली गई है। गरीब की हाथ में एक स्थान पर प्रमचन्द ने लिखा है कि रानी सारम्बा और राजा हरदोल की कहानियाँ प्रचलित हैं। गुनाह का अग्निकुण्ड (पाप का अग्निकुण्ड) राजपूताना के इतिहास की एक घटना पर आधारित है। विक्रमान्तिक का सेगा का सम्बंध महाराजा रणजीतसिंह (जिसकी जीवनी पर प्रमचन्द ने १९११ में एक लख लिखकर जमाना में छपवाया) से है। इस कहानी के बारे में प्रमचन्द ने निगम को लिखा था— यह किस्सा मेरे खयाल में कई महीने से था। मैं अपने खयाल में रवीन्द्रनाथ (ठाकुर) के तब की कामयाबी के साथ परवी की है। मगर बुरी नकल नहीं है। प्लाट विलकुल आरिजिनल है। मैंने तो कई कलम ताड़ दिए हैं। और दस पाँच एक भी काले कर डाल है। मालूम नहीं आपको भी पसन्द आता है या नहीं।

राजहठ में छोटी-छोटी रियासतों के शासन का मजाक उड़ाकर दिखाया गया है कि कोई राजकुमार यदि कुछ करना चाहे तो कर सकता है। मजिसे मकसूद का प्लाट कुछ नहीं है। एक पछात्मक कहानी है। आलिम इ बेगमल में एक पति के छिछोरेपन का मजाक उड़ाया गया है। नमक का दारागा में ईमानदारी के परिणाम पर रोगनी डाली गई है। तिरिया परित्र अमृत अमावस की रात अंधर निगाहे नाज मिलाप का अमीनार, मिक एक आवाज भी इसी समय प्रकाशित हुई।

ममता में लिखा गया है कि माँ का प्रेम क्या कुछ कर सकता है। इसमें ईसाई पादरिया के भाव तथा आध्यात्मिक के प्रचार की ओर संकेत भी है। विक्रमान्तिक का सेगा कहानी के सम्बंध में एक पत्र में प्रेमचन्द ने निगम का

गिया— रामारण का लन मुझे उम वषन मिला जब ड्रामा निम्नने क लिए एक हफ्ता की माहसत भी न थी। कुजा में घोर कुजा ड्रामा। गाना बिलकुल नया जानता। घगर का गाना (गिलाव) ता में भवन विप्रमार्त्य का गगा का ड्रामा बना सकता है।

इसी पत्र में आगे खबर एक वाक्य है— क्या नायक गुरु कर दिया है मगर इसक लिए राजस्थान के मुनलिया की जरूरत है। (यह पत्र १९१० के मार्चिरी खरण का है। विप्रमार्त्य का गगा जनवरी १९११ के अंक में छपा था)। इसका सकेत शायद 'जबबा-ए इंसार की घोर है। इस १९१२ में इंडियन प्रेम, इनाहावा न छपा था। इस नायक के बारे में कुछ चिंतन से पहले हम सामयिक नायक के सम्बन्ध में प्रमचन्द के विचारों के बारे में कुछ कहना आवश्यक समझते हैं। इस सम्बन्ध में हम पृ०२० के अगस्त १९१० में 'परीष' में 'उद्गु जवान घोर नायक के शीपक से छप एक लय के कुछ भाग उद्धृत करते हैं।

घमी बहुत जमाना नहा गुडघ कि उद्गु जवान में नायक नवीनी घोर नायकवाना का धूम थी। प० गलनाथ भरणार मोसवी धरुम हसीम धारण मुनी भागिक हुसन घीर हवीम मुहम्मद घली य रसमगराभी उही गिना का था है य लोग इस मनके धरुम में पगरो का नाम कर गए। (क्योंकि उद्गु दुनिया के लिए नायक एक धरुना खीर थी)

रेनाल्ड के नायका का जिक्र करते हुए जो हाथा-हाथ चिंतन से प्रमचन्द लिखते हैं— हर कसे नायक न नायक निम्नना गुरु किया। मृत घोर बॉलिवुड के तुलना घोर नायकी लिमाचन के लोग, जिन्हें सी पचास अगपार या हा गए कम से कम कर गए घोर ममी शायता गुरु कर दिया। कई-कई मर्के मक बमर पर की बकबात के बाव बावारी हुल्ल घा इक का किम्मा छुट दिया। गरर घोर भरणार के सिवा करीब-करीब ममी ने मही लख धरुनियार किया धरुनियार नायका की लयी धरुनियार हा गर् कि पड़ने वाल लगे धा गए दगने नायका का बाजार मर हा गया। हजरत गरर न किम्मा मिलना बा कर दिया मुम्भय घमी माहव न किमाना निगारी का मर बा कहा धात्र काई मुमलिफ एसा नहा है जिम हम गुगुनियल से नायकियत कर लख

गुजरात घोर बगावत में नायका की शूर रोड-बरोड बयाग हाती जाती है। मगर उद्गु (जिस जवान के नामसका करीब म है) का कल्पित इसक चिंतन का अर्थ है। धात्र गरर के नायक बन कम पड़ जाते हैं गनाइ के इतरन की लय मरुत कम किमी का निगाह पड़ता है निमाना-ल धावा

की भी आज इतनी कदर नहीं है जितनी आज स वईनात पहलवी इसलिए जहरी मामूम होता है कि सरद बाजारी व बारही धमबाव से कितानजर करके मानवी धसबाव बुँदने की कोणिग की आण ।

अफसाना उवाँ तवके की तागान दो बडे हिस्सा म मुनकमिम की जा मक्ती है । एक आमियाना मजाक वाल घौर दूसर सजीश मजाक वाल । उदू नावल इन दोना का मायूस करता है उदू का वालस डिवस मौजूद है मगर उदू का धकरे चालम रीह मरी बारेली जाज इनिपट अभी वजू म ननी धाय उदू नावल नवीसी अब तक वजूज मरधार के तकरीधन मय मुमलमान थ । घौर उन्होंने अपनी कितावा मे इस हिन्दू जजवा की मुतलिक परवा न का जा मुमल मान हीरो घौर हिन्दू हीरोइन के ताशुक म पदा हाना है नावला की इस कगाना बाजारी का मर मक्दम करने क लिए हम तयार हो जाते मगर इसका असर हमारी नावल नवीसी व मयार को ऊँचा कर देता मगर किसाना नगार तवाए इसाना व सच्च नमून पेग करन लग । वन्विस्मती म इसका असर नावलों को मुस्क म्म की तरफ ल जा रहा है । १६ ६ क उदू मवदूमात की फहरिस्त दग्ने से मात्रूम होता है कि इस सवा म सिफ दो नावल शायो हूण । जरूरी मामूम होता है कि उदू जवान के सोनाई और मुदाकनीन इस सगाल को दूर करन की कोणिग करें कि नावल पठना सगव महज और ससनीह धीकात है अरबी दुनिया म विस्सा का वही रूपया है जा किसी मेहफिन म सवरे मञलिस का । किसी जवान का अर्थ ल लीजिए अफसाना का रग गालिय आणा

गुजराती बंगाली क नावल का हवाला भेते हुए घौर आन तक की उस किताव का जिसम उहोने मी सर्वोत्तम पुस्तको का बखान किया है हवाला देते हुए प्रमचन् लिखते है कि केवल अमीर लोग ही तारीख राजनीति पल सफा इतिहास हिसाब का अध्ययन कर सकते हैं मगर आवाणी का बहुत बडा हिस्सा वही है जिम चौबीस घण्टो म से बारह घण्टे फिक्रे मुघाग की नजर करने पड़त हैं । ये गरीब मा तो नावल पढ सकत है या कुछ भी नहीं पढ सकत

मन का अन्तिम भाग इस प्रकार है— नावल नवीसा को भी खयाल रखना चाहिए कि उर्दू नावल का मुस्तकबिम उसक हाय म है । उह उस्तादाने फन की ससानोफ का गौर करना चाहिए । उनका फरज है कि सवा इसानी का नजर घायर से मगाहण करें और सच्चे जजवात क नमून पेग करें । पख्लक का मदबी मयार रोज-बगोज ऊँचा होना जाना है और अरेबी तालीमयाफना लोग अपनी जवान म नी वही छुविया देग्ने को मतना हैं जिनकी उनकी निगाह हो

रही है। बन्निगा म ज़िदत खयालात म ताजगी जज़घात म प्रमक अर्थ नावन क ज़रूरी लकाजम है। बँगला जवान क नावला का मुतलिया उनक लिए बहुत सबके प्रामोद साबित हागा। नावल लिखना प्रामान काम नहीं। दायर किसी मर्फे प्रम म इस कदर जबर खयाल। इस कदर दिमागी इतहमान और इस कदर तखययुल की ज़रूरत नहीं हाती। उम्ह रातें खयाल म डूबकर नाप्नी हागा। उम्ह सुबह गाम तनहापुर फ़िजा मकामात की तर करनी हागी। उम्ह इस्तजा इनीम के बसाम की खुगाचीनी करना हागी। तब नहीं उनक बसाम स पुरखार नावल निकलेगा। अब बहु उमाना नहा रहा जब पलिक वेन्गिनाता नागिगा से प्रामूना हा जाती थी। पलिक का नुक्ता निगाह अब पुखता होता जाना है। हमार नावल नवीम अगर जिन्ना रहना चाहते है तो उम्ह जमना क माय काम बढ़ाना चाहिए।

उद् उपन्यास की १९१० की परिस्थिति तथा प्रमचर की (नावल क बारे म) राय का जिक्र कर हम प्रमचर क भगल उपन्यास जलवाय ईसार का परिषय दते हैं। उस सय के छपने क समय हा प्रमचर ने छपना नया उपन्यास लिखना प्रारम्भ कर लिया था। इयम राजस्थान या नसर इतिहास की मार भणक ना नहीं मिलती, परन्तु यह उपन्यास १९१२ म इडियन प्रस दलाहाबा स प्रकाशित हुआ और इस पर सचक का नाम 'नवाबराय ही छया। मम्भव है इसका उम्हाने स्वय इडियन प्रस क मनजर की लिया हो और 'नवाबराय क नाम पर प्रतिबंध लगन का जिक्र न किया हा। यदरहान यह उपन्यास नवाबराय क नाम स छया हुई छाछिरी कृति है।

इय उपन्यास (जसका-प-रुमार) ने प्रारम्भ म ही मुषामाप्की म यर गान मांगती है कि वह उन एष सपूत मटा दे। सपूत कौन होना है ?

'जो कुस का नाम रोगन करे ?'

'नहीं।'

१ प्रमचर के पुत्र अमृतराय ने लिखा है कि उन्हे जहाँ तक मारुन हुआ है प्रमचर का पदना उपन्यास 'शरमा' का जिनका इ गी गता का विनिर्दिष्ट क अन्वयार्थ म सुक रगना कान्य है। त्रिगुणल गौरी न कानना पुत्रक 'प्रमचर' में लिखा है कि प्रमचर का पदना उपन्यास 'शरमा' का। जसका-प-रुमार का इतिहास प्रमचर है। इया नावन में इस मुशाना का पद नाम विद्वर रथा कता ?' म म निरु है। ए मम्भव है कि प्रमचर ने, प्रिया उम्हाने लिखा है इय उपन्यास का रूपरेखा कान बन कता था हा की १९१०-११ में इया के विद्वर क को 'जसका-प-रुमार' क नाम से छया हा। एवम यह कि प्रमचर म प्रमचर काने कानना क नाम इतिहास पर गता के नीचे प्रमचर लिखता।

जो माँ बाप की सेवा कर ?

नहीं।

जो विद्यावाँन हो और बलवान हो।

नहीं।

फिर सपूत बेटा किसे कहते हैं ?

जो अपन देग का उपकार करे।

प्रतापचन्द की माँ पति की मौत के बाद पुत्र को गरीबी में पालती है। पुत्र का उसी घर में रहने वाली एक लड़की ब्रजरानी से प्रेम हो जाता है परन्तु ब्रजरानी का विवाह एक शाइख़त घर के निखटद लड़के से हो जाता है। ब्रजरानी का पति एक हादसे में मर जाता है। प्रतापचन्द सपासी बन जाता है। देश के उपकार काय में इस लगन से लग जाता है कि उसकी धूम मच जाती है। ब्रजरानी बानाजी (प्रतापचन्द) की प्रशंसा और सम्मान देखकर बहुत प्रसन्न होगी है और कविता निम्ननी है।

आज पचाम षष वाल 'जलवा ए ईसार' को किनी भी दृष्टि से उत्तम उपयास नहीं कह सकते परन्तु १९१२ में जब यह प्रकाशित हुआ था उस समय यह उपयास सारी कमजोरियों के बावजूद एक नई धीज था। अदीब (मार्च १९१३) ने इस मुशी नवाबराय का थोरिजिनल और अछूता नाबल बननाया और कहा कि आपकी तसनीफात हम खुर्माओ हम सबाब सोजवतन किगना बगरा इसमे पेशतर मुल्क में इतनी गोहरत हासिल कर चुकी है कि ज़रूरत नहीं कि आपकी निस्वत कुछ और लिखा जाए।

जमाना की आलोचना अदीब की आलोचना से थोड़ी भिन्न है। इसमें आलोचक ने जो लेखक का नाम गलती से नवाबराय की जगह नौबतराय लिखा है (नौबतराय के नाम के भी एक और लेखक जमाना में लिखते थे) नवाबराय की नई पुस्तक की घजिज़्मा उबाई मगर एक इतनी महत्वपूर्ण बात लिखी कि हम आलाचना का एक अंग उद्घृत करते हैं। 'मुशी नवाबराय साहब मुग्निक सोजवतन किगना बगरा का यह पुरमुल्क नाबल बहुत-से अखलाकी व मुप्राधनी तिलधस्पिया का गुजीना है जो इदियन प्रस इलाहाबाद में शायद हुआ है। हुम्न आ-इस्क की चागनी के साथ साथ इसमें ईसार नपन और हुम्नुनवतनी का जजवा भी मौजूद है। और दरहकीकत नाबल का माहिसल भी यही है। पहल ही सीन में सुवामा दबी से एक सपूत देग माँगती है जो अपन देग का उपकार करे। एक आहिन औरत की यह इस्तदा किस कदर मुवारिक है जिमकी खुद देवीजी ने गान दी है।

प्रतापचन्द नावल का हीरा है जो मुवामा की स्वाहिया के मुताबिक मजूम निरन्ता । विरजन का हम दास्तान की हीराइन कह सकत है जिनमे बाउक एक दूसरे सह्य के साथ गाने हान के भी प्रताप की उस मुहब्बत का एक प्रतापिया जो दोनों में बचपन में पंग हो गई थी । नावल का यह हिस्सा बहुत सिलबस है और पाक मुहब्बत के जज्बात एक छाम सिलकशा रखन है । नायक अफसाना नबीस ने अन्कलाज की सहर्त्ताजी से सारा दास्तान का निरन्ध बनाया है । लेकिन प्रताप के दश उपकार का दास्तान इस कदर मुग्धसिर है कि दासी बताने सफाहात की हुआम किताने में सना हाना-न हाना यकसाँ है । ऐसा मानूम हाता है कि मुगलिक ने अपने नावल के इनगई अचवाय कायम करन ही में सारा जार तबोयत खत्म कर दिया और अखिर में आनामा प्रतापचन्द के उस उपकार के कारनामा को अमनी तीर पर हम कदर बयान करके नाजरीन का टाल दिया कि उहने गोगाल और अजुन मभाण कायम की । अहनी दंग उपकारनी सरगुजारिमा उपाय तकसीय चाट्टी थी जिनका इपनसार हम नावल की बहुत-सी खबिधा के रागन नहीं हान देना । विरजन बहुत अल्पी बना ही गई थी । और वरु प्रताप की मुहब्बत में मरसाँ तीर पर सरगार रही । लेकिन अखिर में माधुगी भी एक उपाय करेकर है जो प्रताप के रंग में सरगार हाकर जागन हो गई और अन्न भर एक मनवाली जागन का हसियन से दरखर की याक छानवी रही । अफसोस कि ऐंग उपकार की तरह यह दास्तान भी निहायत मुहब्बत है जिनमें किस्म का मजा विरकिरा हा जाता है ।

माधुगी के इकम एक और नुबत भी नजर आता है । याना यह आह्लासा थी और प्रताप गानिबन कायम्य या कयाकि उसके मानि का नाम मुगी मानगराम बनाया गया है जो साधुसा और आह्लासा के पका मुमकला थ । इस मूल में माधुगी का शानी करन का खवाल ही बना पंग हुआ ? अगर विरजन की तानीय ने उंग उपाय रागन खवान बना दिया था और मुगलिक के अंग इटरमरिज के ममसा पर रागना हावना थी ता अह्तर हाना कि दाना का अन्न करत सिस जाता अगर आमाजी मदन उन उन्न ताकतु सुनिवा रत और माधुगी की तरह खिन्नी बगर करत रहे त्रिगत इस मनता की ताकत नू हाता । अहनी काबिन मुगलिक का पद इत्याद कागिन बना रंग है कि एक सिलक बहुत नाबनिस्ट हाये कयाकि इन गपवाय के मुकाना दर भी अन्व-अन्व गुरिना मान की अह्तरनीन गगानीक में गुमार हान के काबिन है ।

जनवा ए ईसार १९१२ म एक नई चीज था। देश प्रेम स्वाभिमान दंगोपकार इत्यादि इन सब रसों से भरपूर है। विन्गी शासन पुलिस की क्रूरता तथा हिंदी भाषा के बारे में भी इधर-उधर जिक्र है।

एक समालोचक के मतानुसार बालाजी (प्रतापचन्द) का करेक्टर विवेकानन्द के साथ में ठला है। जसा कि हम पहले कह चुके हैं 'जमाना के मई १९०० तक म प्रमचन्द (नवाबराय) का विवेकानन्द पर एक लेख छपा था।

जलवा-ए ईसार की भाषा हमसुमा ओ हमसबाब तथा मोजबतन से भिन्न है। फारसी के शब्दों की जगह प्रचलित हिन्दी या संस्कृत के शब्दों का अधिक प्रयोग हुआ है। इसका एक कारण तो प्रेमचन्द पर भार्यममाज का प्रभाव था। वस ता हमसुमा भा हमसबाब का पहला दृश्य भी धायसमाज मन्दिर में एक लकड़ से सम्बन्धित है। धनकधारीलाल प्रमचन्द के प्रवक्ता ही हैं। परन्तु महोबा के क्याम (१९११-१४) में प्रमचन्द धायसमाज के धीर भी निकट आ गए। महोबा तथा निकट के क्षेत्रों में ईसाई पादरी गरीब लोगों को बड़ी तजी से ईसाई बना रह थे। इसको रोकने के लिए धायसमाज ने भी अपने प्रचारकों को वहाँ भजा। १९१२ के मध्य में एक प्रचारक (मौनवी अलिम फाजिल) महंगप्रमा तथा उनके दो साथी महाबा पहुँच और प्रमचन्द के घर पर ही ठहरे। उन्होंने लिखा हम तीनों का सत्कार उन्होंने निरन्तर सात-आठ रोज तक जिस प्रेम के नम्रता के साथ किया उसको हम कभी नहीं भूल सकते। प्रमचन्द तथा तीनों प्रचारक साथ ही भोजन करते और विविध विषयों पर बातचीत भी करते। विषय—(१) महोबा से सम्बन्ध रखने वाली ऐतिहासिक बात (२) ईसाई पादरियों का महोबा ही नहीं हमीरपुर जिले में काम—प्रमचन्द के अनुसार यह हमारी सामाजिक त्रुटियों का ही फल है कि महोबा अथवा बुन्दलखण्ड के स्थानों में हिन्दुओं के अनेक सड़की नहके ईसाइया के घरों में पहुँच जाते हैं। (३) धायसमाज और उसके कार्य-सम्बन्धी बातें।

अपनी कहानी खूब सफ़्त में प्रमचन्द ने लिखलाया है कि जब ईसाई पादरी एक गरीब किसान के सड़के को लालच देकर ईसाई बना लत हैं तो उनके बीच में रहकर उसमें कितना परिवर्तन था जाना है। परिवर्तन उस ही में नहीं उसका गाँव मात्रा में भी आ जाता है क्योंकि जब वह धायसमाज सौन्ता है तो गाँव नाम उसमें छूमाछूत करते हैं जमे उसका खन ही सफ़ हो गया हा।

पत्रकार बनने की इच्छा

सोडवतन के बारे में हुई कारवाई से प्रमत्त बड़े शुरुय थे। प्रमत्तों के विकट उन्हें जमे पुराना भी हा गई थी। एक बार जब निगम ने कुछ प्रमत्त हाकिमा को एक लडकी की गानी के घबसर पर अपने घर बुलाया तो प्रमत्त ने निगम को लिखा कि आपने प्रमत्त हुकराम की आवत नाहर की। बाबिर इससे क्या फायदा समझा? निगम स्वयं लिखत हैं— जहाँ तक मैं ममभता हूँ यह खयाल उनके सहन नहीं हो रहा था कि जब प्रमत्त हम हिन्दुस्तानिया से बिलकुल घबरा घबरा रहत हैं तो हम सोगा का भी उनसे दूर ही रहना चाहिए। बीबी सुन्दरी ने यह बड़े हासो के घोर घबराई जिन्गी के इन्तर्द जमान में सरकारी प्रकृषरान ने उनके साथ जो नामुसिफाना करताव किया उसका असर उनके दिल में अभी जाइल नहीं हुआ। सोडवतन के मुनसलिनक हुकराम को कारवाई समायर बड़ा थी क्योंकि उनका बाइ किम्मा संमान था जिस पर उनके गिलाफ कोई कानूनी कारवाई की जा सक्ता।

प्रमत्त सरकारी बीबी छोडकर किसी घनकार में काम करने की बात माचते थे। एक बार निगम के प्रवय घनकार के स्टेशन में जान की बातचीत घनी। निगम ने प्रमत्त का घनकारा घोर उनसे पूछा। प्रमत्त का उत्तर मतिण—

प्रवय प्रमत्तकार का मुघामल (म) क्या जवाब है? उनकी पत्नी यह है कि यहाँ नेत्र घामानी घस्सा में हिमी लग जाइल नहा है। दोरे का रक घोर मुमतिमा की तनकरा तमय गाबिन नहीं है। करीब इगोब घनी ज्ञानत घनी भी थी। घोर घमतिण घमत्तूर। मगर काम में बड़ा फल है। यहाँ (मक इन्सुगे इगवकरी में) घटन घाहा है। घमत्तूर गनामी के पंदि कार घकमर तन पर नहीं रक्ता घोरन कोई जवाब नहीं है। इमतिण घाडानी-मा मान्य हाती है। टन बत्र में पंदि बने की हाबिरी निर्माणी काम रोजाना घमत्तूर ओ रीर जाता है। हिमत्त नहा पडता। यहाँ मिटरगे करद बमत्तूर-त-तपरीह है। यहाँ यह

जरवा १९१२ म एक नई चीज था। जेग प्रेम स्वामिमान दसोपकार इत्यादि इन सब रसों से भरपूर है। विन्गी शासन पुलिस की क्रूरता तथा हिन्दी भाषा के बारे में भी इसमें उधर त्रिक है।

एक सवालोकक के मतानुसार बालाजी (प्रतापचन्द) का करेक्टर विवेकानन्द के सचि में आता है। जसा कि हम पहले कह चुके हैं उमाना के मई १९०८ तक प्रमचन्द (नवाधराप) का विवेकानन्द पर एक लेख छपा था।

जलवा-ए ईसार की भाषा हमसुर्मा ओ हमसबाब तथा मादबतन से भिन्न है। फारसी के शब्दों की जगह प्रचलित हिन्दी या संस्कृत के शब्दों का अधिक प्रयोग हुआ है। इसका एक कारण तो प्रमचन्द पर धार्यसमाज का प्रभाव था। जैसे तो हमसुर्मा ओ हमसबाब का पहला दृश्य भी धार्यसमाज मन्दिर में एक लकवर से सम्बन्धित है। धनवधारीनाथ प्रेमचन्द के प्रवचन ही हैं। परन्तु महोबा के वषाम (१९११-१४) में प्रमचन्द धार्यसमाज के धोर भी निकट आ गए। महाबा तथा निकट के क्षत्र में ईसाई पादरी गरीब लोगों का बड़ी तेजी से ईसाई बना रहे थे। इसको रोकने के लिए धार्यसमाज ने भी धनवधारीनाथ का वहाँ भेजा। १९१२ के मध्य में एक प्रचारक (मौलवी आलिम फाजिल) महेशप्रसाद तथा उनके दो साथी महोबा पहुँचे और प्रमचन्द के घर पर ही ठहरे। उन्होंने लिखा हम तीनों का सरकार उन्होंने निरन्तर साठ घाट रोख तक जिस प्रम से नम्रता के साथ किया उसको हम कभी नहीं भूल सकते। प्रेमचन्द तथा तीनों प्रचारक साथ ही भाजन करते और विविध विषयों पर वास्तविक भी करते। विषय—(१) महोबा से सम्बन्ध रखने वाला ऐतिहासिक बात (२) ईसाई पादरियों का महोबा ही नहीं हमीरपुर जिले में काम—प्रमचन्द के अनुसार यह हमारी सामाजिक श्रुतियों का ही जल है कि महोबा धरवा बुदलबण्ड के स्थानों में हिन्दुओं के अनेक लड़की-लड़क ईसाईया के धरो में पहुँच जाते हैं। (३) धार्यसमाज और उसके काम-सम्बन्धी बातें।

धनवी कहानी शुरू सफ में प्रमचन्द ने लिखलाया है कि जब ईसाई पादरी एक गरीब किसान के लकवे का आनव देकर ईसाई बना सेते हैं तो उनके बीच में लकवर उसमें कितना परिवर्तन का आशा है। परिवर्तन उस ही में नहीं उसका गौरव का नाम भी आ जाता है क्योंकि जब वह वापस आता है तो गाँव वाप उससे छुड़ाछूत करते हैं जैसे उसका लन ही सफ हो गया हो।

पत्रकार बनने की इच्छा

सोझवन के बारे में हुई कारवाई से प्रमचन्द बड़े सन्म्य थे। प्रपञ्चों के विरुद्ध उन्हें जैसे घुणा-भी हो गई थी। एक बार जब निगम ने कुछ प्रपञ्च हाकिमों को एक सटकी की गाड़ी के घबसरे पर घपन पर बुलाया तो प्रमचन्द ने निगम को लिखा कि घपने प्रपञ्च हुक्काम की दावत नाहक की। आखिर इतने बड़ा कायना समझा? निगम स्वयं लिखते हैं— जहाँ तक मैं समझता हूँ इतने बड़ा कायना समझा? निगम स्वयं लिखते हैं— जहाँ तक मैं समझता हूँ यह खयाल उनसे बहान नगोन हा गया था कि जब प्रपञ्च हम में दुस्तानिया से बिलगुल प्रलग-पलग रहते हैं तो हम लोगो को भी उनसे दूर ही रहना चाहिए। बीमो सुन्दारी के वह बड़े हामी थे और प्रपञ्चों के इच्छाई उमान में सरकारी प्रकषरान ने उनके साथ जो नामुसिफाना बरताव किया उमका प्रसर उनसे मिल से बीमो जाइल नहीं हुआ सोझवन के मुनप्रलिनक हुक्काम की कारवाई समग्र बजा थी क्योंकि उमका कोई किम्सा लेमा न था किम पर उनके खिलाफ कोई शानुनी कारवाई की जा सकती। प्रमचन्द सरकारी नौकरी छोड़कर किसी प्रपञ्चकार में काम करने की बात सोचते थे। एक बार निगम के अध्यक्ष प्रपञ्च के स्टाफ में जान की बातचीत होती। निगम ने प्रमचन्द का बतलाया और उनसे पूछा। प्रमचन्द का उत्तर सुनिए—

प्रमचन्द प्रपञ्चकार का मुसामल (म) क्या जवाब दें? मानो पदार्थ यह है कि यहाँ नट घामन्नी प्रसना ग किमी तरह जाइल नहीं है। और का प्रपञ्च और मुलाजिमा की कतनाइत इमम गामिन नहीं है। करीब करीब यही जालन वहाँ भी थी। और ममारिक वगैरह। मगर काम में बड़ा प्रपञ्च है। यहाँ (मब इन्फुरी इन्फरकरी म) बहुत घाश है। घाबकू गनामो के चूकि काई प्रपञ्चर सर पर नहीं रहता और न कोई बचावनेही है। इमनिण प्रपञ्चान्नी मानुम हानी है। दम बर मे पाँच बर की हाजिरी निमानी काम रोबाना प्रपञ्चकार जो हाँप जाता है। इमिन नहीं पदनी। यहाँ मिन्करी काम बमबना-नपरोह है। यहाँ यह

मभाग हो जाएगा हलांकि छूटव की पहाइ और आइया जिन्गी की रफतार ब खयाल स यह मौका बुग नहीं है मगर काम का कसरत इरादा का मुम्तविल नहा हान दना । बहरहाल मैं अभी दुविधा म ह । मगर मौका मिल तो आप प्राशादर स जिक कीजिगा । उस वकन तक गायन राग्य किसी तरफ जम जाए ।

इसी पत्र म नित्रन है— मने किसस क मजमूए का खयाल रविएगा और जब आप प्रबध प्रखवार म पहुँच जाए उस वकन इस निकालने की फिक करना मुतामिय हागा । मुमकिन है आपका प्रबध प्रखवार म पहुँचना मर लिए कोई बहनरी की सूरत पदा बने । क्या जरूरत है कि मैं अपने खून जिगर (या उगलियों स निकलने का न कतरा ए खून) को किसी गर जगह फेंकू । मगर अपने घर म कद्र हा तो क्या दूसर का स्तनगर हाऊँ ? हलांकि मैं हमदन का कोई आद्या किस्सा नहीं लिखा ताहम मगर उनक लिए और कोई गुजाइग हाती लो मैं वहाँ न देता । हाँ उसारा न होना चाहिए । आपके पास ईश्वर न चाहा तो परसो किन्मा पहुँचगा इसी पत्र म आपने मरी तनकवाह बढा दी । इसका मशहूर है क्याकि यह प्राइवेट ट्यूगन है । अब मुझे आठ रपय माहवार मिलेंगे ।

'जमाना म ता प्रमचद' का चुट ही स दिलचस्पी थी । वह चाहते थे कि यह मासिक एक इतनी महम पत्रिका बन जाए कि उसका खूब नाम हा ।

मरी दोस्ताना सलाह यह है कि आप माहन रिष्क की जगह मनीब की सेन दीजिए और खुद जिन्दुस्तान रिष्क की जगह लीजिए । निगम चाहत थ कि मनीब की तरह 'जमाना म भी तसबीरों हा । प्रमचद न लिखा— अपनी हार मान लेने म बराई नहीं है । आप इंडियन प्रस के वनाइल कहीं से गालेंगे जमाना की सूवी मजामीन पर हाना चाहिए मवाबीर पर नहीं ससाबीर की निकामत कागज और छपाई की इमलाह म सफ कीजिए और मौजूदा ममाइल पर मजामीन लिखान की फिक काजिए । धामू क बिल पर कोई मजमून न निरला गायन क बिन न कहीं तक तरकजी की मुहम्मदन युनिवर्सिटी की कान्ट्रीट्यूगन वगरा मसले पर कुछ होना चाहिए था । मसलत यह है कि 'जमाना' अपटुटेड पालिटिकल वेपर हा । जोक पर भाषा परचा भरना मैं अच्छा नहीं समझता । हम जोक का रोना राने स क्या मिन जाता है ? जोक क नाम पर रान बाल बहुत है । यह काम मदीब का करन लीजिए और आप इमम बहतर काम म मसरूप हो जाइए ।

जब १९१२ म दवानारायण निगम न 'जमाना मासिक' क घलावा एक उदु मासाहिक और भागे चलकर दनिक भी निकालन का फमला किया ता प्रमचद न निगम का लिखा कि हपनावार कामरद क नमन का होना

चाहिए मगर पातिसी हिंदू। अब मेरा हिन्दुत्वान्ता कीम पर एतकाद नहीं रहा और उसकी कागिश फिजूल है।' प्रेमचन्द न माष्ठाहिक का नाम भी हिंदू रखने को कहा था। यथाकि 'हिन्दू' नाम का काइ पर्चा पत्राव से निवमने लगा था इसलिये दूसरा नाम रफ्तारे जमाना' तजवीज हुआ।

घापन भी तो यही नाम पसन्द किया था। नाम तो यही रखिए मुझे यकीन है कि एक हिंदू पर्चा जिसका प्रच्छा कागज हो प्रच्छा छपाई हो उसक लिफ काफ़ी गुवाइश है। हमारी यही कोशिश होगी कि उर्दू परचा म 'रफ्तारे जमाना' एक ताकत हो जाए। उसका राया का दूसरे प्रखवार इकतवास करें।

प्रेमचन्द निगम का सहायता करने को तत्पर थे। घाप तनहा एक प्रसिस्टेंट की मन् से हफ्तावार प्रखवार इसी हालत म चला सकेंगे, जब कलम को रयाग रवा बनाएँ। मैं हफ्तावार एक को सफ बिजाना-नाशा घापकी खिदमत म भेज दिया कख्या कुछ ना हगे उन पहा तो कोई एडीटोरियल कभी किसी मजमून का सर्जुमा कभी कुछ। ई-वन् का नाम संकर शुरू कीजिए। मुभम जो मदन हो सकगी करता रहूँगा। फितहान मेरी हालत मुझे इजाजत नहीं देती कि कुछ ईसार कर सकूँ। यकीन मानिए, घापसे यमिन्दे लिख कहता हूँ कि जब से यहाँ घाया ह, निफ थो मो रुपये भर पास जमा हुए हैं। और वह भी मो रुपय नावल का मुयावजा है और मो रुपये म कोई तीस रुपये इब्दिम प्रम से दिन। घापन तीस या पैंतीस रुपये घापने दिय और इमी कद्र 'एजुडेसनल गजट' से मिला। मरी तनरुहाह और भले म कौड़ी की बचन नदा हुई। हाँ, यथन कहिए तो कमाई कम्पिए तो बीबीकान की बरमा की खिद पर रफा गिरायन के निग एक बडा बनवाया जिसका मन्मा अब तक न भूला। हम विरत पर मैं क्या ईमार करूँ? माठ रुपय तनरुहाह है आयोग रुपय का मोनत। और नहीं मानूम यहाँ कातपुर क मुकामदे क्या लच बढ़ गया है। यहाँ आमीस रुपय म गुजर हो जानी थी यहाँ उनक दुगुने म रोना पटा हुआ है और बढ़ हुए प्रगराजत का मोइना मुक पर मो नहीं दुगरा पर मितम होमा और ए माठ प्रगवार की हालत देगकर बा को पगला कर सकूँगा कि मेरे निग कीन-शा रागना रयाग भीया है। यहाँ न रगमत तकर असा घाऊगा और त्रिय क महलत और कोगिग दरवार हाया उमनें दरेश म करेगा। क्या प्रख है मैं प्रगवार का बना सकूँ? प्रगर ए माह क बा प्रगवार कुछ ने निरुता, तो मैं हाप-वर प नाऊगा बरना घपना मा मुह मेकर घपने पुरान करे पर अपूगा। प्रगर मा घप मे कम पर मेरा गुबारा नहीं हो सकता। यद् मापनाई घापको घपना दोस्त प्रमन् और भा मम-नगर कहता हूँ। मैं

काम से जी नहीं चुराना । न इस ऊद्र मुतालिबा चाहता हूँ गोया मैं कही का बड़ा मुशी-ए विचार हूँ । नहीं सिर्फ गुजारा चाहता हूँ और गुजारा साठ रुपये में कम नही हो सकता । दूसरी बात आपन जमाना अब तक निज के तौर पर चलाया है । इसका खर्च और आपका जेब-खर्च दोनों एक ही मर् में गुमार होत रह जिसकी वजह से भक्तर परेगान होते रह । आपन अपना जाता खर्च बहुत बढ़ा लिया है । साफगोई के लिए मुआफ फरमाइयगा । रफ्तारे-जमाना का मुआमला निज का मुआमला न होगा । इसका हिमाब किताब और खर्च मयका मद आपके जब-खर्च से विलकुल भलग होगा । इन्ही उसूला पर काम चल सनता है भखराजात की तफसील जो आपने दी है वह में पल भी देख चुका हूँ । बहरहाल मैं काम करने के लिए तयार हूँ ऊपर लिखी हुई गतों पर और उस हालत में जबकि माली हालत मुस्तकिल हो । और मैं किराये का टट्ट बनकर काम न करूंगा बल्कि सच्चे जोश से । या तो आप अभी मेरी जिदमत तलव करें या जब भखबार की हालत कुछ मालूम हो तब ।

इसी प्रकार कई बार बातचीत और खतो किताबत भी हुई । १२ निसम्बर, १९१२ का साप्ताहिक भाजान निकला । फिर इसे दैनिक बनाने का विचार हुआ । एक बार छुट्टियों में प्रमचन्द जानपुर गये । उनका खयाल था कुछ फसना हो सकेगा पर वहाँ इस बारे में कोई बात न हुई । छुट्टियाँ खत्म होने पर प्रमचन्द अपनी नौकरी पर वापस लौट आए । निगम ने बुरा मनाया । जली भुनी लिखी । प्रमचन्द का उत्तर सुनिए—

भताब नामा जिसे आपका इनायतनामा कहना चाहिए वसूल हुआ । कई दिन हो गए । सोचता रहा किन सपना में जवाब दूँ । कैसे गुस्ता उठा करूँ । कुछ भखल ने काम न किया । न शेर घो-शापरी से मस है कि दो चार बढ़िया शेर पसपा कर दूँ । विल आखिर जिल ने यही फमला किया कि तुम खतावार हो मिजाज यार में जो कुछ आए कहने दा और जवान बग्न किए मुने जाओ । यह कहना कि मैं देखता हूँ गालिबन आपके नजदीक कोई मानी नहीं रखता क्योंकि आपको गुरुर है कि आपके चर भजीज भी मुनाजिमे सरकार हैं और आप क्याइए स बाकिफ हैं । मगर मुआफ कीजिएगा अगर मैं भज करूँ कि आपने अपनी उन्न का सबसे बेगबहा हिम्सा मरी तरह सरकारी मुनाजमत में भरफ किया होता तो आप इतनी बेवौकी से यह चलफाज न लिखते । मैंने खबसत सने में कोई लकीजा नही छाडा । दा दरखाल्ले भी तार दिया । दरखाल्ले लोनो बाद भज वकन ली गह और लोनो मर फाम रखी ई है । बेगब मैंने मेडिकल सर्टिफिकेट देन की कोसिग नही की लेकिन मुझे

यही इमक मिलने की उम्मीद भी न थी। यह इन्जाम कि दरखास्तें कपो बाप
 मंत्र बन ही गईं मरे मर ख्याता-मे-उपादा दस स है, कपाकि मरे पहले हफ्ता
 ए कपाम कानपुर म तो घापन रोखाना यगरहू का कोई कायरेक सखकरा नहीं
 किया। जिफ किया तब जब मेरी खसत परम होने को घाई घोर फतना
 उम बनउ हुआ अब कुल तीन दिन रह गए। ऐसी हालत म मरे बसा उरामा
 का घात्मी वजुद इमके घोर क्या कर सकता था कि खसत लेने की कोशिस
 बहद इमकान कर घोर न मिल सक ता मजबूरन ब साचारन अपनी नोकरी
 पर वापस आए। घाप ही फरमाइये मुझे क्या गरज पड़ी थी क्या दबाव था
 कि मैं पहले काम शुरू करता घोर नब भाग रहा हाना। घापने मरा गता
 नहीं दबाया था घोर न दवा सकत थे। घापने मुझे किमी सेत्रिफात्म करने
 पर मजबूर नहीं किया, न मैंने कोई सत्रिफाइस की। मेरा मामी फायदा था।
 फिर एसा कौन मंत्र था, जो मरी बेगिमी का बाइम होता। हमीरपुर म मैं ऐसे
 बन पड़ुवा जब मरी दखलत सयाम होन म सिफ चौबीस घट की देर थी।
 १४ मिनम्बर की शाम को समाप्त होने यानी थी। मैं १३ की शाम को चला
 घोर इतबार का दिन। डिप्टी इन्सपेक्टर शेर पर। गरज हमीरपुर म ऐसा
 कोई दखल न था जिससे मैं कुछ सनाह-मगधरा स सकता बयोकि हमीरपुर में
 मेरे जानने वाले गिनती के घात्मी भी नहीं हैं। यही भागा घोर आज लेने में
 तब भी एक दिन की दर हा गई, जिसका अबाब मुझको दना पडा। यह है
 मेरा बयाने हमकी।

घब दूधरे पहलू पर नदर कीजिय। घापरो मरे भाग निरनने पर नाराज
 होन की उम्मत नहीं है, कपाकि जस घणवार घाप थाहने हैं वह कम उनकराह
 घोर मरफा म निरन सकता है घोर निरन रहा है। मालूम नहीं इसकी
 घणायत क्या है मकिन मुझे यकीन है कि इसकी घट हैमिमन कापम है। एक
 मामूमी रोहन घोर मामूमी निमाजन का घात्मी ऐसा घणवार निवान सकता
 है जिसमे बटून-भा घोरिजिनम न निमना पड़े। मालूम नहीं घापन खाना
 घात्मा का क्या इन्जाम किया। न मुझे पूछने का का हब शामिल है।
 लेकिन यजानत एमब खिन-काट काई-न-बाइ इन्जाम जरूर हा गया हागा।
 घोर १८ अक्टूबर म ता उमकी खिनबनी क लिए किमी मंत्री मसात की
 उम्मत ही थाकी न रहगी। घाप घोर घणर ख्याता नहीं ता यही मयाम करके
 मुझे मुघात कीजिए कि खाना घणवार की घारजू का घणवी मूरत म माने
 कामा यही ख्यात है। गाही का पहिया पहल मुक्तिम ने निमना है घोर एक
 बार बन निरना, ता बन निरना।

प्रमचन्दीनी गालिवन घबराव यत्न तक न छप सकती क्योंकि राडाना मखदार की जरूरियात कब प्रस का छायाग बढन देगी ।

मैं आपस भव कर चुका हूँ कि मर घाटाद घोर 'उमाना के मडामीन के मुनसल्लिक बुरस बहतर रूप घात है । छप्यन रूप पहले ये इन दा ताजा किस्सा की उजरत गामिल करके बहतर रूप हा जात है ।

आपन फरमाया था कि प्रमचन्दीनी साठे चार जुजब छप चुकी है और इसके मखराजात मय किताबत-बागज बगरह बहतर रूप हुण हैं । गाया हमारा और आपका हिमाव यहाँ तक साफ है । अब अगर आप पचीसी का निकालना पसन्द करें और आप निस्फ नफा-जुकसान म चारीक हा ता साठ चार जुजब और छपवाइए ताकि नौ जुजब की एक खासी किताब हा जाए । गालिवन इस नौ जुजब म बारह कहानियाँ भा जाएंगी । अगर मेरा नरतीक क मताविक्र बगरह किस्स न भा सकत हा ता आप जरा-सी तरमीम करके इस नौ जुजब मे बारह किस्से लपा सकत है । यह गाया पचीसी का पहला हिस्सा होगा । दूसरा हिस्सा हसब जरूरत और मसलहत वग को धाया कर दिया जाएगा । लेकिन अगर आपका प्रेम इनना बकन ही न निकाल सक ता मैं बन्धा मजबूरी यह इस्तमाम करूंगा कि या तो मेर बहतर रूप मुके भता फर्माय जाए या प्रेम पचीसी के साठ चार जुजब छपे हुए रेल क जरिये स मेरे पास भेज दिय जाए । गालिवन इन दरडवास्ता म मैं गर-माकूलियत स काम नहीं ल रहा हू । मैं किसी दूसर पत्रिगर को बूँगा । और न मिल सका ता इसी साठ चार जुजब का एक ग्राइल पेज लगाकर साठ चार जुजब की किताब बना लूंगा । सिर्फ देखावा और टाइप की जरूरत हागी । और यह भी न हो सका ता गहन घोर धी लगाकर इन घोरक-परोगान को खादूंगा और समझूंगा कि

जरे खद भाग्यारम्

बामबाण पहनत तन भी तोरम् ।

बहरहाल धान आ कुछ तमफिया करें जल्द करें और मुके मुतला फरमाएँ । सबसे सल्ल नुमछा बस छप हुए जुजब की भेज देना है । इसम आपको सिर्फ हुजब देने की दर है । दलनरी ने गटटा बनवाया और रेल पर रख भाए । आपको कोई तकलीफ न हुई ।

मैं अब सिर्फ नौ जुजब की किताब निकालना पसन्द करता हूँ वगैर कि आप शरीक हा और जल्द किताब को निकाल सकें । बामबाण के इन्तजार म बढन से ता यही बहतर है कि जो कुछ सवाब इस बकन मिलता है मिल जाए ।

सब दिष्टी इनापनर आप स्कूल की नौकरी म प्रमचन्द का हमीरपुर जिला

का शौरा करना पड़ता था। यहाँ प्रमवल्ल को पचिंग की गिरावट हुई जिससे पचीस वर्ष बाद प्रमवल्ल की मृत्यु हुई। उनका धनने ही शान्ति में सुनिय— गरमी के दिना में कोई हरी तरकारी न मिलती थी। एक बार कई दिन तक सगातार सूखी घुइया खाती पड़ी। या ता में घुइया को बिच्छू समझता हूँ और तब भी समझता था लेकिन न जान क्याकर यह धारणा मन में हो गई कि धत्रवायन से घुइयों का वाष्पीयन जाना रहता है। खूब धत्रवायन डलवाने का लिया करता। दस-बारह दिन तक किसी तरह का कष्ट न हुआ। मैंने समझा सायन बुन्देलखण्ड के पहाड़ी जलवायु ने मेरी दुबल पाचन शक्ति को तीव्र कर दिया लेकिन एक दिन पेट में दर्द शुरू हुआ और सारे दिन मैं मछली की भाँति तड़पता रहा। पचियाँ खाइ पेट पर गरम बोतल फेरी जामुन का प्रक पिया— देहात में जितनी खाए मिल सकती थी खाइ—मगर दर्द न कम हुआ। दूसरे दिन में पचिंग हो गई मल न साय प्राँव धाने लगा लेकिन दद जाता रहा। एक महीना घीत चुका था। मैं एक बन्धे में पहुँचा तो वहाँ के धानेदार साहब न ममम धाने ही में ठहरने और भोजन करने का आग्रह किया। कई दिन में मूँग की दाल खाते और पच्य करते करने ऊँच उग था। गोवा क्या हज है धात्र यही ठहरो। भोजन तो स्वाच्छि मिस्तगा। धाने ही में ध्रष्टा जमा दिया। दारोगात्री न जिमीकल का सालन पत्रवाया पचोडियाँ दही-बड़े पुलाव। मैंने एहनियायन से साया—जिमीकल तो मैंन बबल दा फकिं खाइ लेकिन या पीकर जब धाने के सामने दारोगात्री के पूग के बगने में सेटा तो दो-दार्द पटे बाए पेट में फिर दर्द होन लगा। सारी रात और ध्रगन दिन भर कराहता रहा। गोठे की दो घानों पीने के बाद दर्द तो जाकर चन मिला। मुझे बिश्वास हो गया यह जिमीकल की कारस्लानी है। घुइयों से पहले ही मरी कुटटी हो चुकी थी। जब जिमीकल से भी धर हो गया। तब से इन शानों चीन्हा दर्द तो फिर जाना रहा पर पचिंग न ध्रष्टा जमा दिया। पेट में चीन्हा पटे ठनाव बना रहता धारारा हुआ करता। समय के साथ धार-प्राँव मीन टर्मने जाना ब्यापाम करना पच्य में भोजन करता कोई-न-कोई धोपधि भी खाया करता किन्तु पचिंग टर्मने का नाम न लती थी और दह भी घनती जाती थी। कई बार बानपुर जाइए खाया करता। एक बार मरीन भर प्रयाग में हाँपरी और धानबेनि धोपधियों का सवन किया पर कोई फायदा नहीं। तब मैंन तवापना कराया। खाता था रफमगद पर खाया गया दैना के जिने म और हतरा भी धर दिया जो तवान की तराई है। यह जुना १८१४ की

वात है। चार महीन घान निगम का लिखा— आपन चार-पाँच मील हवा खान की सलाह दी है उसकी तामीय कर रहा हू। पाँच दिन से लगातार तीन चार मील घूमता हू। उम्मीर है कि तबीयत टिचन हागी। सारी दुनिया का सनेटोजन फ़ायदा करती है मुझे इससे भी कुछ न हुआ। हकीकत यह है कि सहत बड़ी चीज है। जिसन हमकी बदन की उसक लिए बजुज राने और सर घुनने के और वार्न इलाज नहीं है।

प्रमथन चाहत थ कि सरकारी नौकरी छोडकर कुछ और काम करें। जब निगम न एक नये अखबार क बारे म लिखा ता प्रमथन ने उत्तर दिया— पण्डित विश्वनाथजी अखबार निकालन वाले हैं यह प्रबन्धी खबर है। मैं अपनी मौजूदा हासत क एतबार से रोजाना अखबार क साथक किसी तरह नहीं हू। फिर उद् और हिंदो दावा का भार मुझस कंधाकर धमेगा। अगर अखबारी काम करना होता तो आज्ञाद क्या बुरा था। उसी की निकालता रहता।

एक दूसरे पत्र म— मैं जो आजिज हू यह मातहती स। काम एसा करना चाहता हूँ जिसम बजुज मेरी तबीयत के और किमी का तकाजा न हो। जी म घाए तो रात दिन काम करता रह और जो चाहे तो फौजन करूँ। मगर यह सिफ मालिकाना हैमियत मे हा सबता है।

निजी काम क लिए घन की आवश्यकता थी और प्रमथन क पान कुछ हो न हा घन नहीं था। इसलिये मेरे लिए तो अब यही मुनासिब है कि किसी प्राइवेट स्कूल की मास्टरी कर लूँ जहाँ से माहवार मिल कोई प्राइवेट स्कूल की मुनरिती की बर्षा हो तो मेरा खयाल रखिएगा (क्योंकि मैं अब इससे बेबार हो गया हूँ।) इसी के साथ-साथ जमाना' और आज्ञा' की खिदमत करूँ। इस तरह मुझे साठ-सत्तर रुपये माहवार का घौसन पड़ता जाण। इससे ज्यादा की स्वाहिय नहीं और न इससे ज्यादा पा सकता हूँ। खामखवाह तक्रार से क्या लडू।

कुछ किताब लिखूंगा कुछ अपनी किताबें छपवाऊंगा। पाँच-छ सौ मरी कामा है इस इन्ही कामा म मरफ करेगा और बिल आविर जब लिटररी पोहरेत हासिम कर सकूंगा तो कोई माहवार रसाला निकालकर गुजर करेगा। और अगर इससे पहल हयात मे जबाब दे लिया तो फिर राम नाम सत है

क्या बट आपने मुझे उछालने म कोई कसर नहीं रखी। खून उछामा। मगर मैं ही किहमत का धर्या हूँ कि उछलकर परवाज नहीं कर सकना बल्कि नीचे गिरन क लिए डरता हूँ बरना शिवदत्तमाल धमन की तरह चैन से खिन्गी बसर करता थाप मगे किताब जेसी छपवा दीजिए ताकि इसकी

कमलानी दरदर दूसरे हिस्से में हाथ लग घोर कुछ नफा भी हो ।

माघ १९१४ तक प्रेमचन्द दुविधा में था कि किस लखन गली को अपनाएँ । उन्ना दिना क एक पत्र म निगम को लिखते हैं— 'मुझे अभी तक इतना नही हुआ कि कौन-सा तब महरीर प्रहियार कर । कभी ता बकिम की नकल परता हूँ कभी भाडा के पीछ चलता हूँ । भाजकल काउट तात्सताम न किस्स पड चुका हूँ । तब से कुछ इसी रग की नरफ तबीयत माइल है । यह अपनी कमजोरी है और क्या ; यह किस्सा जो मैं रखाता कर रहा हूँ इसम लरफ तहरीर क मुनलक कोिंग नही की गई सीधी मानी बाँनें लिखी हैं । मालूम नही भाप पस चरेंगे या नही ।'

एक बार प्रमचन्द बस्ती से इलाहाबाद जा रहे थे । सरजू नगी पार करती थी । प्रेमचन्द गिरगानी देखी लया कमला स्टीमर म बठ था । प्रेमचन्द ऊँची जगह पर था और उनकी गोद में कमला बठी थी नीच पक्ष पर गिरगानी थी । एक पचोम बप का युवक धूरकर गिरगानी नेवी की घोर दल रहा था और पीर पीरे पास माता जा रहा था । गिरगानी देखी ने प्रमचन्द क पाँव का नबाया । प्रमचन्द का ध्यान जो किसी स बातें करने की ओर लगा था इस ओर पारपित हुआ । उन्हें प्राय माया । बचपी की माँ की गाँ म देकर उसकी गान पकड भी घोर काफी दूर तक ले जाकर बोल— 'सरजू म फेंक दूँ ?'

मैं तो लडा था । मैं न क्या पुताह किया है ?

'सिखाया क सिर पर चढ़ते हो । दोबारा जमान निकाली तो सरजू म भाक दूंगा ।

'क्या तुम्ही न बिराया लिया है ?

किसी के मिर पर बठन क लिए बिराया देकर प्राय हा

प्रमचन्द प्राय क मारे कीर रहे थे । कमजोर थे । इलाहाबाद इलाज करान जा रहे थे ।

बस्ती म पबिग घोर बढ़ गई थी । प्रेमचन्द न छ महीन की छुट्टी लो । लखनऊ के महिदलम बनिम म इलाज करवाया परन्तु निरासा हुई । फिर कापी जाकर एक हकीम स इलाज कराया । तीन चार महीन बाँ पोड़ा-सा पामन मामूम हुआ पर बीमारी जड पकड चुकी थी । बस्ती सोन्ड हो पुगनी गामड हो गई । तब प्रमचन्द न दोर की नौकरी म हूम की नौकरी क लिए मर्डी रा । दन्तु हापोकर माइन कब तक मास्टरी पर बापम भजन है । कर्मनाम इनम दद लग था गया हूँ और मास्टरी का इन बिन्धी पर तरकीह दता हू । निज तनकाह की कभी की गिराया बनबला है । मगर मुझे पचाग

रूपये देगा तो यखुनी चला जाऊगा ।

ऐसा ही हुआ । मई १९१५ में वह बस्ती में ही पचास रुपये पर सहायक मास्टर नियुक्त हो गए ।

यहाँ बस्ती में ही शिवरानी देवी को पता लगा कि उनकी सौत अभी जिंदा है । उन्हीं के शब्दों में सुनिये—

एक दिन की घटना है कि दरवाजे पर उनका पहले साले बड़े थे । आप उन्हीं से बातें कर रहे थे । इतिहास से मरी दो साल की लड़की कमला बकवाँ दरवाजे पर चली गई । मैं उसे दबने के लिए दरवाजे की तरफ गई । मैंने देखा लड़की उनके साले साहेब की गोद में थी । वे बड़े प्यार से उस चुमकार रहे थे । इसी बीच में रकीबा स्वर में बोले— अगर हमारा सम्बन्ध भाईचारे का भी हाता तो क्या मेरी बहन इसे प्यार न करती ! इस पर आप खामोश थे । बहुत-सी बातें अपनी बहन के विषय में कहते रहे । मैं बड़े ध्यान से उनकी बात भाव में सुनती रही । मेरे भी बदन का खून गरम हो रहा था उस समय । उसके बाद वे चले गए । आप लड़की को लेकर आकर आये । वही पहला दिन था जब मुझे मालूम हुआ कि वे अभी जिन्दा हैं । मुझे तो घोला दिया जाता रहा था कि वे मर गए हैं ।” आकर इस पर बहस हुई । प्रमचन्द की धारणा थी कि जिसको इन्तान समझे जीवित है वही जीवित है जिसे समझे मर गया वह मर गया ।

शिवरानी देवी ने कहा— कृपा करके उन्हें से घाइए ।

प्रमचन्द— मैं तो सन नहीं जाऊगा ।

शिवरानी देवी— क्यों नहीं जाइयेगा ? शादी हुई थी तमांगा नहीं था !

प्रमचन्द— मैंने शादी नहीं की थी । मेरे बाप ने शादी की थी ।

शिवरानी देवी— बाप ने तो जो अपनी शान्ति की थी उस आप गले बांध फिर रहे हैं । बाप की शादी की जिम्मेदारी तो आपके सिर है अपनी नहीं ? यह जिम्मेदारी का तुक नहीं है ।

प्रेमचन्द— चाहे हो या न हो मैं लाऊंगा नहीं ।

शिवरानी देवी ने लिखा है कि उन्होंने सौत को पत्र लिखा और उन्हें बुलाया भी । चौथे रोज उनका जवाब आया कि जब वे लख लेने आएंगे तो मैं चर्नूंगी । प्रेमचन्द लेने नहीं गया । फिर उन्हें मैं बराबर खग लिखा करती थी । उनका खत कैसी में लिखा रहता था । उसे मैं उन्हें दे दिया करती ।

प्रेमचन्द बस्ती में ही था जब प्रमचन्दी (उर्दू) का पहला भाग प्रकाशित हुआ । इसमें ये कहानियाँ थी—(१) ममता (२) विक्रमादित्य का तगा

(३) 'बड़े घर की बेटी' (४) 'रानी मारघा' (५) राजहट (६) राजा हरदोल
(७) नमक का दारोगा (८) मासिम ए-चममल, (९) गुनाह का प्रतिवृण्ड
(१०) 'बगरउ माहसिन' (११) भाङ-वेक्स और (१२) भास्त्रा ।

प्रम-पचीसी की प्रस्तावना क वार में प्रमचन्द ने एक पत्र में निगम की
निष्ठा— इन हज़रत में तारीफ उपादा की है फारूक साहपुरी उपादा
धोखू धादमी हा सक्ते थे अगर वह म सिख सकें तोइ सी को रहने दीजिए ।
मगर मन्वर ऐसा होना चाहिए कि एक पन्थर से उपादा न हो । आपकी तरफ
स मैंने एक मूखनिर दीवाचा लिख दिया है । अगर आपको पसन्द आए तो इस
अपनी तरफ से दज कर दाजिए । आपकी महनन और तरदुदु रफा हा जाएगी ।'

'प्रम-पचीसी (भाग १) पर त्रिउना सच हुआ वह प्रमचन्द ने अपनी जेब
ही से लिया । पुस्तर की विक्री का प्रबन्ध भी प्रेमचन्द को स्वयं ही करना पड़ा ।
अगस्त १९१५ में उहीन निगम में पूछा 'आपरातुण अदब मुभने प्रम-पचीसी
अधन के लिए तख्त करत हैं । उनकी निस्वन आपका क्या उपादान है ? निम्ना
दोषम की आगायत क मुनमन्लिक भी यह धामाना हैं । आपका जवाब धा जाए
ना उन्हें जवाब दू ।

डेड महीन बात लिखा— प्रम पचीसी (हिस्सा अचनत) आगरातुण अन्व क
पान कुछ त्रिले अन्न दी है और कुछ हिन्दुस्तानी म तबसीम करा । मगर
अभी तब कुछ नतीजा नहीं निकला आपन इसके लिए क्या कीगिए की ?
'नामी कुतुब के मिममिले म मजूर हो जाएगी ? हिस्सा दोषम आप ही धरवाए ।
अगर आपका प्रस अन्व धाष मकं ता इसमें और क्या बहतर होगा । अगर
आप धरवाएँ तो फिर फंसता हो जाना चाहिए । मैं आप ही क फंसन पर
राबी हा जाऊंगा ।'

इसी पत्र में उहीन निगम को बधाई दी कि उनके भाई रामारण
निगम, छिप्टी कमकर ने मनीतान म मकान लिया । 'इसका कुछ और हाव
मुनन के लिए मुस्ताब हैं अब कभी-कभी गरमियों में बैंगल की हवा धान का
मोबावितता और आयर बन्दूक में गिबार भी खत सखूँ बगलें कि यह मारान
करीम को भूत म जाएँ ।

प्रमचन्द का स्वास्थ्य ठीक न हुआ । जून १९१५ क एक पत्र में निगम का
निष्ठा— मेरे लिए बुझाव का किञ्च रिजून है । मैं निम बुझ म कम है मोकरी
प्राप्त चाहते थे । 'अमाना कार्यालय क काम म गिरकत बनन की भी बात लि
पनी । प्रमचन्द निगम को लिखते हैं—

अमाना धूँकि इस बखड बिनकुन पदम कागन मफा है इस बखत म

उमका नेम इतना वेगकीमत नही है जितना दूमरो हालत म हाता । में उसकी कीमत एक हजार रुपयाल करता हूँ क्याकि गुड नेम के साथ ही इसमें बड नेम की भी आमेजिन है । बहरहाल मरा तखमीना यह है—मरा खयाल है कि अगर कोई नया माहवार काबलियत के साथ ऐडिट किया जाए और इस पर एक हजार रुपया सफ कर लिया जाए ता इसे इनकी मुश्तहरी हासिल हो जाणगी ।

यह में तसलीम करता हूँ कि आपका इम माहवार की बोलत बहुत जर वार होना पडा जिसकी मिकदार गानिबन तीन या चार हजार तक हा । मगर गानिबन मुले बाजार म इस जिम की इतनी कीमत हरगिज न मिल सकगी । और फिर इस खमारा क और भी असबाब हैं जिनक तककीम की यहाँ जरूरत नही । अगर एक हजार गुड नेम की कीमत हा ता इसका निरफ रिमा पाँच सौ होता है । में इस रकम को दो या तीन साल म घना करने का जिम्मवार हो सकता ह । नूद बगरह बाजार महसूब करने की रजामा ह ।

में इसका एडोटीरियल और बडी ह तक मनेजीरियल घाज मेन पर तयार हूँ । आप मिक अपने रसूल और जाली असर स और नीज इतिहासत के मुतमल्लिक जितना मुतासिब समझे काम करेंगे । में कोशिश करूगा कि जहाँ तक मुमकिन हा उसका खच कम हा । इमके अनाधा फाइनेशियल घाज बिलकुल आपका रहेगा—यानी कागज किताबत थपाई कटाई पोस्टल चार्जेंड । इनका हिसाब आप माहवार भदा करने का बानीबस्त करेंगे । गाबिका मकामा का हिसाब इसस भलग रहेगा । तारीख पारकित से आप जितना रुपया लगाएंगे यह हर माह के आखिर में या हयब गुजाइश डिसेम्बर या जनवरी म घना होगा । जितना नफा या नुकसान हागा इसम हम और आप बराबर के गरीक होंग । मरा खयाल है कि जनवरी तक हम इन रकूम को भदा कर सकेंगे । मेकिन अगर उस बचन भी कमी रहे और दूसरे मास के लिए रुपया की ज्याता जरूरत हा ना फिर हसब जरूरत कोई सबील करेंगे । मगर ताबकने के ये जिम्म वारियाँ बेबाक न हा जाएँ । घामाती म स जहाँ तक इमकान मे होणा कुछ न सगे । गेडीटर चाहे आप रहें या मैं । अगर आपके नाम से ज्याता फामदा हो तो मुझे काँ डिजायत नही । बरना मुझे ही आमट एडीटर रहना हागा । अगर यह धरायत आपकी तर्मागत के साथ ठप हा जाएँ तो हम ओग डिसेम्बर तक चार-पाँच नम्बर बचन पर निकालकर कुछ विचार कायम कर लेंगे और जनवरी स गानिबन ज्यादा फायदा के साथ आगाज हा । मैंन मासी जिम्मवारियाँ सब आप पर रखी हैं । इसक यकूह सुनिय । मर पास इन छ माह की रखतन क बाँ घाट सौ रुपय है । तीन सौ रुपये मैंन तीन घतामियों का घठारह

फीसगी मूल पर बंध द दिया है। मरा नकल सरमाया इस बकन कुल पाँच सौ रुपये है। इसे मैं उस बकन तक के लिए खूब का बसीला समझता हूँ जब तक कि जमाना से मुझे कोई फायदा न हो। घोर बीन जानता है इस मुबारिक बकन के लिए कितने दिना तक इन्तजार करना पड़े।

गुज में माली जिम्मेदारिया का बोझ उठान के बिलकुल नाकाबिल हूँ। इसी भयनाम मगर छूटके की गाना तय हो गई तो गानिवन यह रकम भी भर हाथ से निकल जाएगी। छूटके इस साल फन हो गए यही हैं। स्टूल लीबिंग म नाम लिख दिया है। बाची नहा घाई। मकान पर हैं। तजनारायण भी यहाँ हैं। मयन मकान पर हैं।

मैं मयनी मानी हालत का जो किस्सा लिखा है यह हफ-ब हफ सही है। मैं आपसे जवाब का इन्तजार करूँगा।

आप बनकर लिखा— आपने मेरी जिस्बत जो कुछ परमाया है वह धावजू सही होने के हमदर्दी से खानी है। हर एक काम जो आप छडना चाहते हैं इसमें रुपये की जरूरत पहल ही पडती है। रुपये न आपके पास है न मेरे पास। बलाइय काम क्याकर चल ? एटरप्राइज खानी जब से या महज हवाई बाना पर तो नहीं हा सक्ती—आप यह तसलीम करेगे कि इन्सान की इतफाकी जरूरियात के लिए पसमीन रखना चाहिए। मेरे पास बस इतना ही है। इतना सरमाया नहीं जिससे कोई तिवारती मसूबा बाँधा जाए। बस आप मुझसे ईशार का तबाजा करत हैं। मैं मयन को इस काबिल पाता नहीं। मेरे पास माठ रुपये माहवार का खच सगा हुआ है वह किता तरह गना नहीं छोड सकता। आप कोई एसी गुरुत बताना जिसमें मयनी रोगी हासिन करत हुए एटरप्राइज पर लख कर सकूँ। इसके लिए सबसे पहली बात यह हागी कि आप सरमाया पदा करें। मैं तो मककी ही इतमत सबर आपके यहाँ गया या मगर ग म प्रबधा न देगा माली मुगकिमात नजर घाई। इस बजह से क्वाहम ह्वाह उममना प्रिबूत समझा। मगर आपना मानी हालत बमुकावमा साबिन बहुर हा गई है तो आप मुझे बुलाइय। मैं हाबिर हूँगा। घोर बाहमी मगवारी म कोई मूरत निबासेंगे।

एक बार बस्ती में बानपुर गया। वहाँ गणगणकर विद्यार्थी म भेंट हुए। विद्यार्थीजी न तब हाय ही म प्रचार' निबाना था। विद्यार्थीजी का स्वयं मारा काम बगल दवाकर प्रमब' बड़े प्रभावित हुए घोर घाक' तिवराना रबी म बहा—' विद्यार्थीजी बड़े मेहनती हैं। कार्यालय का बगल काम मयन हो हाया करत है। इस ही पुग्ताम कहन है। दना तरह के घानमिया का मु' का

जहरत है। ऐसे ही भ्रातृमी अपने जीवन को सफल बना सकते हैं। मरी भी इच्छा है कि नीकरी छोड़कर कहीं एकांत में बठकर साहित्य की सेवा करूँ। मेरे पास दस बीघा जमीन हाती तो मैं अपने खाने भर का गस्ता पदा कर सता और चुपचाप एकान्त में बठकर साहित्य की सेवा करता।

बहुत दिन नहीं गुजरे थे कि प्रेमचन्द ने हिन्दी में दोबारा लिखना शुरू किया। 'प्रेमा और हमखुर्मा' को हमसवाद साथ-साथ छपी थी। इसका एक कारण यह भी था कि बस्ती में प्रेमचन्द का सम्बन्ध कुछ हिन्दी साहित्यिकों से हुआ। इनमें से एक मन्नन द्विवेदी गजपुरी थे। यह होमरियागज क तहसीलदार थे। प्रेमचन्द के शब्दों में द्विवेदी बड़ा मसखरा भ्रातृमी है साथ ही ज्ञानदार भी है। इन्होंने साहित्य से बड़ा प्रेम था। और जब भी प्रेमचन्द तथा द्विवेदीजी की भेंट होती साहित्य चर्चा चलती। जब दोरे पर होते तो एक-दूसरे के घर पर ठहरते।

प्रेमचन्द ने हिन्दी में भी गल्प^१ छपवाना शुरू किया। सरस्वती में छपी इनकी पहली गल्प बस्ती से ही भेजी गई थी। जब पहला हिन्दी कहानी संग्रह छपा तो इसकी प्रस्तावना द्विवेदीजी ने ही लिखी (जब १९२१ में गजपुराजी की मृत्यु हुई तो प्रेमचन्द ने जमाना तिसम्बर १९२१ के अंक में इन पर एक लख लिखा जिसमें कहा— अफसोस है कि गजपुराजी की जिनगी का बेशक तिसमा सरकारी कामकाज की गानापुरी में सफ हुआ। फिरमापा ने भापको गुमाजमत के दायरा से बाहर न निकलने दिया।

इसी समय के एक पत्र में निगम को लिखा— 'प्रेम-पचीसी (उदू) के हिन्दी तर्जुमे के लिए कई जगह से असरार हो रहे हैं। मैं खुद ही इस काम को हाथ में लूँगा। अब हिन्दी लिखने की मरक भी कर रहा हूँ। उदू में अब गुजर नहीं है। भाखूम होना है कि बानमुकन्द गुप्त मरहूम की तरह मैं भी हिन्दी लिखने में जिन्गी सफ कर दूँगा। उर्दूबीमी में किस हिदू को फज हुआ जो मुझे हो जाएगा

अक्टूबर १९१५ के एक और पत्र में— जमाना के लिए एक किस्ता लिखा है अब मैं हिन्दी में लिख रहा हूँ। सरस्वती को एक मजदूर^२ लिया। प्रताप

१ आयुत अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी ने अपने साहित्यिक मन्तरण में लिखा है कि प्रेमचन्द का कई गल्पों का हिन्दी-अनुवाद कलकत्ता के 'भारतमित्र' में छपा था। ये अनुवाद 'जमाना' में किए गये थे परन्तु जमाना का नाम नहीं लिया गया था जैसे राजा हरनौद का अनुवाद।

प्रेमचन्द के पत्रों में प्रायः मजदूर का आशय कहानी है।

के लिए लिखा। इसमें ज्यादा काम करने में माजूर हूँ।

यहाँ इस बात का विचार करना जरूरी है कि इस समय प्रमचन्द प्राइवट तौर पर एफ० ए० पास करना चाहत था। 'भाजकल एफ० ए०' की धुन में कुछ निटरेरा काम नहीं होता। वही से तहरीर भी नहीं हुई और मृत्युत में काम पिसना फिजूल मासूम होता है।'

डेढ़ महीने बाद—'भाजकल कोस की कुतुब के लिए इनामात का ऐतान हुआ है। अगर आप इस मदान में आना चाहें तो मैं इसमें भी आपका साथ देने को तयार हूँ। स्ट्रज ऑफ इंडिया' सोरीज की तरह चौसठ सफहात पर गवनों के सवानह लिखन का इरादा है। एफ० ए० भी होता रहेगा। इसमें लिए मैं घटा भर में ज्यादा बक्त नहीं सर्क करता। मैं करना तो बहुत कुछ चाहता हूँ, मगर मुझमें न एटरप्राइज है और न खपया। आपका पास एटरप्राइज है मगर खपया नशा? जब तक कोई सरमाया धाना शरीर न हो उसे काम चल?'

अपने धारम-वधारम निबंध में प्रमचन्द ने लिखा था कि 'गणित मेरे लिए गौरीगवर्ग की चाटी थी। बस उस पर न चढ़ सका। इण्टरमीडिएट में था कि गणित में पस हुआ और निराग होकर इम्प्लिहान देना छोड़ दिया। दस धारह साल के बाद जब गणित परीक्षा में अस्त्रियागी हो गई तब मैंने दूसरे विषय सजर उम आसानी में पास कर लिया। एफ० ए० में उनका निय हूए विषय थे—अप्रजी फारसी आधुनिक इतिहास तथा तर्क। प्रमचन्द १९१६ में दूसरी थेली में पास हुए।'

बस्ती में रहते हुए प्रमचन्द ने बहूत-सी कहानियाँ लिखीं। कुछ का नाम इस प्रकार है—'गिबारी रामकृमार, सामन-ग-गमाल पद्धतावा' मरहम, 'गरत की बटार बटा का धन, दो भाई पनापत (पक्ष परमन्वर) मरे पुर गकर 'जुगनू की धमक' धमूत, 'कर्मों का फल', मनाउन, नकी का मन्ना गीत 'मनाप तहरी। जहाँ कि घाग दर्गेने इन कहानियों में म कई प्रम-वचीमी (भाग २) में छपी।

१ 'प्रमचन्द' नामक पुस्तक में 'प्रमचन्द' ने 'का इण्टरमीडिएट का परीक्षा देना और 'प्रमचन्द' १९१० में पास हुआ। यह मन्तव्य है। उनका एफ० ए० का परीक्षा परीक्षा में 'प्रमचन्द' में छपी है।

गोरखपुर में अध्यापक के पद पर

अगस्त १९१६ में प्रेमचन्द का तबादला बस्ती से गोरखपुर के नामल स्कूल का हुआ। इस स्कूल में प्रेमचन्द ने साढ़े चार वर्ष काम किया। गृहस्थ-जीवन अध्यापन-कार्य तथा हिन्दी-साहित्य के क्षेत्र में कयाति की दृष्टि से उनके जीवन का यह चरण बहुत महत्वपूर्ण था।

जब प्रेमचन्दजी अपनी पत्नी तथा पुत्री के साथ गोरखपुर पहुँचे तो गिब रानी देवी आसन्न प्रसवा थी और जिस क्वार्टर में प्रेमचन्द को ठहरना था वह खाली न था। इसलिए प्रेमचन्दजी को सपरिवार स्कूल ही में ठहरना पड़ा। लगभग एक दर्जन मास्टर और दो सौ छात्र उन्हें घेर बैठे। गिबरानी देवी की हालत खराब देखकर एक मास्टर उन्हें अपने घर ले गए। उसी रात को एक लड़का पैदा हुआ। इसका नाम श्रीपतराय (घुल्लू) पड़ा। इस अवसर पर सारे स्टाफ की दावत दी गई।

नामल स्कूल के हेडमास्टर बचनलाल प्रेमचन्द से बहुत खुश थे। जब एक मास्टर का फ़र्म एंड का डिप्लोमा कोस के लिए इलाहाबाद भेजने का प्रश्न उठा तो बचनलाल ने प्रेमचन्द ही को चुना। इस कोस के पास करने से प्रेमचन्द के बचन में दस रुपये की वृद्धि हुई। गोरखपुर जाते ही पचास रुपये से साठ रुपये हुए थे। अब सत्तर) रुपये हो गए। इसमें से पचीस रुपये वह छोटे भाई को भेंटत। चानी (विमाता) साथ थी। बचनलाल रहता बहुत तो अपने बच्चों को पिना लती और घाठ मशीन के घुल्लू को साबूताना पानी में पकाकर दिया जाता (गिबरानी देवी को बुझार माना था)। एक बार जब प्रेमचन्द चची और उनके चचेरे भाई की बीबी के साथ प्लेग में बचने के लिए गोरखपुर आ गए तो चची को बख़्खा न लगा और भगडा हुआ। एक बार बहुत अपने बच्चों को लेकर इन्वेलुण्डा से बचने के लिए गोरखपुर आई (गिबरानी देवी बीमार थी और घर का बहुत-सा काम प्रेमचन्द स्वयं ही करते थे) इस पर भी चची

मरलाह । धानिर उह विदा किया गया ।

प्रमचन् के एक निप्य मङ्गलतहक क्लीम ने एक सम्मरण म लिया है—

भापका मामूल या कि म्बूल म धमूमन ठीक बचन पर पहुँच जात । रहने व लिए भापको म्बूल ही म सरकारी मकान मिला था । घण्टा बजा और धान घामराना मन्दाह म निकल । धमनर भाप खुल सर बाल परीगान और एक कोट पहन हुए जिसके बटन खुल रहते धाम तौर पर घोती पहन एक धजीव मन्दाह रफनार से स्कूल भाते थ । लहवे जितना उनका धदब करत थ किसी डूमरे का नहीं करत थ । मरी जमात को तारीख पढ़ात थ । उनका दस्तूर यह था कि खुद तारीख की किताब लेकर पढ़ने चल जाते । चूँकि लडक मिठिन और ट्रनिंग पास होने थे, इसलिये जगान्ग त्रिबलत नहीं पढ़ती थी । एक घण्टा म जो कुछ पढ़ाना हाता पढह मिनट म पढ़ाकर तारीख व मुतमस्तिक व दान बयान करने ओ उस तारीख म न होमी । नहीं मालूम उनकी मालूममात कितना बनाह थी । धमनर ऐसा होता कि ओ कुछ तारीख म पढकर सुनान उसक मुस्ताफ मुवतलिक तारीखी हवालार् स बयान करते । बाह वाकियात व मुतमस्तिक यह भी दिखलात कि महज हिन्दू मुसलमानो म नफाक पना करन व लिए निगरी गई है । गरज उनका घण्टा धजीवो-नारीब मालूममात का घण्टा हाता । घण्टा खत्म होने के बिम्बा यह भी फर्मा देत कि देखो जो कुछ मैं बयान किया है वह ममझने की चीज है । इन्तिहान में बही निलना जा तुम्हारी किताब म है बरना फन हो जायोग ।

'बनाम म उनक घाले ही गेमी दिन्नादिमी पना हो जाती थी कि हर एक उनकी सरफ मुस्तानिब हो जाता । यह जरूरी न था कि जा सबजबट पढ़ाना है बही पढ़ाया जाए । बलिक जिस मीत्र की तरफ उनका रहवान या लडका का लकाडा हुआ बमान फर्मान लग । अगर बताम म पढ़ान बकत कोई हमी की बात भा गई तो बेदमिनियार हूँने लग । बिमी का छोरोहराम नरा था । एक मरतबा का वाकिया है कि इन्स्पक्टर साहब मुघान्ना व निग घाय । बाबू बेचनलाम हदमास्टर ओ बहुत सीध धाम्मी थ कुछ परीगान-न थ । तमाम लडक भी धान-घाने डूम म धाराम्ना थ मगर हमारे जगान्ग का बही घालम था जो पहल निग चुका है । नग मर दान परीगान बाट का बग भुमा हुआ । इन्स्पक्टर साहब बनाम म घाय मगर हमका भी काई धमन न हुआ । कुछ धमबा म गुनगू हुई । उगव बाट इन्स्पक्त्त साहब चल गए ।

इसी धामाध्यापक म बनाया है कि 'उम जमाना म त्रिम बट धममान निग गए और रिगाना म भेज गए तत्ररीबन कुच व-कुच मरे गाउ बिय हु

के बीच मित्रता तथा सहानुभूति और प्रेम का सम्बन्ध था। छात्राध्यापक तो इस बात की टोह म रहते कि प्रमचन्द उनसे किसी काम के लिए कहें परन्तु उपर प्रमचन्द से कि कभी किसी स निजी काम नहीं लेते थे।

जहाँ प्रमचन्द अपने गिण्या स स्नेह का व्यवहार करते थे वहाँ अपन उच्च प्रबिचारिया से उनका रवमा एक अत्यन्त स्वाभिमानी पुरुष का था। यही गोरखपुर में ही एक बार प्रमचन्द की गाय अग्रज कलकटर के अहाते में घुस गई। कलकटर ने उसे गाली मारने की घमकी दी और गाय के मालिक को बुलवाया। इससे पहले कि कलकटर का चपरासी प्रमचन्द के घर पहुँचता कलकटर के घर के बाहर दो-दोई सौ आत्मी इकट्ठे हो गए। घमकी का जवाब घमकी से दिया गया— यदि गोवध हुआ तो हगामा हा जाएगा। भीड़ के गोरगुरु को सुनकर प्रमचन्द स्वयं वहाँ पहुँचे। वाद विवात् जारी था। प्रमचन्द ने जनसमूह की बातें सुनकर कहा गी बहुत अन्ध्या जानवर है मगर उसके मरने पर इतनी प्रापति की कोई जरूरत नहीं।

वाह साहब जब मुसलमान गाय को मारते हैं तो मृन हो जाता है। यह ठग ठीक नहीं है। जब अग्रजों के बूचढखाने में सकडा ही गाय का प्रतिदिन बध होता है तब आप कुछ नहीं करत

कलकटर के सामने पहुँचे आपने मुझे याद किया ?”

हाँ यह गाय आपका है ?

हाँ मरी ही है।

यह हमारे अहाते में घुस आया है। हम इगको गोली से मार देगा। यदि मारना ही था तो मुझे याद क्या किया ? मार डालत।

हाँ हम मार सकता है। हम अग्रज है कलकटर है।

आप अग्रज हैं कलकटर हैं। ठीक है। मगर पदिनक की राय भी तो एक चीज है।

पार्क में बनवाया। मरान के मामले एक नीम का बध था जिन्ने नाथ बैटकर प्रमचन्द अपना सेखल-काय किया करने थे। वह कुछ तो भय नहीं है परन्तु शर्मा ग्यान पर सगमनेर का एक चतुरा बनवा है। नामल मृष के छाया-वाकाल द्वारा किया गया वह काम बना मरान य ह। इनके साथ हा कुछ उपाहागना अन्धकारों ने प्रेमचन्द के अापन-काय के छाया का शिष्य विभाग का भार में एक प्रस्तावर्षा भिन्ना जिन्ने प्रमचन्द के बारे में सम्पूर्ण मगवाये। इन सम्भरणा में प्रेमचन्द के जन्म पर बहा रोशनी पडनी है। इन सम्भरणा व कुछ अरा जो आम में छुने थे उनमें स कद का इमने ऊपर उडत किया है।

मात्र हम इसे छोड़ देना है। अगर फिर प्राया तो मार डालगा।
परन्तु प्रगली वार मुझे यात्रा न नीचाग्या।
इसी तरह एक बार स्कूल का मुद्राशना हुआ था। प्रमचन्द्र एक रोज़ ता
इस्पक्टर क माय रहे परन्तु दूसर दिन जब खेल खन जाने लगे तो प्राप
घर चन गए। इस्पेक्टर न बारम जाते देला कि प्रमचन्द्र कुर्सी पर बठे पत्र रहे
हैं और उठकर सलाम भी नहीं किया। गारी ठहराई। चपरवासी भेजकर बुलाया।
प्रमचन्द्र ने पूछा कलिय क्या है ?
तुम बड़े मगर हो। तुम्हारा अपसर तुम्हारे दरवाज से निकल जाता

हैं और तुम उठकर सलाम भी नहीं करते।
मैं जब स्कूल म रहता हूँ तब नौकर हूँ। बाद म मैं भी अपने घर का
बादगाह हूँ। अपने जा कहा यह कहकर अचछा नहीं किया। इस पर मुक्त
प्रतिकार है कि प्राप पर बेस चलाऊ।
इस्पेक्टर चला गया। प्रापने मित्रो से सलाह की कि निय प्रकार इज्जत
हूतक का दावा किया जाए। मित्रा ने दवाव डालकर प्रमचन्द्र को मुक्तदमा
दायर करन स रोना।

गोरखपुर क साठे चार साल के घरने म प्रमचन्द्र की हिन्दी साहित्यिक क्षम
म भी ध्याति हुई। बन्ती म प्रमचन्द्र की मित्रता मन्नन त्रिवेणी गजपुरी से हुई
थी। यहाँ गोरखपुर म उनकी मित्रता श्री दत्तारयप्रसाद त्रिवेणी तथा
महावीरप्रसाद पोद्दार ने हुई। इन गौना ब्यक्तियो ने प्रमचन्द्र को पूणतया
हिन्दी म धान की प्ररगा दी।
महावीरप्रसाद पोद्दार गोरखपुर की हिन्दी पुस्तक एजन्सी क मानिक थ।
वही इन गम्या क अयवस्थापक थ। पोद्दारजी ने ही सप्त सरोज नाम म
प्रमचन्द्र का पहला हिन्दी गल्प-संग्रह रग्या। यह १९१७ म प्रकाशित हुआ।
इन संग्रह म य सान कहानियाँ हैं—(१) बड़े घर की बनी (२) गौन

१. उक्त मित्रा बल्लभ प्रेमचन्द्र पर मे म त्रिय ग्या है। गोरखपुर में इसी प्रकार का बन्
मुनन में था परन्तु यह बहा इस्पेक्टर की गला पद पर मरर त्रिभुवा के बारे में
इसी घान्त का उदरवा जला है।
दत्तारयप्रसाद त्रिवेणी जब पत्र लेते क कालिम में काम करत थ। का देगमना मे
का रमा पुा ने उर्दने जीसी कर्मी का लोड मी थी। गोरखपुर त्रिवेणी के गला
म भी उर्दने कालिम काम किया था। उनक कालि इलाका मे अन्तःप्रम की गला
क काट बही म गला मन्तःदिह निहवा। गलाका क क त्रिवेणी मन्तःप्रम
निगुम हुए। उक्त ग्यु कालि १९११ में हु।

(३) सज्जनता का दण्ड (४) पंच परमेश्वर' (५) नमक का दारोगा
(६) उपलक्षण' और (७) परीक्षा ।

इनम स सौन सज्जनता का दण्ड पंच परमेश्वर सबसे पूव सरस्वती
में १६१५ १६ म छपी थी ।

सरस्वती द्वारा की गई सप्त सरोज की आलोचना इस प्रकार थी—
प्रमचन्दजी के नाम से सरस्वती के पाठक अपरिचित नहीं हैं । आपकी भाषा सरल बोल
बितनी ही कहानियाँ सरस्वती में निकल चुकी हैं । आपकी भाषा सरल बोल
बाल की और मुहावरेंदार होती है । अब तक आप उद्गम ही अपने विचार प्रकट
करते थे । अब कुछ दिना से आपने हिन्दी को अपनाया है । कहानियों में
स्वाभाविकता भी है और उनसे कुछ-न कुछ शिक्षा भी मिलती है । मनोरंजन भी
खूब हाता है । पुस्तक पढ़ने लायक है ।

सप्त सरोज के प्रकाशन पर हिन्दी साहित्यिक धर्मो में धूम-सी मच गई ।
विताव हापो-हाय बिकी । उन दिनों हिन्दी की सव्यष्ट मानी जाने वाली
प्रकाशन-संस्था हिन्दी प्रचरत्ताकर बम्बई में भी प्रमचन्द से एक कहानी सप्रह माँग
और प्रमचन्द ने नौ कहानियों का सप्रह उस संस्था को प्रकाशन के लिए दिया ।
सप्रह नवनिधि' के नाम से छाया । इसके लिए प्रमचन्द को दो सौ रुपये मिले ।
इस सप्रह में वे कहानियाँ थीं जो प्रमचन्द ने हमीरपुर में लिखी थीं और जो
उद्गम प्रमचण्डीसी (भाग १) में भी छपी थी । ये कहानियाँ थी—(१) राजा
हरनौल (२) रानी सारंग (३) मर्यादा की कृती (४) पाप का अग्नि
कुण्ड (५) जुगनु की चमक (६) घोला (७) अमावस्या की रात्रि
(८) ममता और (९) पछतावा ।

नवनिधि के प्रकाशन के छोड़े ही दिन यान् प्रम पूर्णिमा नामक एक सप्रह
भी निकला । इसमें भी कुछ कहानियाँ हमीरपुर के समय की थीं और जो प्रम
पचीसी (भाग १) में छप चुकी थी । ये कहानियाँ इस प्रकार हैं—(१) ईश्वरीय
याय (२) दाखना (३) सन सफ (४) गरीब की हाय (५) दो भाई
(६) बनी का घन (७) घम-सकट (८) दुर्गा का मन्दिर (९) सवा माग

१ हिन्दी में बहुत-से आलोचकों ने यह समझकर कि 'नवनिधि' और प्रेम पूर्णिमा के
कहानियाँ सप्त सरोज की कहानियों के बाद लिखी गईं प्रेमचन्द की कला में हानि की
अपेक्षा दगा । प्रकाशकान् गुप्त लिखते हैं— प्रेम पूर्णिमा में प्रेमचन्द की कहानी कला में
कुछ विकास न हुआ तथा यद्दम तन्नि से करने पर सप्त सरोज और प्रेम पूर्णिमा के
बीच उनका कला का कुछ हाव ही हुआ । कारा वे आलोचक धर्मो राज और देवत
में कहानियों का ठीक निष्कर्ष पना करने के बाद किमा परिणाम पर पहुँचे ।

(१०) गिबारी राजकुमार (११) 'वसिष्ठान' (१२) 'श्लेष' (१३) सन्धिवादी का उपहार', (१४) 'बालामुखी' (१५) श्लोक 'महावीर्य' । यह संप्रदाय भी खूब प्रिय है ।

प्रमोदचन्द्र की पुस्तक की माँग बढ़ती जा रही थी । हिन्दी पुस्तक एजेंसी ने जिसने सप्त मंगल छापा था, प्रमोदचन्द्र से गुरु माँग पर एक पुस्तक लिखवा कर छापी । इसके पाठ से सान्नी की कविता और उनके चरित्र की महिमा का यथेष्ट ज्ञान हो सकता है ।

इसी प्रकाशन मस्या ने प्रमोदचन्द्र का एक उपनाम भी प्रकाशित किया । यह उपनाम पहले उद्गु म लिखा गया । इसका मूल नाम था — बाबादे हुम्न । परन्तु इसका हिन्दी रूपान्तर तबो सन्त उद्गु सम्भरण से कोर्न बार धप पहले छपा । उपनाम का प्रारम्भ १९१६ व घन्टे म किया गया था । जनवरी १९१७ के एक पत्र म प्रमोदचन्द्रजी ने निम्न को लिखा — 'आजकल एक विस्मा निस्तते निम्नत नावल निय घना । कोर्न सी सफ तक पहुँच चुका हूँ । इसी वजह से छापा विस्मा न निय सका । अब इस नावल म एसा जी लग गया है कि दूसरा काम करने का जो नहीं चाहता । मगर माघ (मघ) के लिए दो-तीन दिन म उद्गु कुछ-कुछ भर्जूंगा । परवरी के निय मजबूरी है । मगर धाप इस नावल का मुमलगील नना चाहेंता क्या हूँ ?' रिस्मात की मौजूदा जगामत इस बोध को नहीं समझ सकती । रिस्मात लिखबम्प है और मुझ एसा खयाल होता है कि मैं अब की बार नावल-नवीनी म कामयाब हो सकूँगा ।

सीत महीन बाबा २३ माघ १९१७ का टुनिंग बानिभ इलाहाबाद से लिखा — 'मगर नावल धप रहा है । अब बरा इरभोजन हो जाए ता खरम करे । मूल हो रहा है । बाह्या हूँ जल घजाम की तरफ धरूँ ।

उसी समय के एक और पत्र म — बाबादे हुम्न प्रणामुन पुगुडी का गिबारी हो रहा है । अब कुछ शिरो म छोटे विस्मा निम्नता बर करव इसी मरदा भीन लिम्न की बानिभ करेगा । शिमाय एक-छाम डा मन्निनिय प्लाट नहीं ममान नकना । तब धकत म एक ही काम हो सकता है । या ता नावल निम्न या बहानिया । नावल म एक ही प्लाट बाका है । और इसका निम्नता इतना मुँ हप नहीं । किन्ता हर माद् दो-तीन बहानिया निम्नता

बाबादे हुम्न १९१७ व घन्टे या १९१७ व प्रारम्भ म ममान हुपा । इये उद्गु म एगवान के मन्धप म ता बरव बानपीन ही धवनी रही परन्तु लका मन्त नावल म इसका हिन्दी रूपान्तर शिमा पुम्नव एजेंसी ने १९१७ म प्रकाशित किया । देका मन्त के निम्न एजेंसी ने प्रमोदचन्द्र का धाप भी पचाग राव दिया ।

हिन्दी पत्रा सभा समालोचना न सभा मन्त्र का दिल खोलकर स्वागत किया। सरस्वती न वश्या-नृत्यादि बहुतरी सामाजिक कुरीतिया का दिखसान वाली इस पुस्तक की भाषा को सरल कहा और नरक की शाली को राचक बतनाया। एक छात्रोचक कालिदास कपूर न प्रेमचन्द स पूव क हिन्दी उप याम साहित्य की तुलना एक ऐसे उद्यान स की जिसम सभी कुछ बाहर से मांगा हुआ था। सतार भर क भले-बुरे पोवे महाँ मौजूद हैं। इधर देखिये तो बंगाली बनिम और रबीन्द्र क साहित्य मुमनो की कलम है उधर गुजरात स लाई हुई सरस्वतीचन्द्र की बल है। कहीं ह्य गो और ड्यूमा क ऐतिहासिक उपयासो की कलम लगाने की कोशिश हो रही है। कहीं कुछ सज्जन भगवती माहित्य के बूझे नचर स घाटिका को सुगाभित करने का प्रयत्न कर रहे हैं। एक प्राध कोने म छिपे हुए इने गिने माहित्य प्रमी अपनी सक्की साहित्य-सेवा का बीज बीन दिलाई गते हैं।

श्री कालिदास कपूर ने सामयिक हिन्दी उपयासो का बिक्र करत हुए कहा— परतु भाषा की मन्क दिलाई दे रही है। अच्छे उपयासो का प्रादर जाता है चाह य अनुवादित ही क्या न हो। तेस समय म साहित्य सविया का यह धम है कि अच्छे उपयासो की भार जनता का ध्यान प्राकृष्ट करें और उनके भलका का उत्साह नडाते रह। इसी धर्म को यषाबुद्धि निवाहन के लिए प्राज हम पाठना ने सेवा सन्त्र का परिचय कराते हैं। श्रीमन् प्रमचद की प्राधयायिकाया स तो वे परिचित ही ह्योगे। यह उही की लेखनी से निकला हुआ पहला उपयास है। इस लेख का अन्तिम पराप्राप इन प्रकार है— हम प्राधा करत है कि लेखक महागय की लेखनी स और भी अच्छ-अच्छे उपयासो की सष्टि होगी। ईश्वर कर वह समय शीघ्र प्राण जब हम यह कहने का सोभाग्य प्राप्त हो कि हिन्दी साहित्य म भी ऐसे बिक्र स स्वाँट और रबीन्द्र को कमी नहीं है।

सेवा सन्त्र की बहुत क्याति हुई। भारत की दूसरी भाषाओ म भी इसके अनुवाद छन। अब प्रमचन्द न करने जलवाए ईसार (१९१२) का हिन्दी म अनुवाद किया और हिन्दी प्राय रत्नाकर बम्बई स इसे बरदान क नाम स प्रकाशित करवाया। जलवाए ईसार पर लेखक का नाम नवाबराय था परन्तु इसन हिन्दी रूपान्तर बरदान पर प्रमचन्द नाम था।

जिस प्रकार घालाबकों को भ्रम हुआ था कि नवनिधि और प्रम पूणिमा की कहानियाँ सप्त मरदोज की कहानियो क बान सिखी गई उसी तरह बरदान के समालोचका ने भी सोचा कि बरदान म प्रमचद की कता का हास हुआ